कक्षा-10

# बगईचा

(अनुपूरक पुस्तक)

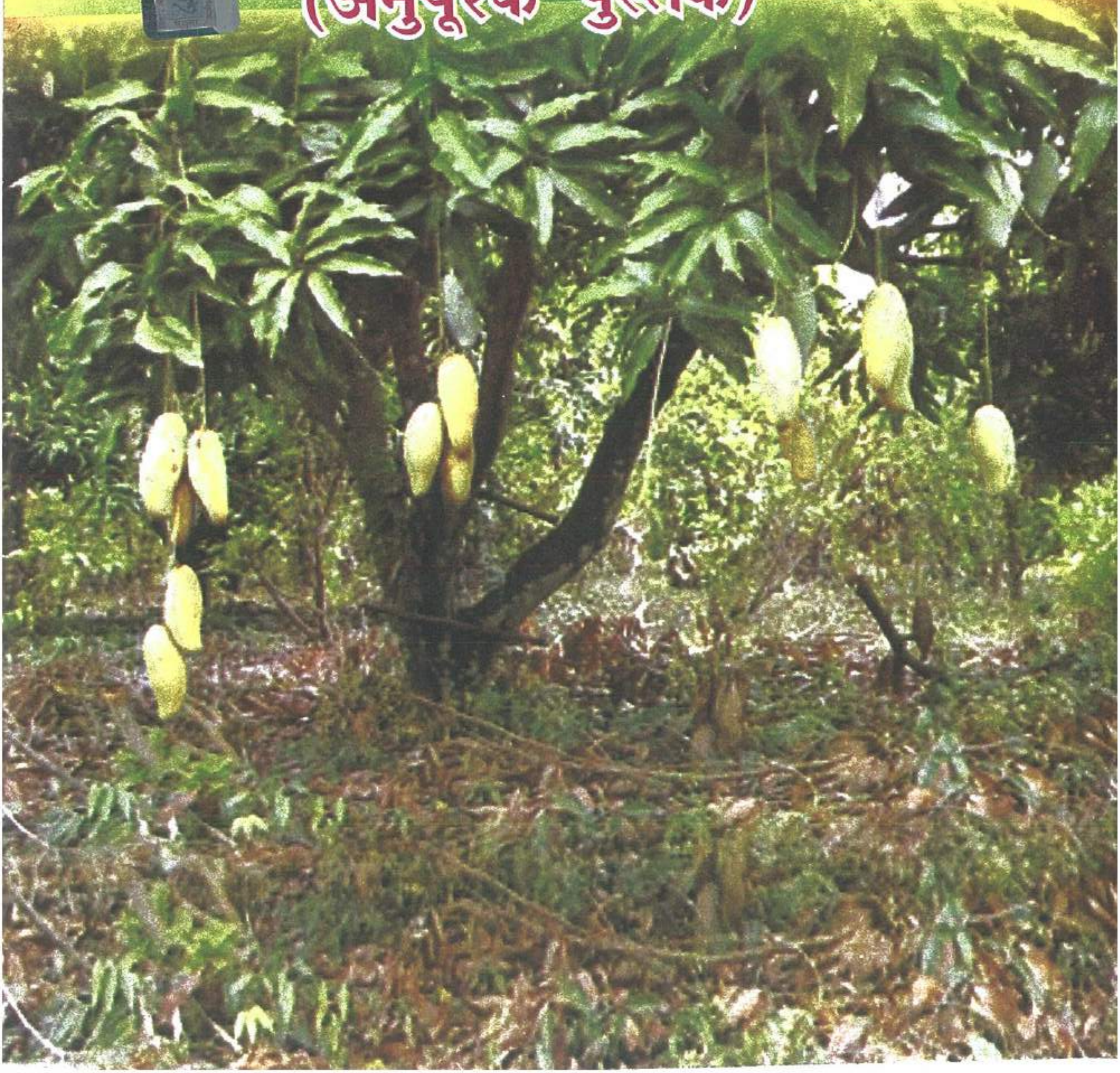

# INDIAN ARMY

## Arms you FOR LIFE AND CAREER AS AN OFFICER

**Visit us at www.joinindianarmy.nic.in**

**or call us (011) 26173215, 26175473, 26172861**

| Ser NO | Course | Vacancies Per Course | Age | Qualification | Appln to be received by | Training Academy | Duration of Training |
|---|---|---|---|---|---|---|---|
| 1. | NDA | 300 | 16½ - 19 Yrs | 10+2 for Army 10+2 (PCM) for AF, Navy | 10 Nov & 10 Apr (by UPSC) | NDA Pune | 3 Yrs + 1 yr at IMA |
| 2. | 10+2 (TES) Tech Entry Scheme | 85 | 16½ - 19½ Yrs | 10+2 (PCM) (aggregate 70% and above) | 30 Jun & 31 Oct | IMA Dehradun | 5 Yrs |
| 3. | IMA(DE) | 250 | 19 - 24 Yrs | Graduation | May & Oct (by UPSC) | IMA Dehradun | 1½ Yrs |
| 4. | SSC (NT) (Men) | 175 | 19 - 25 Yrs | Graduation | May & Oct (by UPSC) | OTA Chennai | 49 Weeks |
| 5. | SSC (NT) (Women) (including Non- tech Specialists and JAG entry) | As notified | 19 - 25 Yrs for Graduates 21-27 Yrs for Post Graduate/ Specialists/ JAG | Graduation/ Post Graduation /Degree with Diploma/ BA LLB | Feb/Mar & Jul/ Aug (by UPSC) | OTA Chennai | 49 Weeks |
| 6. | NCC (SPL) (Men) | 50 | 19 - 25 Yrs | Graduate 50% marks & NCC 'C' Certificate (min B Grade) | Oct/ Nov & Apr/ May | OTA Chennai | 49 Weeks |
| | NCC (SPL) (Women) | As notified | | | | | |
| 7. | JAG (Men) | As notified | 21 - 27 Yrs | Graduate with LLB/ LLM with 55% marks | Apr / May | OTA Chennai | 49 Weeks |
| 8. | UES | 60 | 19-25 Yrs (FY)18-24 Yrs (PFY) | BE/B Tech | 31 Jul | IMA Dehradun | One Year |
| 9. | TGC (Engineers) | As notified | 20-27 Yrs | BE/ B Tech | Apr/ May & Oct/ Nov | IMA Dehradun | One Year |
| 10. | TGC (AEC) | As notified | 23-27 Yrs | MA/ M Sc. in $1^{st}$ or $2^{nd}$ Div | Apr/ May & Oct/ Nov | IMA Dehradun | One Year |
| 11. | SSC (T) (Men) | 50 | 20-27 Yrs | Engg Degree | Apr/ May & Oct/ Nov | OTA Chennai | 49 Weeks |
| 12. | SSC (T) (Women) | As notified | 20-27 Yrs | Engg Degree | Feb/ Mar & Jul/ Aug | OTA Chennai | 49 Weeks |

# बगईचा

## (अनुपूरक पुस्तक)

## कक्षा – X

(राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, द्वारा विकसित)
बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना

निदेशक (माध्यमिक शिक्षा), मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार द्वारा स्वीकृत ।

**राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार, पटना के सौजन्य से सम्पूर्ण बिहार के लिए निमित्त ।**

**© बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पटना**

प्रथम संस्करण : 2010-11

**मूल्य : रु॰ 14.50**

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, पाठ्य पुस्तक भवन, बुद्ध मार्ग, पटना-800 001 द्वारा प्रकाशित तथा आकाश गंगा प्रेस, बिड़ला मंदिर, पटना--800004 द्वारा 5,000 प्रतियाँ मुद्रित ।

# प्राक्कथन

मानव संसाधन विकास विभाग, बिहार सरकार के निर्णयानुसार अप्रैल, 2009 से प्रथम चरण में राज्य के कक्षा **IX** हेतु नए पाठ्यक्रम को लागू किया गया है। इसी क्रम में शैक्षिक सत्र 2010 के लिए वर्ग **I,III,VI** एवं **X** की सभी भाषायी एवं गैर-भाषायी पुस्तकों का पाठ्यक्रम लागू किया जा रहा है। इस नए पाठ्यक्रम के आलोक में एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली द्वारा विकसित वर्ग **X** की गणित एवं विज्ञान तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना द्वारा विकसित वर्ग **I,III,VI** तथा **X** की सभी पुस्तकें बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम द्वारा आवरण चित्रण कर मुद्रित की जा रही हैं।

बिहार राज्य में विद्यालयीय शिक्षा के गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए माननीय मुख्यमंत्री, बिहार, श्री नीतीश कुमार; मानव संसाधन विकास मंत्री, श्री हरिनारायण सिंह तथा मानव संसाधन विकास विभाग के प्रधान सचिव, श्री अंजनी कुमार सिंह के मार्गदर्शन के प्रति हम हृदय से कृतज्ञ हैं।

एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली तथा एस०सी०ई०आर०टी०, बिहार, पटना के निदेशक के हम आभारी हैं, जिन्होंने अपना सहयोग प्रदान किया।

श्री बसंत कुमार, शैक्षिक निबंधक, बिहार राज्य पाठ्य-पुस्तक प्रकाशन निगम लिमिटेड के सफल प्रयास एवं सहयोग का आभारी हूँ, जिन्होंने दल-भावना के अनुरूप कार्यों का संपादन कराया है।

बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम छात्रों, अभिभावकों, शिक्षकों, शिक्षाविदों की टिप्पणियों एवं सुझावों का सदैव स्वागत करेगा, जिससे बिहार राज्य को देश के शिक्षा जगत में उच्चतम स्थान दिलाने में हमारा प्रयास सहायक सिद्ध हो सके।

16/12/09

**आशुतोष**, भा०व०से०
प्रबंध निदेशक
बिहार राज्य पाठ्यपुस्तक प्रकाशन निगम लि०

**संरक्षण :**

| | |
|---|---|
| ● **श्री हसन वारिस,** | निदेशक (प्रभारी), राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना |
| ● **श्री रघुवंश कुमार,** | निदेशक, (शैक्षणिक) बिहार विद्यालय परीक्षा समिति (उच्च माध्यमिक प्रभाग) पटना |
| ● **डॉ० कासिम खुर्शीद,** | विभागाध्यक्ष, भाषा शिक्षा विभाग, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार |

## भोजपुरी पाठ्यपुस्तक विकास समिति

| | | |
|---|---|---|
| समन्वयक : | डॉ० सुरेन्द्र कुमार | व्याख्याता (बि०शि० सेवा) राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार |
| | इम्तियाज आलम | व्याख्याता, शिक्षा, राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, बिहार |
| सदस्य : | प्रो० ब्रजकिशोर | संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना |
| | श्री कृष्णानंद कृष्ण | कथाकार |
| | डॉ० गुरूचरण सिंह | हिन्दी विभाग, एस० पी० जैन महाविद्यालय, सासाराम |
| | डा० तैय्यैब हुसैन | सेवा निवृत, प्रोफेसर जेड०ए०आई० कॉलेज, सीवान |
| | डॉ० महामाया प्रसाद विनोद | पूर्व प्राचार्य, उच्च विद्यालय अमनौर, सारण |
| | डॉ० जीतेन्द्र वर्मा | सह संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका, पटना |
| | डॉ० रवीन्द्र कुमार शाहाबादी | व्याख्याता, स्नात्तकोत्तर भोजपुरी विभाग, वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय, आरा |
| | डॉ० सुभाष कुमार सिंह | व्याख्याता, आलमा इकबाल कॉलेज, बिहार शरीफ, नालन्दा |
| | श्रीमति प्रियवंदा मिश्र | लेखिका |
| समीक्षक : | डा० शंकर प्रसाद | प्राध्यापक (सेवानिवृत) पटना विश्वविद्यालय, पटना |
| | डा० लालबाबू तिवारी | पटना हाई स्कूल, गर्दनीबाग, पटना |

# प्रस्तावना

बिहार सरकार के नवका पाठ्यचर्या के आलोक में राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् ई किताब पाठ्य-पुस्तक निर्माण समिति के सहयोग से विकसित कइले बा।

भारतीय संविधान के मुताबिक भारत के हर नागरिक के अपना मातृभाषा में ज्ञान प्राप्त करे के अधिकार बा। एने आके दुनिया भर के शिक्षाशास्त्री लोग के ध्यान एने गइल हा। भोजपुरी बोले वाला करोड़न भोजपुरिया अबहीं ले एह अधिकार से वंचित रहले। बिहार में भोजपुरी के पढ़ाई पिछिला कई बरिसन से उच्च आ उच्चतर वर्गन में हो रहल बा। पहिला बेर बिहार सरकार एकरा के मातृभाषा के रूप में विद्यालयी स्तर पर शिक्षा के माध्यम बनावे जा रहल बिया।

भारत में बिहार आ उत्तर प्रदेश के बड़हन भू-भाग में मातृभाषा के रूप में व्यवहृत भोजपुरी देश के बाहरो नेपाल, मारीशस, फीजी, ट्रीनीटाड, हॉलैण्ड, ब्रिटिश गुयाना आदि देशन में बहुतायत से बोलल जाला। अब टी०वी० चैनल, समाचार पत्र, अन्तरजालो (इंटरनेट) पर आ रहल बा। ई शुभ संकेत बा। एह से भोजपुरी में रोजगार के अवसर बढ़ रहल बा। ई प्रयास एह बनत आधार के मजबूती आ स्थायीत्व प्रदान करी– अइसन उम्मेद बा।

एह किताब के निर्माण भोजपुरी पाठ्य पुस्तक विकास समिति आ राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद् के श्रम से भइल बा। समिति के संयोजक डॉ० सुरेन्द्र कुमार विशेष धन्यवाद के पात्र बानीं। समिति के अध्यक्ष प्रो० ब्रजकिशोर, (संपादक, भोजपुरी सम्मेलन, पत्रिका) सदस्य डा० जीतेन्द्र वर्मा (सह संपादक, भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका), डॉ० तैयब हुसैन, कृष्णानंद कृष्ण, डॉ० गुरु चरण सिंह, डा० महामाया प्रसाद विनोद, डा० रवीन्द्र कुमार शाहाबादी, डा० सुभाष कुमार सिंह आ श्रीमती प्रियम्वदा मिश्र (लेखिका) के अथक प्रयास से किताब एह रूप में हमनी का सामने बा। एह पाठ्य-पुस्तक में संकलित रचना के रचनाकार लोग के प्रति हमनी आभारी बानी।

ई किताब पहिला बेर तइयार हो रहल बा। हो सकत बा कुछ कमी रह गइल होई। जे पाठक कमियन का ओर ध्यान आकर्षित करी समिति ओकर आभारी रही।

**हसन वारिस**
निदेशक
राज्य शिक्षा शोध एवं प्रशिक्षण परिषद्, पटना

# बतकही 'बगईचा' के

अपना मातृभाषा में कवनो विषय के ज्ञान जब आदमी प्राप्त करेला त ऊ जल्दिये इयाद हो ज़ाला। चाहे ऊ साहित्य, दर्शन, अध्यात्म भा ज्ञाने-विज्ञान के बात काहे ना होखे। मातृभाषा आदमी के गहन संवेदना के साथे जुड़ल होला। आदमी जब संकट में पड़ेला त अनियासे मुँह से मातृभाषा ही निकलेला। मातृभाषा में अपना भावे के संस्कार जुड़ल रहेला। भोजपुरी एगो सांस्कृतिक चेतना से संपन्न क्षेत्र विशेष के भाषा ह।

'बगईचा' भोजपुरी क्षेत्र के एगो विशेष शब्द बा एकर प्रयोग भोजपुरी संस्कृति में बेर-बेर भइल बा। बियाह में एगो रस्म होला 'बाग-बिआहे' के। एह में मूल अर्थ बा कि पेड़ के रक्षा कइल जाव। अइसे बगईचा में एके फल के किसिम-किसिम के पेड़ लगावल जाला भा सरमेरो फलन के बगईचा रहेला। ई 'बगईचा' में साहित्य रूपी फल 'कहानी' के बगईचा बा। एह बगईचा के कहानियकन के पढ़ला से भोजपुरी क्षेत्र के साहित्यिक-सांस्कृति उठान के पता चली त दोसरा ओर ओकरा सहनशीलता, राष्ट्रीयता, आपसी प्रेम आ आपसी सद्भाव के दर्शन होई।

ई 'बगईचा' अबकी निच्छक्का कहानी रूपी फल के बगईचा बा। एह में संकलित कहानियन के स्तर राखल गइल बा कि दसवाँ कक्षा के विद्यार्थी एकरा के मन से पढ़े आ गुने। आ एकरा अनुरूप अपना चरित्र के विकास करे।

'बगईचा' में संकलित कुल नौ गो कहानियन में जीवन के बहुरंगी पक्षन के चित्रण कइल गइल बा। जवन आम-आदमी के जीवन के सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, राष्ट्रीय चेतना, मानवीय संवेदना, सामाजिक सद्भाव, संवेदनशीलता के अभिव्यक्त करे में सफल बा। आचार्य शिवपूजन सहाय के कहानी कुन्दन सिंह: केसर बाई, देशभक्त आ राष्ट्रीय गौरवगाथा से ओत-प्रोत बा। एह कहानी से राष्ट्रप्रेम आ चरित्र-निर्माण के संदेश लइकन के मिलत बा। राष्ट्रीय चेतना से लैश ई कहानी छात्रन के मन में राष्ट्रप्रेम पैदा करे में सक्षम बिआ।

'अपराधी' कहानी के मूलभाव शोषण के विरोध कइल आ ओकर निर्मम रूप उजागर कइल बा। लेखक एह विचार के समर्थक बा कि सच्चाई के जीत हर हाल में होला। आतताई भा शोषक वर्ग चाहे जतना मजबूत होखे आखिर में ओकरा सच्चाई आ संघर्ष के आगा हथियार डाले के पड़ेला।

'हरताल' कहानी पाण्डेय नर्मदेश्वर सहाय लिखित कहानी बा। पांडेय नर्मदेश्वर सहाय के कहानियन के कथा वस्तु सामाजिक यथार्थ से जुड़ल रहेला। पांडेय जी पेशा से वकील रहीं। एह से इहाँ के कहानियन के 'लीगल फिक्सन' कहल जा सकेला। 'हरताल' कहानी समाज के सबसे दबल-कुचल लोगन के कथा बा। एह कहानी के माध्यम से लेखक ई बतावल चाहत बा कि समाज में हर तबका के उपयोगिता बा। केहू बड़-छोट नइखे। ओहिजे 'माई' (प्रभुनाथ सिंह) में आज के उपभोक्तावादी संस्कृति के दबाव से पैदा भइल विकृतियन आ दू-पीढ़ी के बीच के बढ़त खाई आ छीजत रक्त संबंधन के मार्मिक चित्रण कइल गइल बा जे नयी पीढ़ी खातिर प्रेरणा के स्रोत बा।

राधिका देवी श्रीवास्तव के कहानी 'धरती के फूल' भोजपुरी संस्कृति आ भावना से जुड़ल कहानी बा। नायक, नायिका से प्रेम करत बा बाकिर नायिका जब ओकरा के 'बजड़ी' खिआवत बिया त ओकर नजर झुक जात बा आ ओकरा पूरा सोच बदल जात बा।

आज जब आदमी के सोचे समझे, रहन-सहन के तौर तरीका बदल गइल बा। पूँजी के प्रभाव आदमी के बीच के रिश्तन के कतना खोखला कर देला एकर प्रमाण बा वीरेन्द्र नारायण पांडेय के कहानी 'पुरान घड़ी'। एह कहानी के नायक के स्थिति देवाल पर टंगल पुरान घड़ी अइसन हो गइल बा। उपेक्षा के दंश सहत, नायक के मृत्यु हो जात बा, बाकिर कहानी क्लाइमेक्स पर तब पहुँचत बा जब उनकर पोता-पोती अपना मतारी से पूछत बाड़े स– बाबा कब अइहें। लड़िकन के ई पूछल एगो आशा के संदेश देत बा। आज के समय में समाज-साहित्य आ संस्कृति सब पर करिया बदरी छवले बा। कही कवनो आदर्श नइखे रह गइल । अइसन समय में चरित्र निर्माण आ देशप्रेम जगावे के काम रूपश्री के कहानी 'शहीद के अरमान' करत बा। 'शहीद के अरमान' 1942 के स्वतंत्रता आंदोलन के शहीद फुलेना प्रसाद के जीवन से संबंधित बा। एह से देश-प्रेम के प्रेरणा मिलत बा। त अनिल ओझा नीरद के कहानी गुरु दक्षिणा आज के समाज के एगो कठोर साँच बावे । एह कहानी में एगो गुरु के आदर्श रूप स्थापित करत सामाजिक समता के आदर्श रूप उपस्थित कइल गइल बा। सांथे-साथे दलित-चेतना आ स्त्री-चेतना के आदर्श रूप उपस्थित कइल गइल । जवन टूटत मानवीय मूल्यन के स्थापना करे में सहायक होई।

सबसे आखिरी कहानी 'देवाल' सुधा वर्मा के बा जवन उपभोक्तावादी अपसंस्कृति से पैदा भइल दबावन में टूटत रिश्तन आ छीजत मानवीय मूल्यन के कहानी बा।

कहानियन के अंत में अभ्यास खातिर सवाल आ शब्द-संपदा दीहल गइल बा। हर पाठक के पहिले कथाकार के परिचय आ पाठ से संबंधित विषय-प्रवेशो दीहल गइल बा। समग्र रूप से देखल जाव त 'बगईचा' विद्यार्थिन खातिर काफी रोचक आ पठनीय बन पड़ल बा। एह में चयनित कहानी सब पाठकन के चरित्र निर्माता, सच्चाई के पक्षधरता के पक्ष में खड़ा होखे के ताकत पैदा करी-अइसन उमेद बा।

भोजपुरी बोली से साहित्य आ अब विद्यालय, विश्वविद्यालय के भाषा बन रहल बिया। एह से अब समय आ गइल बा कि भोजपुरी के साहित्यिक भाषा के स्वरूप निखरो आ मानक रूप उभर के सामने आवे। अब भोजपुरी साहित्यिक भाषा आ आलोचना के भाषा के रूप में विकसित हो रहल बा। एह से अब आदमी के उदार होके दोसरा भाषा के सटीक शब्दन के ओही रूप में अपनावे के चाहीं। भाषा में बदलाव आ निखार एगो सामान्य प्रक्रिया होला। ई अपने आप होत रहेला। समझदार लोग एकर स्वागत करी-अइसन विश्वास बा।

एह संकलन में संकलित कहानियन के भाषा के साथे कवनो तरह के छेड़-छाड़ नइखे कइल गइल। एकरा पीछे सोच ई रहल बा कि हर क्षेत्र के रूप दर्शन हो सके। भोजपुरी बड़हन क्षेत्र के भाषा रहल बा। लमहर समय से एह में साहित्य सृजन हो रहल बा। अइसन स्थिति में एकरा भाषा में विविधता रहल स्वाभाविक बा।

# विषय-सूची



| क्रम शीर्षक | | लेखक | पृष्ठ संख्या |
|---|---|---|---|
| | प्रस्तावना | | iv |
| | बतक़ही 'बगईचा' के | | v-vii |
| 1. | कुन्दन सिंह : केसर बाई | शिवपूजन सहाय | 1-6 |
| 2. | अपराधी | डॉ० शिव प्रसाद सिंह | 7-11 |
| 3. | हरताल | पांडेय नर्मदेश्वर सहाय | 12-19 |
| 4. | धरती के फूल | राधिका देवी श्रीवास्तव | 20-24 |
| 5. | माई | डॉ० प्रभुनाथ सिंह | 25-32 |
| 6. | पुरान घड़ी | डॉ० वीरेन्द्र नारायण पांडेय | 33-43 |
| 7. | शहीद के अरमान | रूपश्री | 44-53 |
| 8. | गुरु दक्षिणा | अनिल ओझा 'नीरद' | 54-72 |
| 9. | देवाल | सुधा वर्मा | 73-80 |

अध्याय - 1

# शिवपूजन सहाय

आचार्य शिवपूजन सहाय के जन्म 1893 ई० में शाहाबाद (अब बक्सर) जिला के उनवाँस गाँव में भइल रहे। 1912 ई० में मैट्रिक पास कर के शिक्षक के कार्य करे लगलीं। सहित्य के क्षेत्र इहाँ में पत्रकारिता के माधयम से प्रवेश कइलीं। मुख्य रूप से इहाँ के कहानी आ लेख लिखत रहीं। पत्रकारिता के क्षेत्र में इहाँ के योगदान के भुलावल ना जा सके। आरा में मारवाड़ी सुधार करे मतवाला मंडल के सदस्य, कुछ समय तक माधुरी, गंगा, जागरण आ बालक के साथे-साथे सहित्य के संपादन कइलीं। हिंदी में प्रकाशित रचनन में 'विभूति' (कहानी-संग्रह) आ उपन्यास 'देहाती दुनिया' के अलावे, 'ग्राम-सुधार' आ, 'अन्नपूर्णा के मंदिर से' निबंध-संग्रह प्रकाशित बा। इहाँ के संपूर्ण रचनावली चारखंड में बिहार-राष्ट्रभाषा-परिषद् से प्रकाशित बा। इहाँ भारत सरकार द्वारा पद्म भूषण के उपाधि आ भागलपुर विश्वविद्यालय डी०लिट० के मानद उपाधि के अलंकृत कइल गइल एकरा अलावे बाल सहित्य के उनके पुस्तक प्रकाशित बा। इहाँ के निधन सन् 1963 ई० में भइल।

## विषय प्रवेश

कुन्दन सिंह: केसर बाई' कहानी देशभक्ति राष्ट्रीय गौरव गाथा के सर्वोत्तम उदाहरण बा। एह कहानी के देवे के उद्देश्य बच्चन के मन में राष्ट्रीय भावना जगावल बा आ साथे-साथे चरित्रो निर्माण पर बल दिहल गइल बा। आज जब हमनी के समाज में संकीर्ण विचार के चलते राष्ट्रीयता के लोप हो रहल बा, तुम 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' लोगन के मन में राष्ट्रीय भावना पैदा करी। कसल-कसावल शिल्प, सटीक भाषा पाठक के चेतना के झकझोर के रख देतबा। कहावत आ मुहावरन के प्रयोग से भोजपुरी भाषा के अभिव्यंजना शक्ति के अंदाज हो जाता।

# कुन्दन सिंहः केसर बाई

दूनों के उठती जवानी रहे। ओह जवानी पर अइसन चिक्कन पानी रहे कि देखनिहार के आँखि बिछिलात चले। गाँव के लोग कहे कि बरम्हा का दुआरे जब सुघराई बँटात रहे तब सबसे पहिले ईहे दूनों बेकती पहुँचले। सचमुच दूनों आप-आपके सुग्घर। बिआह का बेर माँड़ों में देखिनिहार का धरनिहार लागल रहे।

घर-परिवार में केहू ना रहे। दुइए प्रानी से अंगना घर गहगहाइल बुझाइ। जब एगो बनूक छतियावे त दोसर ओकर तमतमाइल चेहरा निहारि-निहारि मुसुकाए आ भहूँ फरफरावे लागे। एगो जब बँसुरी बजावे बइठे त **दोसर कि बरोबर बजइ-बजाइ** के गुनगुनाए लागे। एगो जब कसरत करे लागे त दोसर दाँते आन रहता के हुँकारी देत चले। एगो जब खाये बइठे त दोसर बेनिया डोलाइ के सवाद पूछे ।

एक दिन आसिन के पूनो का अँजोरिया में अपने अँगना पटिहाटि खटिया पर सुजनी डसाइ के दूनो बतरस के आनन्द लेत रहले कि एही बीच में एगो कहलस हम तोहरा के बहुत पेयार करीला। ई सुनि के दोसरकी बोललि, हमहूँ तोहरा पेयार के दुलार करीला।

''वोह दुलार के हम सिंगार करीला। जब-जब हम तोहरा दुलार के सिंगरले बानी, तोहरा जरूर इयाद होई। माघ के रिमझिम मेघरिया में, फागुन के फगुनहट से मस्ताइल रंगझरिया में, चइत बइसाख के खुब्बे फुलाइल फुलवरिया में, जेठ के करकराइल दुपहरिया में, असाढ़-सावन के उमड़लि बदरिया में, भादो के अधिरतिया अन्हरिया में, कुआर-कातिक के टहाटह अँजोरिया में, अगहन-पूस के कँपकँपात सिसकरिया में जब-जब तूँ हमरा प्यार के दुलार कइलू, हम वोह दुलार के अइसन सिंगार कइलीं कि तोहार आँखि मँड़राए लागलि। बाटे इयाद ?''

अतना सुनिके ऊहो ठुनुकि ठुनुकि के जम्हाई लेवे लागलि। अइसन रंग ढंग देखि के ई कहलसि कि हमनी का भगवान के दीहल सब सुख भोगत बानी, बाकी अपना देस के कौनो सेवा अबहीं ले ना संपरल। छत्री का कोखी जनम लेके हमनी का अपना जाति के कौनो गुन दुनियाँ के

ना देखवलीं। हमरा इ स्कूल के साथी सब कहेलनि कि जब से तोहरा बिआह भइल तब से तूँ अइसन मउग हो गइल जे दिन-रति घरे में घुसल रहे ल।

"एह खातिर हम का करीं ? सरकारे आपन करनी निहारीं। पहिले रउरे उसुकाईले, पाछे लागीले देसभक्ति के गीति गाइके अपना साथियन के ओरहन सुनावे। रावा जवन काम करबि तवना में हमरा साथ देबही के परी। रावा झण्डा लेके निकसी त देखीं जे हमहूँ अपने का संगे निकासत बानी कि ना। हमहूँ छत्री के बेटी हई। हमरा नइहर के सखी के मरद अपना संगे हमरा सखिओ के जेहलि में ले गइल बाड़े। रउरो हमरा के जहाँ चाहीं तहाँ ले चलीं। रावा साथे हम आगिओ में कूदवि त तनिको आँच ना लागी। रउरे संगे तरूआरिओं के धार पर पर हँसते-हँसते चलि सकीला। बाकी रउरा बिना हम कतहीं ना जाइ सकीं। पहिले सरकारे अपना के सुधारीं, हम त पिछलगुई हई। मरद के परछाँहीं मेहरारू हवे। मेहरिया के पाछा-पाछा मरदा रसियाइल डोरियाइल फिरी त कवन अभागिन होई जे ओकरा के लुलुआवत रही ?"

"तोहरा बात हम काटत नइखीं, बाकी सभ दोस हमरे नइखे।"-

"अच्छा त बिहान होखे द, हमहीं पहिले तिरंगा झंडा ले के निकसबि।"

"तब त हमरा छाती सिंकन्दरी गज से डेढ़ गज के हो जाई। बात नइखीं बनावत।"

"तोहार बात बनावे से अधिका बात चिकनावें आवेला।"

"अच्छा त काल्हु जब सरकारी चरन चउकठ लाँघी त देखल जाई हमार उमंग-तरंग।"

2.

सम उनइस सौ बेयालिस ईसवी में भोजपुरियो इलाका अइसन अगियाइल रहे कि जेने देखीं तेने उतपाते लउके। कहीं सड़क कटात रहे, कहीं टेसन आ मालगोदाम लुटात रहे, कहीं थाना-डाकखाना फुँकात रहे, कहीं भाला-बरछा-फरसा भँजात रहे, कहीं मल्लू अइसन मुँहवाला टामी लोग के लाटा कुटात रहे, कहीं रेल के लाइन उखड़ात रहे, कहीं कौनो पुलिस-दरोगा ओहारल डोला में लुका के परात रहे, कहीं मकई का खेत में लड़ाई के मोरचा बन्हात रहे, जहाँ सूई न समात रहे तहाँ हेगा समवावल जात रहे, सगरे अन्हाधुन्हिए बुझात रहे।

कुन्दन-केसर के देखा देखी गाँवों के लोग कमर कसले रहसु। सभे ईहे बिनवत मनावत रहे कि गोरन्हि के राज उलटि जाउ। गोरा अफसर लोग जेने-तेने बिललात फिरत रहसु। दूनों के साहस आ उतसाह त काम करते रहे, दूनों के रूप के जादू सबसे बेसी मोहिनी डाले। जेने दूनों के दल चले तेने हंगामा मचि जाइ। दूनों बेकत के बोली सुनला से लोगन के मन ना अघात रहे। जनता पर रूप आ कंठ के टोना अइसन चलल कि अँगरेजी सरकार के माथा टनके लागल। दूनों के नाम वारण्ट कटल। जनता दूनों के पलक-पुतरी अइसन रच्छा करे लगलि। जब थाना-पुलिस के गोटी ना लहलि त फउजी गोरन्हि के तइनाती भइल। तबो गोरा लोग के छक्का छूटि गइल, बाकि दूनों के टोह ना मिलल।

जवना दिन दूनों अपना घर के असबाब एने-ओने हटावे खातिर गाँवे पहुँचले तवने दिन पीठियाठोक गोरी पहुँचले स। दूनों अपना घर के खलिहाइ के भीतर बतियावत, छतियावत रहलेसनि, तबले गोरा धमकि अइलेस, हल्ला सुनि के दूनों के कान खड़ा हो गइल। कुन्दन कच्छा कसि के बनूक में टोंटा भरे लागले, केसर के मियान से तरूआरि खींचि के कमर में आँचर बान्हि लेलसि। दूनों हूह बरोबर फड़ बाहर निकलले त केवार खुलते गोरा अचकचाई गइलेस। कुन्दन **तीनिल रहता,** ठावें पटरू कइ देलस आ केसरी दुइ जाना के माथ काटि के दुरूगा-भवानी अइसन छाल लागलि। गोरा लोग के जबले खुले-खुले तबले दूनों के मार-काट से केहू के हाथ काटा के गिरि परल आ केहू के कपार फाटि गइल आ केहू छाती में छेद ले के गिरल कँहरे लागल। अतना छत्रियाँव दिखवला का बाद दूनों खूनी बहादुर खेत रहले। गोली लगला पर केसर घुमरी खात कुन्दन का देह पर जा गिरलि। अतने में गाँव जवार के लोगनि के गोहार, जुटलि, बाकि गोरा आपन पाँचो लास लेके पराइ गइलेस।

कुन्दन-केसर के लोग उठाइ के लोग गंगाजल से नहवावल, चंदन चढ़ावल, फुलमाला से सजावल, अँजुरी फूल बरिसावल, अगरबत्ती-कपूर के आरती देखावल, दूनों के जय जयकार से आकास गुंजावल, गाँवे-गाँव जलूस घुमाइ के दूनों साहसी सहीदन के पूजा करावल आ घरे-घरे देवी लोग लोर ढारि-ढारि अर्घ चढ़ाबल। चारू ओर पंचमुखे ईहे सुनाइ जे अइसन मरन भगवान बिरले के देले।

# अभ्यास

(1) 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' कवन तरह के कहानी बा ?

(2) 'कुन्दन सिंह: केसर बाई' कहानी के संबंध कवना विषय से बा ?

(3) अंग्रेजी सरकार के माथा काहे टनके लागल ?

(4) स्वतंत्रता संग्राम में कुन्दन सिंह आ केसर बाई के साहस आ उत्साह का अलावे आउर कवन बात के प्रभाव पड़ल ?

(5) कुन्दन सिंह: केसर बाई दुनो परानी मिल के केतना गोरन के मार के गिरा दिहलन ? कब आ कइसे ?

(6) नीचे लिखल मुहावरन के अर्थ-

आंखि बिछिलावल - आँखना ठहरल

भहूँ फहरावल - उत्तेजित भइल

माथा ठनकल - खतरा के आभास भइल

छक्का छूटल - परेशान भइल

आगि में कूदल - कठिन काम कइल

बात चिकनावल - बात बनावल, कवनो बात के अरघावल

लाटा कुटाना - तबाह होना

सूई ना समाय तहँवा हेंगु समवावल - कठिन काम भइल

(7) अपना गाँव-जवार में कुन्दन सिंह केसर बाई जइसन केहु के कहानी सुनले होखीं त ओकरा लिखीं।

## शब्द-संपदा

| | | |
|---|---|---|
| सुघराई | – | सुंदरता |
| गहगहाइल | – | भरल-पड़ल |
| कटकटाइल दुपहरिया | – | खूब तेज गर्मी में तपल दुपहर |
| रसिआइल डोरिआइल | – | साथे-साथे लागल |
| टोमी | – | अंगरेजी फौज के सिपाही |
| गोहम | – | लड़ेभिरे बाला लोग के बिटोर |
| पराई गइल | – | भागि गइल |
| सुजनी | – | संयोग |
| बेनिया | – | बेना, पंखा |
| असवाब | – | कीमती सामान, चीझ-बतुस |

अध्याय - 2

# डॉ० शिव प्रसाद सिंह

शिव प्रसाद सिंह प्रसिद्ध कथाकार रहीं। इहाँ के जन्म 19 अगस्त 1928 के बनरास के जलालपुर, जमनिया में भइल रहे।

इहाँ के प्रमुख किताब बाड़ी सन- गली आगे मुड़ती है, काशी-एक, नीला चाँद:काशी दो, वैश्वानर (सब उपन्यास), अंध कूप, एह यात्रा सतह के नीचे, (सब कहानी-संग्रह), मानसी गंगा किस किस को नमन करूँ क्या कहूँ, कुछ कहा न जाए (सब निबंध-संग्रह), कीर्तिलता और अवहट्ठ भाषा, आधुनिक परिवेश और नव लेखन, आधुनिक परिवेश और अस्तित्ववाद (सब आलोचना) इहाँ के प्रगतिशील चेतना के रचनाकार रहीं। इहाँ के कुछ भोजपुरी रचना 'भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका' में प्रकाशित बाड़ीं सन। इहाँ के मउवत 28 सितंबर 1998 के हो गइल।

## विषय-प्रवेश

अपराधी' कहानी में शोषणकारी व्यवस्था के निर्मम रूप उजागर भइल बा। एह कहानी से ई बात साफ हो जाता कि सच्चाई पर रहे वाला आदमी कबो ना हारे, आ अताताई चाहे केतनो मजबूत होखे ओकर मन हरदम हारेला। कहानी के अंत बड़ा प्रतीकात्मक बा।

# अपराधी

संझा के बेला। डूबत सूरज के गेरूई छांह गंगाजी के छाती पर लोटे लागति। संझौती हवा अपना झँकोर में फुहार लेके उड़े लागल। कगार पर हरियर चादर लेखा जौ के जेत जेमा बीच-बीच में सरिसो के पीयर बुट्टा जइसे गंगा मैया के अरार के केहू छींट ओढ़ा के ढाँप देलस। ए कोने से ओकोने तक फैलल खेत के बीच में पातर टेढ़-मेढ़ रहता जइसे कुँवार लइकी के मोलायम करिया बार के बीच दुध नियर चमकत माँग।

आगे के महुआ के फेड़ के कगरिया के लाल बाबू से उतरि के आ गइलन। ऊ जइसे केहू के खोजत होखन। एनी ओनी बड़ा तकलन। केहू ना लउकल त मन मारी के गंगा जी के धार देखे लगलन। एतने में बीच धार में से एक ठे छोट बुची डोंगी आवत देखाइल। करिया-सा डोंगी अपने मन से चुप-चाप बहल चलि आवति रहे जइसे कवनो मगर मन के मउज में बहल जाता होखे। एतने में ऊ डोंगी किनारे लगलि। ओपर एगो लइकी बइठ के मछरी मारति रहे। किनारे आके ऊ अपन कँटिया डोर सँभरलस, आ चले के भइल, त लाल बाबू तनी आगे बढ़लीं आ पूछ देलीं- 'का होत ह' ?

''मछरी ...'' ऊ मलाह के लइकी बोललस, ''का एहू घाट पर चूंगी लागे लागल ?''

''नाहीं नाहीं।', लाल बाबू कहलन ''हमं त असहीं पूछ देलीं ह, कवनों बात रहे।'' एतना कह के ऊ ओकरा ओर चललन तले अरार प से केहू पुकरलस, 'मूंगा।' लाल बाबू देखलन कि उप्पर से एगो करिया अदमी उतरल। ओकरा देंह पर एगो लाल गउदी गमछा के अलावा कुछ रहे ना। बाकी ओकर देह ओही में अइसन लागत रहे जइसे सेमर के करिया डार में अंगार के फूल लागल होखे। गठल दँह, बाजू त अइसन कि ताल ठोक के छुवै त मछरी लेखा तरक जाय, मैगल हाथी नियर चलके ऊ मूँगा के पास आइल।

''मछरी मिलै ?''

"हँ" मूँगा ओकरे ओर आँख घुमाय के देखलस आ मधुरे मुस्कराय के कहलस 'दूठे' लपचा, बस।'

मलाह ओकरा आँचर में बाँन्हल मछरी टोय के शरारत से बोलल, "आ दूनो जीयते, अयँ?"

बेहया,' लाल बाबू मारे करोध के फट्ट से बोल देलन। ऊ दूनो घूम के देख लन स आ का जानी काहें बड़ा जोर से खिलखिलाय के हँस देलन स। ऊ मलाहवा मूँगा के हाथ धर लेलस आ कनखी ताक के लाल बाबू के ओर घूइर के देखत बाबू के अरार पर अपना गोड़न के निशान उतारत चल देलस। लाल बाबू देर ले ओह निसान के पाँत के देखत रहल न, फेर चुपचाप एक ओर चल देलन।

आज मलाह टोल में बाड़ा अनसनी फैलल बा। गाँव के छवरा के बीचो-बीच एक पुरान बर के फेड़ ह जवना में डोर नियर लटकल बरोह के गाँव के लड़का पकरि-पकरि घुमरि परउआ खेलेलन स, आ ऊ फेंड़ जानब जे बूढ़ दादा नियर अपन दाड़ी खींचेवाला लइकन के दुलरावेला। ए गाँव के अइसन के बा जे ए बार के नीचा छाँह में बइठल ना होखे आ छुटपन में ए बरोह में झूलल ना होखे। बाकी आज त एइजाँ लइका न के कहे चिरई क पूतो नइखे देखात, छाँह में जहाँ रोज-रोज मंगरू क ललका कुक्कुर बइठेला ऊँहे बँसखट पर थानेदार साहेब बइठल बानीं, पँरहीं फेंड़ के एक ठे मेट सोर में रसरी में बाँधल सुमेर मलाह बइठल ह जेकरा पखुरा, कान्ह आ जाँघ पर मारे बेत के निसान के लाल हो गइल ह। कत्तों-कत्तों त टटके लोहू चिपचिपात ह आ कत्तों लोहू जम के बइठ गइल बा जइसे खयर जम गइल होखे। थानेदार साहेब के पास में लाल बाबू बइठल बाड़न, उनके कहनाम बा कि उनके घरे से जवन चोरी भइल ह तवने में सुमेर मलाह के हाथ बा। थानेदार साहेब मार के थक गइलन आ उनकर हाथ मारे दरद के बेहाल बा, बाकी इ मलाह बा कि घाघ, एक बात ना बतवलस।

थानेदार के कहला से छोटन मियाँ बेंत उठवलन, आ अपन कुल हाथ देखा देलन बाकी सुमेर कुछ ना उगललस। बगल से दउर के ओकर मेहररू फेंकर के ओकरे ऊपर गिर गइल जइसे ऊ ओकरे देह पर छा जाये चाहत हो। "मूँगा" सूमेर बोलल, "जा जा घर में जा" आ फिर ऊ मूँगा के ओर आँख उठा के देखलस। जानीं का रहे ओकरे आँख में पीड़ा, तकलीफ निराशा कि मूँगा बिना कुछ बोलले आँख पोछत सामने के घर में चल गइल। लाल बाबू कनखी ताक के थानेदार के ओर इसारा कइलन। चार गो सिपाही आ थानेदार ओ घर में घूस के ओकरा कोना-कोना ढूँढ़

फेंकलन, लेकिन ना त लाल बाबू के कवनो सामान मिलल ना त मूँगा। लाचारे दावे थानेदार सुमेर के थाने ले गइलन, ओके बाद चोरी के जुरूम में छः महीना के जेहल हो गइल।

पाँच महीना बीत गइल। कुआर के महीना आ गइल। गंगा जी के पानी थिराय के दूध नियर निखर गइल। साँझ के बेला में नीला रंग के आसमान के छाँह के पानी साँवर लगत रहे जेकरे बीच में एक ठे छोट-सा डोंगी, बत्तख नियर हिलत डूलत किनारे ओर आवति रहे। ओकरा पीछे पानी पर एक ठे रेखा उभर गइल, उजर जइसन साफ आसमान में कचबचिया के पाँत होखे।

कगार पर से आज फेन लाल बाबू उतरलन। किनारे पहुँच के देख्लन कि ओ डोंगी पर उहे अवरत हाथ में कँठिया मछरी ले ले बइठल ह। ऊ ओकर पास गइलन, आ ओके चिढ़ाया के, ओकर दिल दुखा के हँसे खातिर आ ओके उदास देंचा के, दुखी देख के खुश होवे खातिर, पूछलन, ''ऊ अपराधी का भइल ?''

मूँगा उनके देखलस आ मुस्कुरा के बोलल, ''ऊ त इहाछ बा, हमारा गोद में दूध पियता'' आ अपन अँचरा उठा के देखवलस एक ठे छोटा बच्चा दुबक के पड़ल रहे।

हवा के झँकोरा उठल लहर करइलीं, किनारे पर धक्का मार के पानी खिलखिलाय के हँस उठल, आसमान में हवा कुरचि के सनसनाये लागल।

## अभ्यास

(1) अपराधी कहानी के नायक के बा ?

(2) मूंगा के का काम रहे?

(3) शिव प्रसाद सिंह के परिचय दीं।

(4) एह तरह के कवनो दोसर कहानी पढ़ी।

(5) गाँव के बर, पीपर भा कवनो दोसर बड़हन गाछ के नीचे दिन भर होखेवाला गतिविधियन के नोट क के लिखी।

(6) नदी भा पोखरा में मछरी मारे के तरीका जानी।

(7) लाल बाबू मूंगा के काहे झूठा मोकदमा में फंसइले ?

## शब्द-संपदा

**छाँह** – छाया

**सँझौती** – शाम के

**अरार** – किनारा

**छवरा** – रास्ता, राह

**कुआर** – एगो महीना

**कँटिया** – मिट्टी के पात्र

**मैगल** – मातल

अध्याय - 3

# पांडेय नर्मदेश्वर सहाय

बक्सर जिला के कुल्हड़िया गाँव में 3 मार्च 1911 ई० के पांडेय बेणी माधव सहाय के पुत्र रूप में जनमल पांडेय नर्मदेश्वर सहाय हिंदी आ भोजपुरी के ख्यातिलब्ध कवि, कथाकार, निबंधकार आ सफल संपादक रहीं। पटना सिविल कोर्ट में वकालत के क्षेत्रों में महारत हासिल कइला के बादो इहाँ के सहित्य सृजन जारी रखलीं। पटना से प्रकाशित 'अंजोर' पत्रिका के सफल संपादन क के सहाय जी अपना संपादन कला के परिचय देहनी। पटना में अपना आवास के भोजपुरी परिवार नामक संस्था के कार्यालय बना के भोजपुरी साहित्यकारन के लेखन खातिर बहुते प्रोत्साहित कइलीं। एह संस्था के माधयम के सहाय जी भोजपुरी आंदोलन के काफी बल देहनी। इहाँ के लिखल गीत, कविता, गजल, कहानी आ निबंध विभिन्न पत्र-पत्रिकन में प्रकाशित भइल। इहाँ के भोजपुरी के कबनो स्वतंत्र संग्रह प्रकाशित ना हो सकल तबो भोजपुरी के विकास में सहाय जी के महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा।

सहाय जी के रचना में सामाजिक यथार्थ के मार्मिक चित्रण मिलेला। सांप्रदायिक सद्‌भावना, सामजिक एकता आ मानवीय संवेदना के स्वर इहाँ के साहित्य में प्रमुखता से सुनाई पड़ेला। अंततः सहाय जी भोजपुरी के समर्पित साहित्यकारन में से एक रहीं, जेकर भोजपुरी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहल बा।

## विषय प्रवेश

'हरताल' कहानी में सदियन से सतावल वर्ग के जागरण के स्वर सुनाता। ई एह कहानी से ई पता चलता कि समाज में सब केहू के चाहे ऊ अमीर होखे, चाहे गरीब-सबाका से एह कहानी के भाषा प्रवाहपूर्ण बा। आदमी के सांस्कृतिक मूल्यन के जरिये एक कहानी के ताना-बाना बिनाइल बा।

# हरताल

मेवा बो का जबसे बगसर के मुरूदघट्टी के ठीक दस हजार में लिआइल हा, तब से उनुका घरे आवे के सँवसे नइखे मिलत। मेवा का पियरी भइल बा। घर-घाट दूनो मेवें बो का देखे के परता। घर में छोटकी पतोहिया रसोई-पानी करेले। बीतला जेठ में ओकर गवना भइल हा। ऊ सुभाव से नीमन, देह-जाँगर से सुन्नर, काम करे में गाँव ऊपर ह।

ओह दिन बड़ा बरखा बरिसल। फजिरहीं से अइसन बूनी परे लागल कि बाहर निकसल मोसकिल रहे। दुपहरिया में मेवा बो कसहूँ घाट से अइली। घर में एको चिरूआ पीये के पानी ना रहे। चुहानी के दुआरी पर खलिहा गगरा ढनढनात रहे। मेवा बो छोटकी पतोहि के कहली जे जो गोंयड़े के बाबू साहेब के कुँआ पर से हाली से एक गगरा पानी लेले आउ।

छोटकी का पानी ले आवे में बड़ा देरी भइल। मेवा बो कुँआ का ओर अपने चलली। बउलिये पर छोटकी से भेंट भ गइल। ओकरा के देखते मेवा बो आपा से बाहर हो गइली। चट पूछि बइठली, ''काहें सिसुकति आवतारिस रे ? का भइल हा ? गगरवो नइखीं देखत! बोलत काहे नइखिस ?''

अतना सुनला पर छोटकी घूघ उठा के कुछु बोलंहीं के चाहति रहे कि मेवा बो बमक उठली, ''तनी अउरी घूघ त उठाउ। आरे राम! ई पाँचो अँगुरी के दाग गाल पर! कवन मरकी लगवना हाथ छोड़लस हा रे ? अँचरवो जहाँ-जहाँ दरकल बा। ई कवना के काम ह ? जल्दी बोल ओकरा के काली के दे दीं ?''

''बाबूसाहेब के कुँआ पर पानी भरत रहली हाँ। उनुकर छोटका बेटा आइ के गलथोथरी करे लागल। बाते-बाते में बलाते हाथ धइ पउदरि में खींचि ले गइल।'' -अतना कहि के छोटकी फफकि-फफकि के रोए लागलि।

मेवाबो के मुँह लाल हो गइल। कहली, 'चुप रहु, हम बूझि गइलीं। आछा त हम बचऊ के सिखा देतानी। रसरी जरि गइल, बाकि अँइठन ना मेटल। जमीन्दारी गइल, घर के खेत-बारी

बिकाइल, तबो नवाबी ना गइल। अब हमनी के इज्जति-पानी लेबे पर परल बाड़न स। का गाँव रहे, का हो गइल। अइसन लउठई त सुनबे ना कइलीं। केहू के बेटी-पतोहि पर केहू नजरि ना उठावत रहे। एह से त सहरिए नीमन बा। नू केहू के लेबे के, नू केहू के देबे के। अपना-अपना घर में सभ केहू मोट-मेंही खाता आ परल बा।'

सेवा बो घरे आके अपना मरद से कहली कि चालिस-पचास गो रोपेया लेके थाना त चल। अब गाँव में रहल मोसकिल बा। मेवा बहुत तरह से समुझवले। कहले कि अइसन काम जनि कर। ऊ लोग बड़ा ह। ओह लोगन का संगे कई पुहुति बीति गइल। जाये द जे भइल, से भइल। हमनी के पुरूखो-पुरनियाँ ढेर घोंटले हवे। तूँहूँ घोंट घाल। मेवा बो ना मनली। थाना जाइके मोकदिमा कइ दिहली। मेवा सुनले त कहले कि ई नीक ना कइलू हा। पतोहि के भरला इजलासे चढ़इबु।

''ना चढ़ाइ त का करीं।'' -मेवा बो चट दे बोल उठली-''छोट के इज्जति कइसे बाँची। चानी का कटोरा में दूध-भात खायेवाला बबुआ के लाल घर में लोहा के कटोरा में वे-हरदी के खिंचड़ी ना खिअवनी, त हम असल बाप के बेटी ना। नीक घरे नेवता देले बाड़न।''

गाँव में आजु बड़ा हलचल मचल बा। जब से बिनोवाजी गाँवे अइले राड़नि के दिमागे नइखे मिलत। सनातन से लतिआवल गइल जाति के लोग आजु बरोबरी के दावा करता। अब त हरिजन बनि के मन्दिरो में जाये के आ बड़ जाति के कुँआ प नहाये के हुकुम मिलि गइल। गाँव के बड़ कहाएवाला लोग के बटोर रहे। बाबूसाहब सुरू कइले, ''रावा सभे जे कहीं, हम त राड़नि के माथ पर ना बइठा सकीं। जिनिगी भर पनही के नीचे रहल लोग। अब ना रही लोग, त ठीक ना होई! केहू का धन होखो। सरकार माथा पर चढ़ाओ। हमनी का ई बरदास के बाहर बा।''

बटोर में के एगो बूढ़ लालाजी बोलि उठले, ''समइये अइसन आइ गइल बा ए बाबूसाहेब! देखीं, दुनिया कहाँ-से-कहाँ चलि गइलि। आखिर उन्हनिओं का त....।''

''अनेरे बक-बक कइले बाड़, चुप ना रहा।'' -केहू चढ़ि बइठल। गाँधी टोपी पहिरले एगो नवही कुछ बोलल चाहल कि पहिलहीं बाबूसाहेब बोलि उठले, ''एह लोग के अन्हेर त हमरा से ना सहाई। ना मनिहें लोग त चिरइनि के खोंता निअर उजारि फेंकबि। परसँवे के बात ह। मेवा डोम के पतोहि हमरा कुँआ से पानी भरि के ले गइली। हमार छोटका हरी, ओइजे खड़ा रहे। कुछु ना बोलल। जेह कुँआ पर ब्राह्मण देवता छोड़ि के दोसर केहू ना चढ़त रहे, वोही कुँआ के ऊ पानी भरि ले गइली। जेह मन्दिर में बाप-दादा पूजा कइले ओही में डोम-चमार घुसिहें। हम त ई ना होखे देबि। ना रास्ता पर अइहें लोग, त खने-खराब कइ देबि।''

पंचइती का बटोर में बइठल गाँधी टोपीवाला भाई के बोले के मोका मिलल "बाबूसाहेब! आँखि खोलीं। दुनिया देखीं। बड़का-बड़का ओहदा पर ई लोग रखाता। कौंसिल-कचहरी में इन्हनी लोग के मान बढ़ता। अपने के अंचल अधिकारी, जिनिका के झुकि-झुकि के रउरा सलाम करीले आ 'सरकार-सरकार' कहीले, ऊहो बिहिया का लगे के हरिजन हवे। ई लोग हमरे समाज के ह। हमार-राउर भाई ह। जाति-पाँति के बखेड़ा छोड़ी। अपने के गाँव में सबसे बड़ हई। सब पर छोह देखावे के चाहीं।

"कुछुओ होखो। आपन विचार हम ना छोड़बि।" बाबू साहेब तूरि के जवाब देले।

बाबूसाहेब अपना बइठका में खटिया पर परल रहले। एगो पुलिस के आवत देखि के उनुकर कान खाड़ा हो गइल। पुलिस का अइला पर मालूम भलहिन कि मेवा डोम के पतोहि के बेइजति कइला के इलजाम में थाना से उनुका छोटका बेटा हरी के नाँवे नोटिस आइल बा। सुनते मातर बाबूसाहेब के होस उड़ि गइल। पुलिस के जथा-जोग सेवा-सतकार कइके बिदा कइले। बेटा के थाना पर हाजिर करे खातिर जमानत दे दिहले।

सिपाही का गइला पर बाबूसाहेब सीधे हरिजन टोली पहुँचले। मेवा कीहाँ सतनारायन स्वामी के कथा होत रहे। देखि के जरि बुतइले, बाकी का करसु। मसक्का में परल रहले। देखते मेवा सलाम कइलसि। बाबूसाहेब बोलले, "का मेवा, ईहे उचित ह ? जे आजुले ना भइल, ऊ तोहन लोग करे जातार।"

मेवा कहले, "का करींजा सरकार, अइसन जुलुमो कबो छोटनि पर ना भइल रहल हा।"

"का जुलुम भइल हा ? तोहरा पतोहि के कम दोस बा ?"

"ओकर त कबनो दोस नइखे, सरकार! बड़ होके रावाँ बोलतानी त का रउरा मुँहे लागीं।"

"काहें ना मुँहे लागबि जा?" - मेवा बो टनकारे बोली में बोलि उठलि- "काल्हुए के आइलि कनिया बहुरिया के ई दुरदसा!"

बाबूसाहेब दाँत चियारि के मेवा बो के चिरउरी करे लगले, "जाये द लोग। हरी तोहनिओं लोग के लइका ह।"

अतना सुनि के मेवा कहले - "जाये दीं, जब रउआ अइसे कहतानी, त मोकदिमा ना चली। बाकी रउरो बेटी-बहूबा, सबके एके नजर देखे के चाही।"

बाबूसाहेब का घरे डकइती हो गइल। थाना में जाके मेवा समेत ढेरि हरिजनन के नाँव लिखवा दिहले। ऊ सब बेकसूर रह स। पुलिस दरोगा आइल आ डाँड़ में रस्सा लगाके उन्हनी के पकड़ के ले गइल।

भोरे पहर मेवा बो बाबू साहेब कीहाँ पहुँचलि। कहलसि-"का सरकार, नेकी के ईहे बदला ? हमनीका डकइती काहें करबि ? अन-धन केकरो से माँगे के हमरा नइखे। रोज दस रूपिया के आमदनी घाट से बा। ई रउआ का कइली हाँ। बर-बरिआति में रउआ सब घर-दुआर हमनियें पर छोड़ि के जाई ले। आजु अइसन बिसवासघात! हमनीं का कतहूँ के ना रहलीं।" कहि के मेवा बो रोये लागलि।

बाबूसाहेब तनिको ना पसीजले। मने-मने खुस हो के बोलले- "ओह दिन त तनी छवड़ा तोहरा पतोहि के पानी भरे से मना कइलस, त खन्दान भरि के पारा चढ़ि गइल। हमरा के बेइज्जति करे के फेरा में लागल रहलू। अब देख, हम का करतानी। थानेदार कीहाँ त पैरवी करे आवते बा। जवान बेटी-पतोहि बड़ले बड़हू। जा-जा पेरवी कइ ल।"

मेवा बो बोलि उठलि, "अइसे काहें कहतानी, मालिक! जरला पर नीमक जनि छिरिकीं। आछा, जातानी, बाकी भगवान एकर निसाफ करिहें।"

पैरवी कइके बाबूसाहेब डोमन के सजाइ करवा दीहले। नतीजा भइल कि कुल्हि डोम हरताल कइ दिहले। कतहूँ केहू हरिजन काम पर जाते नइखे।

वोही दिन बाबूसाहेब के पिताजी के सरगवास हो गइल। बड़ा पुरनियाँ रहलीं ऊहाँ का। बड़ा घूमघाम से रंथी घाट पर पहुँचल। चनन के चिता पर पितम्मरी ओढ़ा के ऊहाँ के सुतावल रहे। पुरोहित जी तिल, अछत, दहो मुँह में दीहलें। भइलि कि चिता में अगि लगावल जाउ।

केहू आगि नइखे लगावति। बाबूसाहेब कहले,- "का देरी बा?"

सभे चुप रहे।

पंडितजी बोलले, "सरकार, आगि के लगावो। अगिनि-दान जब घाट के चउधरी दीही, तबे नू आग दिआई, तबे नू मृत आत्मा के सद्‌गति होई।"

"हँ, हँ, त बोलाव लोग जी, काहाँ बाड़े स?" बाबूसाहेब आपना भाई-गोतिया लोग के ओर ताकि के फरमवले।



3

"कुल्हि डोम त हरताल कइले बाड़े स। डकइतीवाला मोकदिमा के काल्हुए नूँ फसिला भइल हा।" –जमाति में से केहू बोलि उठल।

बाबूसाहेब के जाड़ा में पसेना छूटे लागल। एहिजा उनुकर सब चालबाजी भुला गइल।

सामने चन्दन के चिता पर से बुझाइल जइसे उनुकर पिताजी कहन होखसु, "बेटा! तूँ मेवा के जेहल में बन करववल, मेवा आजु तोहरा पितरन के सरग के दुआरी बन्न करवा दिहलसि। मेवा के जेल का भेजववल सरग से खींचि के अपना पितरन के नरक में ढकेल दिहल।"

## अभ्यास

(1) मेवा बो के घरे जाए के समय काहे ना मिलत रहे ?

(2) कवना बात पर मेवा बो के मुंह क्रोध से लाल हो गइल ?

(3) "केहू का बेटी पतोहि पर केहू नजर ना उठावत रहे" ई कथन केकर ह आ कवना प्रसंग के कहल गइल बा।

(4) "रउआ सभे जे कहीं, हम त राड़न के माथ पर ना बइठा सकीं।" ई बात के कहले बा ? प्रसंगो बताई ।

(5) गाँव के बड़का लोग के बटोर काहे खातिर भइल रहे।

(6) बाबू साहेब मेवा आ उन्हुका मेहरारू के सामने काहे झुक के बातिआवे लगलन ?

(7) बाबू साहेब मेवा के डकैती के केस में काहे फँसवलन ?

(8) मेवा बो के गिड़गिड़इला पर बाबू सहेब का जबाव देलन ?

(9) बाबू साहेब के जाड़ा में पसीना काहे छूटे लागल ?

(10) डोमन के हरताल कइला के का प्रभाव पड़ल ?

(11) एह कहानी के का उद्देश्य बा ?

## मुहावरा

| | |
|---|---|
| बमक उठल | – क्रोधित भइल |
| मुँह लाल भइल | – क्रोधपूर्ण आवेश में आइल |
| लाल घर में भेजल | – जेल में भेजल |
| बेहाड़ी के खिचड़ी खिआवल | – जेल के भोजन करावल |
| नीक घरे नेवता दिहल | – प्रतिकार करेवाला के ललकारल |
| पनही के नीचे रहल | – अत्याचार सहल |
| माथा पर चढ़ावल | – मनोबल बढ़ावल |
| कान खड़ा भइल | – परिस्थिति पर ध्यान गइल |
| पारा चढ़ल | – क्रोधित भइल |
| रसरी जल गइल, बाकि अइठन ना मेटल | – सब कुछ समाप्त भइला के बादो अहंकार ना गइल |
| जरला पर नमक छिरिकल | – पीड़ा के अउर बढ़ावल |
| पसीना छूटल | – परेशानी बढ़ल |

## शब्द-संपदा

| | | |
|---|---|---|
| **मुरूदघटी** | – | श्मशान घाट |
| **पिअरी** | – | लीवर खराब भइला से उत्पन्न रोग, जवना में शरीर पिअर आ कमजोर हो जाला, जौंडिस |
| **सुन्नर** | – | सुंदर |
| **फजिरही** | – | भोरही |
| **मोसकिल** | – | कठिन |
| **चिरूआ** | – | अँजुरी |
| **चुहानी** | – | भोजन बनावे वाला घर |

**खलिहा** – खाली

**हाली** – जल्दी

**सिसुकत** – मुँह दबा के रोवत

**घूघ** – घुंघट

**दरकल** – मसकल

**गलथेथरी** – बेमतलब के बात, तर्कहीन बात

**पुरूखा** – पूर्वज

**परसँवे** – परसो

**इलजाम** – आरोप

**डाँड़ा में रस्सा लगावल** – जेल जाए से पहिले आरोपी डोड़ में रस्सा बाँह के जेल भेजल जात रहे।

**पितर** – पूर्वज

## अधयाय - 4

# राधिका देवी श्रीवास्तव

राधिका देवी श्रीवास्तव के जनम उत्तर प्रदेश के फैजाबाद जनपद में सन् 1931 ई० में भइल रहे। बियाह के बाद अपना पति के साथे रह के साहित्य रत्न कइली। शुद्ध उच्चारण के चलते विश्वकवि रवीन्द्रनाथ ठाकुर के सान्निध्य पवली आ जापानी कवि येन नागुची के अभिनंदन करे के मौका मिलल। इहाँ एगो कहानी संग्रह 'धरती के फूल' (प्र०-1968 ई०) छपल बा। अर्थाभाव के कारण 'बधरिया मोती झरे' (कविता) आ 'झलकारो' कहानी-संग्रह प्रकाश में ना आ सकल। इनका दूगो कहानियन के बर्मी आ रूसी भाषा में अनुवादो भइल बा। इनका कहानियन में भोजपुरी इलाका के गाँवन के दाव-पेंच आ सामाजिक विसंगतियन पर व्यंगात्मक प्रहार देखे के मिलला। इनकर निधन 21 जनवरी 1986 ई० के भइल।

### विषय प्रवेश

'धरती के फूल' में लेखिका कहानी के अंत पाठक के आशा के विपरीत कके ओकरे एगो जोरदार झटका देले बाड़ा एह कहानी के अंत (ट्रिक ऐंन्डिंग फार्मूला) चमत्कारी तरीका से होत बा रमरतिया आ महेसर के मन में पाकत खिंचड़ी के अंदाज पाठक के नइखे लागत। धरती के फूल तूरे खातिर रमरतिया के महेसर के खेत में गइल, महेसर के धरती के फूल तूर के रमरतिया के फांड़ भर देहल आ रमरतिया के मुस्कुरा के जबाव देहल पाठक के प्रेम के धारा में बहा देत बा बाकिर कहानी के आखिरी वाक्य बगली में से एक रोपेया के नोट निकाल के ओकरा अँचरा के खूँट में बान्ह देले। "अब महेसर के नजर धरती के फूल पर रहे, ओकरा रूप पर ना" इ वाक्य कहानी के पूरा तेवर बदल देत बा आ कहानी पूर्णता प्राप्त कर लेत बिया।

# धरती के फूल

भर फाँड़ धरती के फूल तुरले रमरतिया महेसर का मसुरिया का खेत में से निकललि। महेसर का बुझाइल जे मसुरिया के बाले तुरे ले ले जातीया। बाकी त महेसर ओकरा से कुछ बोलले ना। सोचले कि असहीं ढिल्ली देवे के काम बा। रमरतिया महेसर के दिख के मुसकिआत मुंड़ी गड़ले घरे चल गइलि।

धरती के फूल बरसात बीतला पर धूस माटी में मसुरिया का खेत-बोत में जामेला। धरती के फूल पहिले ऊजर डाँटी नियर उगेला। माथा प फूल के कोढ़ी रहेला। बीता भके होत-होत कोढ़िया फूला के छितनार हो जाला। फरका से देखला प ऊजर-ऊजर छात्ता अइसन लागेला। एही से एकरा के साँप के छातो लोग कहेला। धरती के फूल जहवाँ जामेला, एके जगहा बनबना के बिरन्ही का खोंता अस जामेला। एकर तरकारी बड़ा सवदगर होला। गरम मसाला-बोसाला देके ठीक से बनवला प उड़ चलेला, सालन के मुँह मार देला। सालन-मछरी ना खाये वाला लोग एकरे से आपन टिसुना बुझावेला।

रमरतिया के बाप खाये-पीये में बड़ा सवखीन रहन। खाहीं-पीये में अपना धन के छूह उड़ा देलन। खेंत-बारी सभ बीका गइल। खाली एगों मकाने भर बाँच गइल रहे, जवना में अपना मेहरारू, एगो बेटी रमरतिया आ आँख के लकड़ी एगो टेल्हा रतन का साथे जिनिगी के दिन-रात गांथत रहन। आठ गो लइकी-लइका के मार के रमरतिया आ रतन, बड़ा धरछना से जीयल रहन। रमरतिया के उमिर उठानी प रहे। एक उमिर में कवनो लइकी का देहि प सुघराई छलके लागेले, जवानी उभारि के कसमखाये लागेले, रूप निखरि के नाचे लागेला। रमरतिया त अपनही सई लइकी में एक लइकी रहे। पातर छरहर देहि, चलला प जवानी का भार से डाँड़ा काँच कइनि अस लचक जाता रहे। खनहन गोराई, मुँह के गोलाई आ सुघराई देखि के चनरमो लजा जात रहन। रमरतिया के रूप भगवान अपने हाथ से सँवरले रहन। फेर रमरतिया के का पूछे के, देखिनिहार का धरनिहार लाग जात रहे। नवही लोग मूरछा जात रहे, बूढ़-पुरनिया लोग के छाती फुल उठत रहे, आँखि जुड़ा जात रहे।

रमरतिया पूरा बुझनउक हो गइलि रहे। बाप का मन के बात के अटकर लगा लेत रहे। ओकरा ई बात बराबर सदत रहत रहे कि बाबूजी एह बिकराल महँगी दें हमनी में खियावे-पीयावे का पाछा अपना टिसुना के मारि के सवलान भइल रहतारे। नाहीं त, बे सालन-मछली के एको दनि उनका अन्न ना रूचत रहे। एही से ऊ ओह दिन धरती के फूल, तरकारी बनावे खातिर ले आइलि रहे आ सोचले रहे कि गाहे-बेगाहे धरतीये का फूल के तरकारी बना के दी जवना से उनकर हीक बुताउ। महेसर का खेतवा में ई खूब फुलाइलो रहे आ महेसर का रोक-टोक ना कइला से ओकर मनो बढ़ि गइल रहे।

महेसर अपना बाप-मतारी के दुलरूआ लइका रहे। इंटरेन्स में फेल भइला प घरहीं रहिके खेती-गिरहती देखत रहे। घरे चार हर के जोत रहे, दुआर प पाँच सई घोड़ा बान्हल रहे। बाप मुखिया हो गइल रहन। बाड़ा चलती रहे। रमरतिया के रूप त उनका आँखि में पहिलही से गड़ि गइल रहे। ऊ रमरतिया से बतिआवे के जुगुत सोचते रहन कि ओह दिन सुजनी जुटिये गइल आ रमरतिया के मुसुका देला से मनसा पूरे के असो मन में अंगइठी लेवे लागल रहे।

दोसरका दिन जब फेर रमरतिया उनुका खेत में धरती के फूल खाती गइलि त ऊहो ओकरा पाछा-पाछा खेत में समा गइले। उनुका त भरम बाले तुरला के रहे, सोचत जात रहन कि हमहूँ अपना हाथे कुछ बाल तुरके दें देव जेह से ओकर डर छूट जाई आ ऊ रोज-रोज बलिया का लालच से आवे लागी। बाकी त उनुका बड़ा अचम्हा भइल जब देखले कि रमरतिया मसुरिया के बाल ना-तुरिके निहुरल हाऊ-हाऊ धरती के फूल उखाड़ि-उखाड़ि गोझनवटा भरि रहल बीया। निहुरला पर ओकरा असली रूप के झलक देखि के महेसर के आँखि के आगा चकचौन्ही छा गइल आ आँखि मधुमाछी अस रूप का लासा में सटि गइली स। टकसे के नाँवे ना ल स।

चारूओर कठबासीन मसुरिया लागल रहे, ओह बीच में दूगो नवहिन के मन में ना जाने कवन-कवन उफान उठत रहे। महेसर का बुझाइल जे निहुरि के देखला से रमरतिया के जवानी के रूप अउर फरिछ लउकी, एसे ऊहो निहुरि के धरती के फूल उखाड़ि-उखाड़ि ओकरा अँचरा में भरे लगले। रमरतिया एकर कवनो दुख ना मनलसि। महेसर के मन बढ़ि गइल। मोका आछा देखि के ऊ अपना मन के मोटरी खोलि देले -''हमनी के जोड़ी बड़ा आछा रही खाली तोहरा तनिका भर साहस से काम लेवे के बा। गाँव - जवार केहूके कुछ ना बसाई। 'मरदा-मउगी राजी, त का करिहें गाँव के काजी।' रहि गइल जाति के बात, त अब जाति-पाति कवनो चीज नइखे रहि गइल। आ फेर हमरा बाबूजी का सोझा आँखि उठा के देखे के केकरा गुरदा बा।'' महेसर के आँखि ओकरा

जवानी के फूल लोढ़त रही स। धरती के फूल अँचरा में ना जाके कतना भुईंया गिर जा स, ओकरा के ना देखत रही स।

रमरतिया कुछ ना बोलिल, मुसुका के मुंडी गाड़ लेलसि। बोलो त का बोलो, ऊ त अपन मन देवनाथ क दे चुकलि रहे। भले देवना गरीब रहे, बाकी रमरतिया के मन त होकरा लिखा गइल रहे। रमरतिया बेमन के सभ कुछ सुनत जात रहे। एहतरे कई दिन महेसर ओकरा से बतिआवले आ तै कइले कि कातिक का पुनवासी के हमनी का गठ-जोरांव क लीजा। जब-जब बात होखे, रमरतिया हँ, भा ना कुछ ना बोले खाली मुसुका के मुड़ी गाड़ लेवे। महेसर का पूरा बिसवास हो गइल कि ऊ राजी बीया। ई बात ऊ अपना मतारी का जरिये बापो के जनवा देले। बाप त असमान में उड़ लगले कि बड़ के बेटी हमरा घर में आ रहल बीया। खुसी में फुलल पहुँचले रमरतिया का बाप लगे आ बिआह का इंतजाम-बात खातिर दू सइ रोपयिा दे अइले। रमरतिया के बापो सोचले-"ठीक बा, बिना हरानिये परे-सानी के बोझा उतर जाता। रहल जात-पात के बात, त अब ई के देखता।"

रमरतियो का ई बात मालूम हो गइल।

देवाली के दोसरका दिन राति क महेसर का दुआर पर "राखी" सिनमा देखावल जात रहे जन समपरक विभाग का ओर से। रमरतियो अपना सखीन का साथे देखलसि। ओमें रहे-"एगो राजा एगो राजा का बेटी प लट्टू होके ओकरा के ज त ले ओके बले सादी करे खातिर दल-बल का साथ चढ़ि आइल रहे। लइकिया एगो दोसरा राजकुमार के चाहत रहे। लइकिया चुपे से ओकरा तमु में गइलि आ सुतले में ओकरा के राखी बान्हि देलसि। रोली के टीका करत खाँ ऊ जागि गइल। लइकिया कहलसि- 'भइया, राखी के बकसीस द !'

लइकिया के चिन्ह के ऊ सन्न हो गइल आ पाँच गो असरफी ओकरा हाथ में देके कहलस- "आजु से तू हमार धरम के बहिन बाड़ू आ ओकरा सादी में आके ऊ लावा मेरवलस।" रमरतिया का बुझाइल जइसे कुछ मिल गइल।

दोसरा दिन गोधन कुटाइल। रमरतिया धरती के फूल लेबे महेसर का खेते के जाये लागलि त अँचरा का खुटा में बजड़ी, रछेया आ पुरिया में रोरी बान्हि लेलसि। महेसर जब लगे आके कहे लगले कि सादी बड़ा धूमधाम से होई, बाबूजी खूब जोर-सोर से तैयारी कर रहल बाड़े। तबले रमरतिया उनका हाथ धके रछेया बान्हि के टीका के देलसि आ बजड़ी मुँह में डाल देलिस।

महेसर का काठ मार देलस। बगली में से एक रोपेया के नोट निकालि के ओकरा अँचरा का खुँट में बान्हि देले। अब महेसर के नजरि धरती का फूल प रहे, ओकर रूप पर ना। ओंही सभ सर-सरञामे रमरतिया के बिआह देवनाथ से हो गइल।

## अभ्यास

1. रमरतिया मन से केकरा के चाहत रहली?
2. रमरतिया के बाबू जी कवना चीज के सवखीन रहस?
3. गोधन कुटइला के बाद रमरतिया का कइली?
4. राखी बंधला आ बजड़ी खइला का बाद महेसर का कइले?
5. रमरतिया के बियाह केकरा से भइल?
6. दोसरा दिने रमरतिया के फूल तूरे गइला पर महेसर का कइले?
7. राखी पर्व पर आपन अनुभव लिखी।

## शब्द-संपदा

**सवखीन** - फैशन पसंद करनेवाला

**बुझनउक** - बूझेवाला

**अँटकर** - अंदाज लगावल

**टिसुना** - इच्छा

**गाहे-बेगाहे** - कबो-कबो

**हाऊ-हाऊ** - जल्दी-जल्दी

**छरहर** - दूबर-पातर लमहर

अधयाय-5

# डॉ० प्रभुनाथ सिंह

साहित्य आ राजनीति के एके कलम से रेखांकित करे वाला एगो जानल-मालन अर्थशास्त्री आ भोजपुरी आंदोलन के लमहर योद्धा डॉ० प्रभुनाथ सिंह के जनम सारण जिला के मुबारकपुर गाँव में 2 मई 1940 के भइल रहे। छात्रेजीवन से ही पत्र-पत्रिका में लिखे के काम करत रहीं। कहानीकार, कवि आ लेखक का रूप में प्रतिष्ठा प्राप्त कइनी। प्रभुनाथ बाबू अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन, विश्व भोजपुरी सम्मेलन से जुड़ल रही आ बिहार में विश्वविद्यालय में भोजपुरी के पढ़ाई शुरू करावे के श्रेय भी मिलल। 'भैरवी' के सम्पादन का साथे ही इ हमार गीत (काव्य संग्रह), गाँधीजी के बकरी (निबंध-संग्रह), हमार गाँव:हमार घर (कहानी, निबंध संस्मरण-संग्रह) पड़ाव (कहानी आ ललित निबंध-संग्रह) इहाँ साहित्यिक कृति ह।

राजनीति का क्षेत्र में दू बार विधायक रहत बिहार के वित्त राज्यमंत्री तक के पद के सुशोभित कइनी। कई शौक्षणिक संस्था के स्थापना इहाँ महत्त्वपूर्ण शैक्षिक उपलब्धि बा। 30 मार्च 2009 के भोजपुरी आंदोलन के एह सेनापति के निधन भ गइल।

## विषयं प्रवेश

प्रस्तुत कहानी उपेक्षा के दँश झेलत एकाकीपन के भोक्ता के रूप में माई के व्यथा के कहानी बा। एह मनोवैज्ञानिक कहानी में माई के कष्ट के कारण के अनुभव करत लेखक एगो मनोवैज्ञानिक उपचार करे के प्रयास कइले बा। ओह प्रयास में ओकरा सफलता मिलल आ जे रोग डॉक्टर ना मेटा सकल ऊ बेटा का रूप में लेखक अपना श्रद्धा, प्रेम आ सेवा से रात्न भर में मेटा के बेटन के मातृ-सेवा के संदेश दे रहल बा।

# माई

रात के एक बजल होई। अचके में नींद टूट गइल। केतनो जतन करीं नींद आवे के नाँव ना लेव। एह करवट से ओह करवट फेरत मन अनसा गइल। आँख बंद करीं, बाकिर ऊ सटे ना। एही बीचे मन में एगो सोच समा गइला। नींद आउरू उचट गइल। घर से माई आइल रहे। ओकर तबीयत ठीक ना रहे। लोग कहेला कि मतारी के प्रेम छोटका बेटा में रहेला आ बाप के बड़ बेटा में। अइसन शायद एह से होला कि छोट बेटा के कम उमिर के चलते प्यार आ स्नेह के ज्यादा जरूरत हेला, जवन मतारी ही दे सकेले आ बाप का बुढ़ापा में लाठी के सहारा के जरूरत होला, जवन बड़ बेटा ही हो सकेला। हमरा छोट भाई में तनी लड़िकाई जादे बा। माई के तनी कम गुदानेला। अइसन नइखे कि अनादर करेला। ओकरा कहला-रहला में तनी कम रहेला। कुल भाई से ज्यादा भरोसा माई का हमरे में रहेला, यद्यपि कि हम ओकर बड़ बेटा बानी। ओकर दवा-दारू गाँव पर भी हमार छोट भाई करा सकत रहे, लेकिन ऊ टुघुड़ल-टुघुड़ल पटना पहुँच गइल। ईहे कि पटना में आपन मकान बड़ले बा, बेटा के जान-पहचान के कवनो कमी नाहींये बा, अच्छा डाक्टर के देखा के दवा करा दीहें, त रोग जल्दी भाग जाई।

पटना के मकान में से तीन कमरा अपना खातिर राख के आउर भाड़ा पर लगा देले बानी। एक कमरा में बेटा लोग रहेला। एक कमरा में हम आ हमार औरत-हमनी दुनूँ परानी आ एक कमरा, ड्राइंग रूम बा, जवना में आइल-गइल लोग के पड़ाव रहेला। जगह के सकेता से भाई के खटिया डाइनिंग स्पेस में लागल रहे। सारा लोग- अपन विरान- घर का अंदर सुतल रहे आ माई घर का बाहर खाली जगह में। मन में विचार के तूफान एह से उठल रहे कि कहीं माई ई त ना सोचत होई कि अपने सब लड़िका-फड़िका के लेके घर में सुतल बा आ हमरा के दुआरी पर सुतवले बा। का बुढ़ापा में बाप-मतारी जगह घर से बाहर होला आ जेकरा के ऊ लोग जनमवले बा, ओकर भीतर? का लइकन का सेआन हो गइला पर बाप-मतारी बहारन हो जाले, जवना के झाड़ू से बहार के दुआरी पर लगा दिआला? ओकरा से पैदा भइल गाछ का जरी छाँव में ओकरा सुस्ताए के कवनो

अख्तियार नइखे? का बुढ़ापा में बाप-मतारी के मूल्य घट जाला कि ऊ लोग छूतिहर घइला लेखा कवनो कोना में ओठंगा दिआला? आउरी लोग सोना-चाँदी लेखा घर का अंदर बक्सा में बंद रहेला कि कहीं ऊ लोग लुटा ना जाव? एह तरह के सोच दिमाग के झोरत रहे। अइसन बुझाला कि केहू तड़ा-तड़ जुतिया रहल बा। बेचइनी बढ़त जात रहे। अब आँख बंद होखे के भी नाँव ना लेव। आँख खुल के छत पर टिकाल रहे, छत जइसे परदा होखे आ सेच के एक-से-एक सीन ओकरा पर आवत जात होखे। अपराध-बोध से कपार भारी लागे लागल।

इयाद आवे लागल गाँव-घर के कुछ परिवार आ ओह परिवारन में बाप-माई के दुर्दशा। रामलखन आ शिवरतन दूनू भाई अलगा भइले, त पंच लोग तय कइल कि रामलखन के माई दिन में एक बेटा किहाँ आ रात में दोसरका किहाँ भाँजा बान्ह के खइहें। एक-एक टुक कपड़ा साल में अपना माई के ई लोग देहल करी। रामलखन आ शिवरतन के मेहरारू लोग यदि ठीके रहीत, त अलगा-बिलगी के ई नउबने ना अइत। दूनू एक-स-एक काढ़ल, गहरन के जगावल, झगड़ालू आ कर्कशा रहीसन। सास बुझास जइसे एकनी के सारा धन चर जइहें। बसिया भोजन, लइकन के छोड़ल-छाड़ल जूठ अब कुत्ता आ मवेशी के ना दे के सास के आगा परोसाये लागल। एक दिन सुबह गाँव के लोग देखल कि रामलखन के माई घर का बगल के इनार मैं डूब के मरल पड़ल रही। उनकर लाश फूल के उतराइल रहे। पतोह लोग के भरसन रहे कि माई का अब लउकत ना रहल ह, निकसारे गइल रही, अंधार में ना सूझल होई, कहीं से कुआँ में ढिमिला गइल होइहें।

एगो हमार संघतिया बाड़े साथ ही विश्वविद्यालय में प्राध्यापक। बात 30 बरिस पहिल के ह। अभी नया-नया हमनी जोआइन कइले रहीं। उनका बड़कन बने आ देखावे के बेमारी रहे, आजहूँ बा। उनकर माई घर से आइल रही। कुछ मित्र के साथे एक दिन उनका डेरा पर हमनी बइठल रहीं। पकौड़ी आ चाय चलत रहे। एही बीच आँगन में हम एगो बूढ़ औरत के देख के पूछनी, 'रऊरा घर में एगो बूढ़ी औरत के लउकत बा जी?' तपाक से अपना आवाज के ट्यूनिंग तनी मधिम कर के ऊ बतवले कि नोकर कवनो टिकत नइखे, एह से एगो दाई ऊ रखले बाड़े। बाद में पता लागल कि ऊ उनकर मतारी रही। चूँकि ऊ पूरान विचार के अनपढ़, गँवार आ गँवई आ गँवई औरत रही, एह से उनका के ऊ दाई बना देहले। एह बात के साबित करे के उनकर सोच होई कि एगो गँवई औरत के उनका अइसन मॉडर्न आदमी के माई होखे के हैसियत ना हो सके।

रामबालक सिंह हमरा गाँव के एगो नामी-गिरामी आदमी रहले। अपना जमना में उनकर चलती रहे। कलकत्ता में एगो फैक्ट्री में बाबू रहन। अपार धन उपरजले, गाँव पर आ कलकत्ता दूनू

जगह कोठी बनवले। उनका चार लइका, चारो के खूब पढ़ा-लिखा के कवनो के इंजीनियर, कवनो के डाक्टर आ कवनो के मास्टर बना दिहले। सभन के बिआह-शादी हो गइल, नोकरी हो गइल, सभ पूत आना-अपना मेहरी का साथे नोकरी पर शहर में, गाँव में बँच गइले बूढ़ बाप आ मतारी। कुछ दिन बाद रामबालक सिंह भी मर गइले। बाँचं गइली बस बुढ़ियो, गाँव के विशाल कोठी में अकेले। देह-हाथ पड़ गइला पर केहू एक लोटा पानी तक देबेवाला ना। कवनो बेटा उनकर भार उठावे के तइयार ना भइले। जेकर जिनिगी शहर में बितल, चार कमासुत पूत के जे माई रहली, रामबालक सिंह के मुअला का बाद कवनो बेटा के साथे उनकर गुजारा ना हो सकल। दू बरिस के बात ह। एक दिन बेर बितला पर उनकर दरवाजा ना खुलल। गाँव-पड़ोस के औरत सोचस कि बुढ़िया के तबीयत ठीक ना होई; संशय बढ़ल, त लोग केंवाड़ी ढकढकावल। भीतर से जब कवनो सुम-गुम ना मिलल, त दरवाजा तुड़ाइल। पावल गइल कि पनरोही पर बुढ़िया मरल पड़ल बिया। सब बेटा लोग खबर पा के परिवार का साथे आइल। बड़ा धूम-धामे श्राद्ध भइल। हजारो रूपया खर्चा भइल। श्राद्ध खत्म होते-होते आपस में बँटवारा लेके सिर फुटउल के नौबत आ गइल। संपति में बखरा त सब बेटा-पतोह लोग के रहे, लेकिन बाप-मतारी के ढोये के हिस्सा केहू के ना।

लोग चर्चा करेला कि जमाना बदल गइल। परिवार के परिभाषा बल गइल। पहिले परिवार के मतलब रहे बाप-मतारी, भाई-भउजाई, चाचा-चाची, भतीजा-भतीजी, सबसे एक साथ मिल के गुजर-बसर कइल, सुख-दुख बाँटल, आपस में सहयोग, मिल्लत, सद्भाव आ एकता। अब परिवार के माने हो गइल बा आपन मेहरारू आ बेटा-बेटी। आज के परिवार में बाप-मतारी से अँडस हो जात बा। अवलाद पैदा कर के भी ऊ लोग बेमउआर बा। अइसन परिवार के आधुनिक परिवार कहल जा रहल बा। ठीक, जमाना बदल रहल बा, शहर के संस्कार गाँव पर हावी बा। गाँव शहर का ओर भाग रहल बा। गाँव के संस्कार आ संस्कृति विकृत हो रहल बा। शहर मँह-मँह करत बा, गाँव उजाड़ हा रहल बा। गाँव के धन शहर में लाग रहल बा। गाँव कंगाल हो रहल बा गाँव के माने हो गइल बा- उजड़ल छप्पर, धूल-कीचड़ से भरल सड़क, बूढ़-पुरनिया, बेरोजगार, पिअक्कड़ आ बेमउआर लोगन के वास। होली, फगुआ आ चइता गावेवाला लोग अब नइखे मिलत। कुछ दिन में कथा-पूजा करावेवाला पंडित भी ना भेंटाई। आधुनिकता का चकाचौंध में बाप-मतारी के ढोअल बहुत भारी लागत बा, जवना कोख से आदमी जनम लेहल, ऊ कोख कवनो गड़हा अस लागत बा, जवना के पानी सड़ के महक उठल बा आ ओकरा से दूर रहल स्वास्थ्य का दृष्टि से वाजिब बा। आधुनिक परिवार में सृष्टि के सोर भुला गइल बानि जइसे कि आँवा में नादे भुला गइल।

सोच के क्रम में ई सब दृश्य सामने से गुजर रहल बा। एही में कहीं हम अपना के खोज रहल बानी, कहीं माई के। एगो बेग आइल, झट से ओढ़ना फेंक के बिछावन से उठ के चल देहनी। केंवाड़ी खोल के माई के खटिया के नजदीक पहुँचनी। माई मुसेहरी के भीतर खटिया पर बइठल रहे। ओकरा आँख में नींद ना रहे। शायद मतारी-बेटा के सोच के दिशा एके रहे, पूछनी-'माई! तबीयत कइसन बा? नींद नइखे आवत का?'

'ना बबुआ, तबीयत ठीक बा, मथवा भारी लागत बा, कुछ भय अइलसन बुझाये लागल ह, त नींद टूट गइल ह। अब नींद नइखे आवत, त जाग के बिहान करत बानी।'-माई एकसुरे ई सारा बेआन कर गइल।

दरवाजा खट-खटा के ओह कमरा के खोलवनी, जवना में बेटा लोग सुतल रहे। ओह लोग के जगा के माई वाला जगहा पर कइनी आ माई के कमरा के भीतर सुते के जोगाड़ कइनी। माई ना-नुकुर करत रह गइल, लेकिन हम मननी ना। कमरा में माई के ठीक से सुता के ओकर कपरा मलनी आ पाँव दबवनी, त धीरे-धीरे नींद आ गइल। बेटा लोग के समझवनी- 'माई के कबहूँ बाहर मत सुतइल लोग, खूब सेवा करिह लोग, जइसन हमनी अपना बाप-मतारी के साथे करब, ओइसहीं हमनी के साथे हमनी के अवलाद करी।'

सुबह आठ बजे तक ना हमार नींद खुलल, ना माई के! उठ के सीधे माई का कमरा में गइनी। जगा के ओकर हाल-चाल पूछनी। माई के चेहरा पर चमक रहे। रोग के बवनो झलक ना दिखाई पड़त रहे। माई बतवलस, -'बबुआ, तबीयत आज बहुत ठीक बा। डाक्टर के दवा सूट कइले बा। शरीर में ताकत महसूस हो रहल बा।'

माई के नीरोग होखे में अब कवनो कोर-कसर ना रहे। सही दवा रात ओकरा बेटा का हथे से मिलल रहे। रोग रहे ई सोच, कि ओकरा के देखे-सुनेवाला केहू बा कि ना? जवन गाछ ऊ लगवले बिया, ऊ छायादार बा कि ठूँठ-छितनार? अवलाद का हृदय में ओकर कवनो स्थान बा कि ना? बेटा-पतोह खातिर ओकरा जीवन के कवनो उपयोग आ सार्थकता बा कि ना? माई मुसकात कहलस, 'बबुआ बड़ा बढ़िया डाक्टर से देखवले बाड़े। अब हमार अरदोआय बढ़ गइल। नाती-परनाती देख के मरब।'

माई जवन ना कहे के चाहत रहे, ऊ हम जानत रहीं। जवना दवा के तलाश में पटना आइल रहे, ऊ ओकरा मिल गइल रहे। शायद ऊ दवा गाँव में हमार छोट भाई देवे के भुला गइल रहन।

# अभ्यास

## वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. 'माई' कहानी के लेखक के ह?
2. 'माई' कहानी पढ़ला से कवन भाव उत्पन्न हो रहल बा?
3. 'माई' अपना कवना बेटा के पास रहत रही?
4. 'माई' के कबहूँ बाहर मत सुतइह लोग। ई के कहले बा?
5. **माई पहिले कहाँ सुतत रही?**

   (क) घर के भीतर (ख) ड्राइंग रूम में

   (ग) छत पर (घ) कहीं ना
6. **'माई' बाद में कहाँ सुते लगली?**

   (क) चुहानी में (ख) चउकठ प

   (ग) दुमुँहा में (घ) घर के भीतर
7. **'हमार अरदोआय बढ़गइल' के कहल?**

   (क) माई (ख) बाबूजी

   (ग) रामलखन (घ) शिवरतन
8. **माई गाँव से कवना शहर में आइल रहलीं?**

   (क) पटना (ख) आरा

   (ग) दिल्ली (घ) एह में से कहीं ना
9. **छोट भाई कहाँ रहत रहन?**

   (क) पटना (ख) गाँव

   (ग) शहर में (घ) सीवान

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. परिवार से रउआ का समझत बानी?
2. बड़का भाई अपना लइका लोग से का कहलन?
3. आधुनिक परिवार के का दोष बा?
4. माई सबसे बेसी केकरा के मानत रहीं आ काहे मानत रही?
5. भाई आ बेटा भरपूर कहिआ सुतल लोग।

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. 'माई' कहानी में कहानीकार सबसे बेसी केकरा चरित्र के उकेरले बा?
2. व्यक्तित्व के विकास में बाप-मतारी के का योगदान होला?
3. मित्र के पास पत्र लिख के माई कहानी के महत्ता पर प्रकाश डालीं?

### सप्रसंग व्याख्या

1. ''माई के कबहूँ बाहर मत सुतइह लोग, खुब सेवा करिह लोग''
2. ''बबुआ बड़ा बढ़िया डॉक्टर से देखवले बाड़े। अब हमार अरदोआय बढ़गइल।''

## परियोजना कार्य

'माई' कहानी के बड़का लइका के चरित्र लेखा अपना गाँव में केहू होखे त ओकर चरित्र चित्रण करीं ।

## शब्द संपदा

**टुघुड़ल** – धीरे-धीरे गइल

**ड्राइंग रूम** – बइठका

**डाइनिंग स्पेस** – भोजन करे के जगह

| | | |
|---|---|---|
| **छूतिहर** | – | गंदा चीज . |
| **घइला** | – | घड़ा |
| **ढिमिलाना** | – | लुढुक के गिरल |
| **संघतिया** | – | साथ रहेवाला, दोस्त, इयार |
| **मधिम** | – | कम |
| **मॉडर्न** | – | आधुनिक |
| **कोठी** | – | बढ़िया मकान |
| **मेहरी** | – | मेहरारू, औरत |
| **ढकढकावल** | – | खटखटावल, खटखटा के |
| **पनरोही** | – | एगो स्थान 'जहाँ' पानी गिरावल जाला |
| **कंगाल** | – | बहुत गरीब |
| **ओढ़ना** | – | शरीर ढकेवाला चादर |



Back

## अध्याय - 6

# डा० वीरेन्द्र नारायण पांडेय

साहित्य सेवा खातिर अनेक पुरस्कार से सम्मानित वीरेन्द्र नारायण पांडेय के जनम जनवरी 1941 के छपरा में भइल। इतिहास आ रजनीतिशास्त्र से स्नातकोत्तर उपाधि-प्राप्त करे के साथ कानून के डिग्री भी लिहलन। शिक्षा-दीक्षा का समाप्ति का बाद गंगा सिंह महाविद्यालय, छपरा में राजनीतिविज्ञान अधयापन कार्य प्रारंभ कइलीं। उहँवे से विभागाध्यक्ष का रूप में अवकाश ग्रहण गइनी। अध्यापन कार्य का अलावे साहित्य सृजन का सिलसिला में हिंदी आ भोजपुरी में लेखन शुरू कइलें। भोजपुरी कहानी-संग्रह 'दरबा' पर अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन द्वारा इहाँ का सम्मानित भइल रहलीं। आपन स्वतंत्र लेखन का अलावे 'गाँधी गाथा', 'प्रेम-कथा' आदि संकलन के संपादन का साथ ही भोजपुरी 'जनपद', 'पहरूआ', 'चाक' आदि पत्रिकन के संपादन में भी इहाँ के सहयोग रहे।

### विषय प्रवेश

'पुरान घड़ी' शीर्षक अवकाश प्राप्त बूढ़ आदमी के प्रतीक का रूप लेखक जुगुल बाबू के कहानी में उपस्थित भइले बाड़ें। कहानी में फ्लैश बैक का रूप में अपना पत्नी-सुभद्रा का इआद जहाँ जिनगी के सुखद समय के इआद दिआवे ला। उहँवे पेंशन से पोता-पोती पर प्यार लुटावे पर पुतोहू के आँख-भँव चमकावल आ ओह पर आपति प्रकट कइल भौतिकता का नीचे रिश्ता आ स्नेह में दबा के छटपटइला के प्रस्तुतीकरण बा। अंत में उनकर जिनगी बोझ बन गइल बा। मृत्यु का बाद अवोध रत्ना आ संजय के पूछल कि 'उहाँ का कब आइब' कहानी के क्लाइमेक्स ह।

# पुरान घड़ी

जुगुल बाबू तइयार होके अपना कमरा में टहलत रहलन। घड़ीसाज के कहल बात रह-रह के उनका मन के काँट लेखा गड़त रहे। ऊ एक बेर अपना बियाह में मिलल घड़ी के मरम्मत करवावे जब घड़ीसाज के लगे लेके गइलन, त ऊ कहले रहे-'एगो बात कहन बानी' अनमख मत मानेब। अपने एह घड़ी के मरम्मत करवावे पर अबहीं ले जेतना रूपिया खरच देनी , ओतना में त एगो नये घड़ी कीना गइल रहित । अब एकरा पर खरचल बेकार बा। अगल घर में छोट नाती-पोता होखे लोग, त ओह लोग के खेल खातिर अब ई घड़ी देदीं।

ऊ ओजवाँ से मुसकात चल आइल रहलन, बाकिर घड़ीसाज के कहल बात उनकर पाछ ना छोड़लस।

घड़ी के उजड़ल डायल आ पिअराइल केस पर नजर गइला से ऊ छटपटाये लागल रहलन आ सोचे लगलन-साँचो बहुत पुरान हो गइल बा ई घड़ी। ईहे जब नया रहे, त उनकर संगी-साथी लोग एकरा चमक आ बनावट के तारीफ करत आघात ना रहे लोग। दफतर में उनके घड़ी से समय मिलावल जात रहे। अब पुरान भइला पर ईहे घड़ी कबो आध घंटा सुस्त आ कबो घंटो भर तेज चलेले। महिना-दू महिना पर बंदो हो जाले आ हिला-डोला पर कबो-कबो चलहूँ लागेले। जब ना चलेले त घड़ीसाज के देखावे के पड़ेला। अब त साँचो एकर कलई उजड़ गइल बा, देखहूँ में बदरंग लागेला।

स्कूटर घुरघुराइल आ जुगुल बाबू के धियान बँटल। ऊ बुदबुदइलन- 'दफतर जाये के बेरा हो गइल, दीपक दफतर जात बाड़न।' ई बात दिमाग में आवते उनका आगा अपना मेहरारू के इयाद के पन्ना पड़फड़ा के खुल गइल-जब के ऊ दफतर जाये लागस, त उनकर मेहरारू सुभद्रा, उनका के दुआरी पर ले छोड़े आवस। उनका दफतर से लवट के अइला पर, बिना कुछ बतिअवले, स्टोब बार के हाली दे उनका खातिर जलपान आ चाय बना देस। उनका आगा जलपान रख के, दीप्ति आ दीपक के हुड़दंग के किस्सा हँस-हँस के सुनावस। बेटा-बेटी के बाल सुलभ हुड़दंग के रोचक

किस्सा उनका के गुदगुदावे आ खुल के हँसस। एह से उनकर दिन भर के थकान मेंटा जाये। दुनो भाई-बहिन मिलके कबो चीनी के डिब्बा खोल के, चीनी खाके पेहना भुलवा देव लोग, कबो दूध पर के मलाई उतार के चट जाये लोग आ दूध उघारे छोड़ देवे लोग, त बिलाई जुठिया देवे। रोज मूस लेखा पूजा खातिर रखल किसमिस आ मिसरी के भोग लगा देवे लोग। एतना उतपात कइलो पर सुभद्रा के कबो खीस ना बरे। उनका के खिसिआइल केहू कबो ना देखले होई।

अगर कबहूँ सुभद्रा उनकर मुँह उतरल देख लेस त उनका बेचैनी हो जाय आ ऊ उनका से ढेर कुल्ही सवाल करे लागस- 'काहे उदास बानी, केहू से दफतर में झगड़ा भइल ह का? राउर तबीयत ठीक बा नू? अगर उनका से गलतियो से ई कहा जाय कि उनकर तबियत कसरियाह बा, त सुभद्रा डाक्टर बोलावे से लेके देह मले तक के काम बेचैनी में रे लागस।

सुभद्रा के मरला चउदह बरिस से ऊपर हो गइल, बाकिर जुगुल बाबू के अइसन लागेला जइसे ई कुल्ही बात काल्हे के होखे। सुभद्रा के संगे बितावल एक-एक पल आजो उनका खातिर टटका बा।

रेक्सा के घंटी टुनटुनाइल आ जुगुल बाबू के इयाद के कड़ी टूट गइल।

ऊ कमरा से बाहर निकल अइलन। बाहर के ओसार में ठाढ़ होके संजय आ रत्ना के रेक्सा के भाव भरल नजर से निहारे लगलन। दीपक के बेटा-बेटी जात-जात हल्ला करत गइलन स-'दादाजी, माई खाये खातिर बोलवली ह।'

ई सुन के जुगुल बाबू के ओठ पर भाव भरल मुसकी उभर आइल आ उनका दिमाग में दीपक आ दीप्ति के लड़िकाई के अलबम एक बारगी खुल गइल। ओही अलबम में अझुराइल ऊ अँगना के ओर बढ़ गइलन।

राज सात बजते-बजते जुगुल बाबू तइयार होके बइठ जास। उनका के बइठल देख के संजय आ रत्ना परसादी खातिर पहुँच जाये लोग। ऊ ओह लोग के परसादी बाँट के, पढ़ावे खातिर बइठा लेस। लड़िकन में अझुराइल रहला से ऊ अपना भीतर के खालीपन के भुलाइल रहस। नव बजते-बजते लड़िका स्कूल के तइयारी करे चल जा स आ ओकनी के जाते जुगुल बाबू खूँटी पर टाँगल कुरता पेन्ह लेस, गोड़ में जूता डाल लेस आ ओसारा में घुमे लागस। एह बेरा पर उनका एगो अजबे बेचैनी हो जाये।

तीस बरिस ठीक बेरा पर तइयार होके, दफतर जाये के सिलसिला चलत रहल बा, एही से रिटायर्डो हो गइला पर दफतर के बेरा पर तइयार भइल उनकर मजबूरी हो गइल बा। जवना दिन खाये-पीये में अबेर हो जाला, ओह दिन ऊ भीतरे-भीतरे झल्लाइल रहेलन आ तनाव के लकीर उनका चेहरा पर लगल रहेला।

दफतर जाके एने-ओने चक्कर लगावेलन आ फेरू अपना संगे काम कइल लोग के बइठ जालन। दफतर के कामकाज के जायजा लेत, कर्मचारी के बढ़त गैर-जिम्मेदारी, बिगड़त व्यवस्था आ राजनीतिक भ्रष्टाचार पर आपन विचार रखेलन। उनका बात में रूचि लेत संगी-साथी लोग कवनो-कवनो अइसन दिक्कत दूर करे के राहो पूछ लेला लोग, जवन काम कर के बेरा ओह लोग के आगा आवेला। ऊ अपना अनुभव आ ज्ञान से बड़ा सटीक राय देवेलन, एही से सभे उनका अइला पर खुश रहेला। दफतर से घूम-घाम के जब ऊ घरे लवटेलन, त उनका ई बुझइबे ना करेला कि ऊ रिटायर्ड हो गइल बाड़न।

एक दिन जुगुल बाबू दफतर से लवटलन, त उनकर अंग-अंग दरद से टूटत रहे। ऊ चद्दर तान के चुपचाप पड़ रहलन। बिछवना पर जाते उनकर आँख झँपाये लागल आ देह बोखारे जरे लागल। ऊ बेसुध हो गइलन।

दीपक दफतर से लवट के अइलन। जब उनका आगा, उनकर मेहरारू माधुरी, जलपान रखली, त पूछलन-"बाबूजी जलपान क लेनी?"

"अबहीं उहाँ के जलपान ना कइनी ह। स्कूल से लवट के संजय आ रत्ना खेले लागल ह लोग एही से उहाँ के लगे ना गइल ह।" -ई कह के माधुरी प्याली में चाय ढारे लगली।

अपना लगे ठाढ़ संजय के पुचकारत, दीपक कहलन-"जा बेटा, दादाजी के नास्ता करे खातिर बोला ले आव।"

संजय एक छलांग में दादाजी के कमरा में पहुँच गइल आ कहलन-'दादाजी, चलीं, जलपान करे, पापा बोलावत बाड़न।'

जुगुल बाबू कहँरत कहलन-"बेटा, पापा से कह द कि हम जलपान ना करेब, हमार तबीयत ठीक नइखे।,"

संजय उहाँ से उछलत पापा के लगे पहुँच के कहलन-"दादाजी चद्दर ओढ़ के सुतल बानी, आ कहनीं ह कि हमार तबीयत ठीक नइखे, जलपान ना करेब।"

दीपक ई सुनके उहँवा से उठ गइलन। जुगुल बाबू के लगे पहुँचके पूछलन–"कइसन तबीयत बा, बाबूजी?"

जुगुल बाबू आँख मूँदले कहलन–"कुछ ना बेटा, तनी बोखार हो गइल बा। मौसमी बोखार ह। आराम क लेब, त ठीक हो जाई।"

दीपक उनका लीलार पर हाथ रखलन आ घबड़ा के कहलन–"राउर देह त बोखारे जरत बा आ रउरा कहत बानी कि आराम कइला से ठीक हो जाई। माधुरी के बोला लेतीं, ऊ कवनो डाक्टर के देखा देती।"

ई कहत दीपक तेज डेग धरत कमरा से बाहर निकल गइलन।

अपना मेहरारू के लगे ठाढ़ होत कहलन–"बाबूजी के देह बोखार से आग लेखा लहकता। कवनो डाक्टर के बोलवा के देखा देल जरूरी बा।"

उनकर मेहरारू पल भर चुप रहली आ कहली–"देखीं। हम कहीले, त रउरा खराब लागेला कि अब बाबूजी के ऊ उमिर नइखे कि बेमतलब के रोजे दफतर ठीक बेरा पर चल जाइले। बेमतलब के चक्कर कटला से हरानी त होखबे करेला, संगे-संगे दू-चार रूपिया रोजे खरच हो जाला। दू–चार रूपिया में एक साँझ के तरकारी हो जाइत। एतना कम पइसा में महिना भर के खरची एह महँगी में कइसे चलाइले –ई हमहीं जानीले। रउरा त बंधल– बंधवल महीना देके निश्चिंत हो जाइले।" एक साँस में ई कुल्ही बात माधुरी कह गइली।

दीपक झल्ला के कहलन–"बुझाता आज के बाद ई कुल्ही बात बतिआवे के मौका फेरू कबो ना मिली। पहिले त उनका के देखावे के बात करेके चाहीं।"

ई कहके ऊ बाहर निकल गइलन।

दीपक तनी देर के बाद डॉ. नाथ के संगे लेके अइलन। डॉक्टर जुगुल बाबू के जाँच कइलन आ कहलन–'कवनो खास बात नइखे। बोखार त मौसमिये बुझात बा आ घामो लागल बा। दवाई लिख देत बानीं, ठीक हो जायेब; बाकिर थोड़ा आराम कइल जरूरी बा।' ई कहके डॉक्टर चल गइलन।

ढेर रात गइला ले दीपक आ माधुरी में जुगुल बाबू के दफतर गइला पर बहस होत रहल। दीपक लाख समझावे के चाहस कि उहाँ के दफतर गइला से मन बहल जाला आ निरोग रहे खातिर घूमल जरूरियो बा।

"अगर उनकर घूमल आ दफतर गइल बंद कर दिहल जाई त ऊ खटिया ध लिहन।" उनकर कवनो दलील माधुरी माने के तइयार ना रहली। ऊ इहे कहत रहली कि एह उमिर में आराम ना कइला से रोग होता। उनका दफतर ना गइला से बेकार खरच के बचतो होई।

आखिरी में दीपक बात टालत कह देलन-"ठीक बा, उहाँ के ठीक हो जाये द, हम दफतर ना जाये के कह देब।"

दू हफता ले बेमार रहला के बाद जुगुल बाबू पूरा निरोग हो गइलन। उनका पहिलहीं लेखा बुझाये लागल। बिछवना पर पड़ल-पड़ल उनका उजबुजाहट होखे लागल, बाकिर पतोह के बात रह-रह के उनका दिमाग में चक्कर काटत रहे। पतोह के ई कहल ऊ सुन लेले रहलन कि उनका गइला से बेकार खरचा होला। अइसे पड़ल रहला से उनका देह में जंग लाग जाई आ बेरोग के रोगी हो जइहन।

एक दिन जुगुल बाबू के उजबुजाहट सीमा पर कर गइल। ऊ दस बजते-बजते कपड़ा पेन्ह के कमरा से बाहर निकल अइलन। एही बीचे दीपक दफतर जाये खातिर बाहर निकललन। अपना बाबूजी के तइयार होके बरामदा में ठाढ़ देख के पूछलन-"रउरा कहीं जाये के तइयारी कइले बानीं का ?"

जुगुल बाबू घुटकत जवाब देलन- "बइठल-बइठल मन अगुता गइल बा आ देह के जोर-जोर में दरद हो गइल बा। सोचत बानी कि कतहीं से तनि देर घूम-घाम आईं। घूम अइला से मनो बहल जाई आ देहो सीधा हो जाई।" उनकर बात सुनके दीपक के चेहरा के तनाव बढ़ गइल आ उखड़ल आवाज में कहलन-"अबहीं रउरा पूरा ठीको ना भइनी आ दफतर के चक्कर काटे खातिर तइयार हो गइनी। रउरा अब आराम से पड़ल रहे के चाहीं। कहीं फेरू बेमारी बढ़ गइल, त नाहक सभे तंग हो जाई।"

दीपक के बात सुनके जुगूल बाबू के चेहरा एक-ब-एक पिअरा गइल आ उनका आँखन में एक संगे अनगिनत भाव पँवरे लागल। ऊ दीपक के ओर अझुराइल नजर से देखत रहलन-"ठीके कहत बाड़ बेटा, अब हमरा चुपचाप पड़ल रहे के चाहीं।" ई कहत ऊ अपना कमरा के ओर बढ़ गइलन। ऊ कमरा में घुसते कुरता उतार के खूँटी पर टाँग देलन आ कलाई में बान्हल घड़ी खोल के टेबुल पर रखलन। घड़ी रखे के बेरा एकबारगी घड़ीसाज के कहल बात उनका दिमाग में बवंडर लेखा उठल आ ऊ तिलमिला उठलन। उनका मुँह से निकलल-'घड़ीसाज ठीके कहले रहे, अब

साँचो ई घड़ी बेकार हो गइल बा। एकरा के अब लड़िकन के खेलहीं के दे देवे के चाहीं।' उनका बुझाइल जइसे उनका नस-नस में चिउँटी रेंगत होखे। ऊ बेचैनी में खिड़की के लगे अइलन आ खिड़की के पल्ला खोलके, सड़क पर आवत-जात, चिन्हार-अनचिन्हार लोग के भाव नजर से निहारे लगलन।

जुगुल बाबू के देह ढेर तेजी से गिरे लागल आ उनका ई बुझाये लागल कि अब उनका अंग-अंग में जंग लाग रहल बा। उनकर साँझो के टहलल बंद हो गइल। जब ऊ बिछवना ध लिहन आ किरिया-करम करे से लाचार हो जइहन, त उनकर जिनगी नरक हो जाई। उनका के एह बात के फिकिर भीतरे-भीतरे घुन खईले जात रहे। रोज पूजा करे के बेरा भगवान से बिनती करस कि भगवान उनका के चलते-फिरते एह दुनिया से उठा लेस।

जवना दिन जुगुल बाबू के पेंसन लेवे जाये के होखे, ओह दिन उनका चेहरा पर एगो चमक रहत रहे। भोरहीं उठके ऊ पेंसन लेवे जाये के तइयारी करे लागस। ओह दिन उनकरा ई लगवे ना करे कि उनका देह में फुरती के कमी बा। उनकर पतोहो ठीक बेरा पर उनका के खिला-पिआ के, रेक्सा बोलवा देस।

पेंसन के रूपिया उठा के जुगुल बाबू निफिकिर होके घूमत रहस आ चिन्हार लोग से भेंटो करस। ओह दिन उनकर अपना तन आ मन-दूनो-के दुख बिसरल रहत रहे।

एक महीना में जुगुल बाबू पेंसन लेके ढेर अबेर से घरे लवटलन। उनका पहुँचते संजय आ रत्ना आके कहल लोग-"दादाजी, बाबूजी जलपान खातिर बोलवनी ह।"

जुगुल बाबू लड़िकने के संगे मुसकात जलपान करे चल गइलन। उनका बइठते दीपक पूछलन-"आज लवटे में ढेर अबेर काहे हो गइल, बाबूजी। हमनी के मन में त तरह-तरह के बात आवे लागल रहे।"

"आसहीं, बाजार में तनि घमे-घामें लगनी हँ।" -कह के जुगुल बाबू आगे रखल जलपान करे लगलन।

जलपान कइला के बाद जुगुल बाबू अपना पाकिट से रूपिया निकललन आ माधुरी के ओर बढ़ावत कहलन-"ल बहू, रूपिया रख ल। अबकी कुछ कम रूपिया बा, हम कुछ खरच क देनी ह। अपना खातिर ब्लेड, साबुल आ तेल ले लेनी हँ।"

एतना कह के ऊ पल भर चुप हो गइलन आ फेरू कहलन- ''दोकान पर गइनी हँ, त एगो फोम के स्कूल बेग पसंद पड़ गइल ह। रत्ना आ संजय खातिर दू गो बेग कीन लेनी हँ। सस्ता में एगो ब्रीफ-केस मिल गइल ह, ऊ दीपक खातिर लेले अइनी हँ।''

ई कह के जुगुल बाबू दीपक आ माधुरी पर उड़त नजर डललन।

माधुरी के तनह चेहरा आ आँखिन में उभरल भाव देख के जुगुल बाबू सफाई देवहीं के चाहत रहलन कि ऊ बोल उठली-''अबहीं दूनो लड़िकन के स्कूल-बैग नये बा, कीनला के कवन जरूरत रहल ह। ब्रीफ-केस कीनल बेकारे रहल ह।''

जुगुल बाबू उनका बात के कवनो जवाब ना देलन। ऊ लड़िकन से कहलन-''चल लोग, तोहरा लोग के उपहार दीं।'' ई कहत ऊ ओजवाँ से उठ गइलन आ लड़िको उनका पाछा लाग गइलन स। उनका जाते दीपक मुसकात कहलन-''देखलू, बाबूजी लड़िकन के केतना मानीले।''

माधुरी के खीस चेहरा पर से जीभ पर उतर आइल, ऊ कहली-'बाबूजी सठिया गइल बानी। बेकार के चीज कीन के पइसा बरबाद कर अइनी। पइसा कम हो गइला से पूरा महिना के बजटे बिगड़ जाई, ई उहाँ के बुझइबे ना करेला। अइसे, ई उँहें के पेंसन के रूपिया ह, जइसे मन करे खरच करीं, उड़ाई-पड़ाई, हमरा बोले के कवन हक बा। बाकिर घर-खरची में जब उहो रूपिया जोड़ाइल बा, त एह बात के बुझे से चाहीं। रउरा ई मालूम बा कि पिछलको महीना में टेलीविजन आ गोदरेज आलमारी के किस्त नइखे दिआइल।'

दीपक चुपचाप उनकर कुल्ही बात सुनत रहलन, बाकिर उनका चेहरा पर खीस के लकीर उगल आवत रहे। ऊ अपना के सम्हारत कहलन-''एतना जोर-जोर से ई कुल्ही बात बोल गइलू ह, तोहरा ई तनिको ना बुझाइल ह कि तोहार बात बाबूजी के कान मूं पड़ल होई, त उहों के केतना चोट पहुँचल होई। हर बात सोच-समझ के बोले के चाहीं।''

अबहीं ऊ आउर कुछ कहहीं के चाहत रहलन कि रत्ना आ संजय स्कूल-बैग आ चॉकलेट के डिब्बा लेले उनका लगे पहुँच गइल लोग। संजय चॉकलेट के डिब्बा उनका हाथ में धरावत कहलस-''बाबूजी दादाजी कहनी हँ कि बाबूजी से चॉकलेट बँटवइह लोग।''

दीपक डिब्बा खोल के रत्ना आ संजय के हाथ में चॉकलेट पकड़ा दलन। दूनो लड़िका खुशी के कूदे लगलन स। स्कूल-बैग देखावत संजय पूछलस-''बाबूजी, दादाजी के एतना रूपिया कहाँ से आवेला कि हमनी खातिर ई सब कीन ले आइले?''

दीपक मुसकाये के कोसिस करत रहलन-''बेटा, नोकरी करेवाला जब नोकरी से रिटायर्ड, हो जाला त ओकरा सरकार के ओर से रूपिया मिलेला-नाती-पोता के चॉकलेट आ स्कूल-बैग कीने खातिर।'' ई कहके ऊ ठठा के हँसे लगलन आ लड़िका ओजवाँ से उछिलत-कूदत चल गइलन स।

ओह दिन के बाद जुगुल बाबू के आपन जिनगी बोझा लेखा लागे लागल। उनका चेहरा पर उदासी के परत-पर-परत पड़े लागल आ उनका आँखिन में अलगाव के भाव पँवरे लागल। देखते-देखते उनकर देह गिरे लागल आ ऊ खटिया ध लेलन।

एक दिन जुगुल बाबू एह दुनिया से आँख मुँद लेलन। उनकर रंथी सजावल जात रहे आ उनका लगे बइठ के नाता-रिश्ता के लोग रोअत-बिलखत रहे। अड़ोस-पड़ोस के लोग समझावत-बुझावत रहे।

दीपक करेजा पर पत्थर धइले, बाप के आखिर यात्रा के तइयारी करत रहलन।

रंथी उठल, त माधुरी के रोअल-चिल्लाइल बढ़ गइल। उनका के रोअत देख के रत्ना आ संजयो रोये लगलन स। ओकनी के अपना अँकवारी में पकड़ के माधुरी चुप करावे लगली। संजय सुसुकत बोलल-''माई, दादाजी के कहाँ ले जाता लोग? उहाँ के फेरू लवट के कब आएब?''

माधुरी रोअत कहली-''अब उहाँ के कबो ना आएब, बेटा..... कबो ना।''

संजय फेरू रोवे लागल आ रोअते पूछलस-''दादाजी ना आयेब,त हमनीं के चॉकलेट के दी? पेंसन केकरा मिली? बाबूजी के पेंसन मिली का?''

ई बात सुनते माधुरी के आँखिन से टपकत लोर थम्ह गइल आ उनका देह में कंपकंपी समा गइल। उनका बुझाइल कि पथराइल आँख उनका ओर बढ़ल आवत बा। ऊ डेरा के आपन आँख बंद क लेली आ रत्ना आ संजय के करेजा में साट के सुसुके लगली।

## अभ्यास

1. 'पुरान घड़ी' केकर लिखल कहानी बा?
2. जुगुल बाबू अपना शरीर के तुलना कवन चीज से करेलन?
3. माधुरी के जुगुल बाबू के ऑफिस गइल काहे खराब लागे ला?
4. दीपक के दफतर जात देख के जुगुल बाबू के मन में केकरा इआद के पन्ना फरफराए लागल?
5. ''बाबूजी सठिया गइल बानी'' इ कवना विचार से आ केकर कहल बा?
6. ''दादाजी, माई खाये खातिर बोलवली ह'' दीपक के बेटा-बेटी के इ बात सुन के जुगुल बाबू के दिमाग में का खुल गइल?
7. जुगुल बाबू के कवना कारण से आपन जिनगी बोझ लेखा लागे लागल आ, आ उनका शरीर पर ओकर का प्रभाव पड़ल?
8. नीचे लिखल मुहावरा के आ ओकर अर्थ दिहलबा मुहावरा के वाक्य में प्रयोग करीं।

   (i) काँट लेखा गड़ल - खराब लागल

   (ii) जिनगी बोझा भइल - जिनगी से ऊबल

   (iii) आखिरी यात्रा - मउअत के बाद श्मसान के यात्रा

   (iv) आँख झपाना - अऊँघावल, नींद आवल

   (v) चोट पहुँचल - दुख भइल

## शब्द-संपदा

**अनमख** - खराब, बुरा
**खरचल** - खरच कइल
**बुदबुदाइल** - धीरे-धीरे हलुक आवाज में बोलल
**तबीयत कसरियाह** - तबीयत खराब
**टटका** - ताजा
**झल्लाइल** - खीस में मन के एगो आव
**रंथी** - अर्थी

अध्याय - 7

# रूपश्री

श्रीमती रूपश्री के जनम 5 मई 1945 के कौड़िया टोला रमन राय (सीवान जिला के भगवानपुर हाट प्रखंड) के गाँव का एगो गृहस्थ परिवार में भइल। इहाँ के नइहर आ ससुरा दूनों जगे लिखे-पढ़े के सवख रहल जवना से प्रभावित होके रूपश्री भी हिंदी-भोजपुरी में लिखे लगली। रूपश्री भोजपुरी कहानियन के पहिलका संग्रह 'जिनकी के परछाहीं' 1971 में भोजपुरी साहित्य संस्थान (पटना) से प्रकाशित भइल। बाद में भोजपुरी कहानी लेखिका लोगन के एगो संग्रह 'खोंता से बिछुड़ल पंछी', नाँव से संपादित कइलीं। भोजपुरी कथा कहानी मासिक के सह-संपादन कइली। पंचतंत्र के कहानियन पर आधारित 'दरकल नींव' नाँव से इहाँ एगो कहानी-संग्रह लड़िकन खातिर प्रकाशित बा। भोजपुरी पत्र-पत्रिकन में इनकर कहानी निबंध, यात्रा-वर्णन, छपत रहेला। महिला लेखिका सब के लेखन के एगो संग्रह 'कारगिल के सबक' नाँव से छपल बा।

## विषय-प्रवेश

भारत छोड़ो आंदोलन के समय में एगो वीर पुत्र शहीद फुलेना प्रसाद के शहादत के कहानी आजो नवही लोगन में देश सेवा के अपना जगा रहल बा। एगो संस्मरण से शुरू भइल ई कहानी शहीद के गाथा का सँगे शहीद पत्नी तारा देवी का त्याग, वीरता आ देशप्रेम के भी वर्णन कर रहल बा। देश-सेवा के हक स्त्री-पुरुष सबका अपन हक बा।

# शहीद के अरमान

छपरा जिला में महाराजगंज के नाँव के नइखे जानत? तिजारत में मसहूर एह जगे के माँग में सेनुर के बिंदिया खानी बा। थाना का लगहीं ईटा के पाया आइसन एगो सिरखार जवना के लोग अमर शहीद फुलेना परसाद का इयादगारी में बनवा देले बा। बनारसी दास चतुर्वेदी जी ओहि घरी एगो चिनगारी से भरल किताब लिखले रहीं, जवना के अँगरेज सरकार हजम क गइल।

ओहि दिन सुरूज के गोल चाका निकले का पहिलहीं हम गाँव से चलल रहीं। परीक्षा देवे के रहे। मन में इहो ललसा रहे कि कम-से-कम ऊ जगह हमरा देखे के मिल जाई जवन पर शहीद का रकत के गीत लिखाइल बा। स्मारक निहार के मन उदास हो गइल। पढ़ले रहीं कि 'शहीदों के मजारों पर लगेंगे हर बरस मेले'। बाकी इहवाँ त लोग नकवाइन क देले बा। चारू ओरि गंदगी, फूल का जगे गाछ के सूखल पतई।

× × ×

धाही देवे का पहिलहीं फूलेना बाबू उठ के अपना कार में लग गइलें। रात के देर से अइला का बादो नीन फजिराहे खुल गइल। कहलें 'आज बड़ा काम बा। थाना पर हमनी कबजा करे जा रहल बानी। सब तइयारी हो गइल बा। नेता लोग जेल में बा त एसे आजादी के लड़ाई त कवनों कमजोर ना हो जाई।'

-'आज हमहूँ चलब।'

-'तु जाके का करबू? हजारन भीड़ में।'

-'इहे नू रउरा लोगिन के अतियाचार ह। मरद कवनों अकेले धरती पर नइखे जनमल। रउरा एह धरती के अन्न-जल खइले बानी त हम का एहीगों पोसाइल-पलाइल बानी? हमरो हक बा कि देश का आजादी खातिर हम अपना कुरबानी दी।' फुलेना बाबू अपना मेहरारू तारा देवी के बात

सुनके भीतरे-भीतर गदगद हो गइलें। पहिलहीं से तारा उनका संगे गोड़-से-गोड़ मिलाके चल रहल बाड़ी। भागिये से अइसन सँघती मिले ला।

-"कवन ठीक बा-ओजा गोली चली।" फूलेना बाबू ई कहिके तारा की ओर अइसे तकलें जइसे रामचन्द्र जी जंगल जाए का पहिले सीता जी का आगा बन के भयानक रूप रख देवे के चाहत होखस।

'अच्छा होई। अंत अंत ले साथ त निभ जाई। अगर हमनीं दूनू आदमी सँगे रहब त जे होई दूनू परानी पर होई।" तारा देवी एकदम जिद क देले रहसु। ऊ पढ़ल-लिखल रहली। जब-तक क्रांतिकारी लोग भी आ जासु-आवभगत में उनुका बड़ा नीक लागे। पति के देस-अनुराग उनका मन में राष्ट्रप्रेम के दियरी बार देले रहे। जब एक हाली बतिहर लेसा जाला त ऊ तबले जरत रहेला, जबले तेल रहेला। फेरू औरत त अपना आँचर का अलोता दिया के टेम के आँधी-तूफान में भी बुताए से बचा देले।

फूलेना हँस के कहलें-"तोहनी का जिद का आगा केकर दम रहल ह। हमरा कवन अख्तियार बा कि हम तहरा के देस-सेवा के मोका से चूक जाए दीं। लछिमी का संगे, विसनू के रूप कुछ अउर होई...। हम एक घंटा में आएब-तूँ तइयार रहिह।

× × ×

दरोगा जी का अनेसा त रहे बाकिर ई सपनो में गुमान ना रहे कि अतना लमहर भीड़ मारे-घारे पर आमादा होके थाना पर आ जाई। उनुका लगे आरम-फोरस रहे बाकिर ओमें एगो के छोड़ के दोसर कवनों तइयार ना रहे। तइयार होखे में कम-से-कम आधा घंटा लागी। फेर एह भीड़ के कंगाँ रोकल जाव? भीड़ के विरोध कइला में कुसल नइखे। झंडा अगर थाना पर गड़ा गइल त नोकरी के का होई? बालबच्चा का मुँहे जाबे लाग जाई। कुल्ह रोब-दाब माटी में मिल जाई। समाज में लोग देखते थरथराला बाकिर नोकरी छूटते कुकुर खानी दुरदुरावे लागी।

ओनो भीड़ नारा का जोर से आकाश गुँजावत रहे। एने कोठरी में बइठल दरोगा जी कपार पर हाथ धइले धक-धक छाती के धड़कल सुनत रहसु। अचके उनका अन्हार में जोत के एगो किरिन लउकल। भीतर से निकल के बहरा अइलें आ भीड़ का सोझा खड़ा हो गइलें।

सबका आगा फूलेना प्रसाद। हाथ में झंडा। उनका पाछा उनुकर मेहरारू तारा देवी। फेर हजारन जवान आ अधेड़ लोग। सबका चेहरा पर रोस। दरोगा जी का बुझाइल कि उनुकर छाती बइठल जाता-माथा घूम रहल बा। ऊ झट से पाया ध के अलम लेहलें।

-"दरोगाजी, हमनी थाना पर तिरंगा फहराएव।" फूलेना प्रसाद के गंभीर आवाज गूँजल।

-'हँ'.... दरोगा के कंठ जइसे रून्हा गइल होखे।

-'आज से थाना पर हमनी के कबजा। थाना भर में सुराज, सुराजी लोग के राज-रउरा लोगन के काम खतम।

-'ऐं.....'।

-'रउरा आगे बढ़ी। अपना माई का दूध के लाज रखीं। भारत माता के पुकार सुनीं। हमनी खानी रउरा भी गोरा के गुलाम बानी। गुलामी के जंजीर तूड़ दीं। माता के बेड़ी काट के फेंक दीं।-' फूलेना बाबू भईंस का आगा बीन बजावे लगलें। दरोगा के जबड़ा हिलल जाइसे ऊ कवनों बात के चभुला-चभुला के पचावत होखसु।

-"हम तेयार बानी। रउरा अउर जगे झँडा गाड़ि आई। इहाँ कवनो जल्दी थोड़े बा। तले हमहूँ तइयारी काशी लीं। झँडा रउरा फहराएव, हम अपना सिपाहिअन का संगे सलामी देब-फेर एह खुशी में बनूक दाग के झँडा के राजसी सम्मान कइल जाई। ऐं....?"

-"घोखा। ई गड़बड़ी करी। अबहीं एकर सिपाही तेयार नइखन स। दोसरा जगे चले का पहिले एकनी के हिसाब साफ कके चले के चाहीं।" तारा देवी झुक के अपना पति का कान में कहली।

-"इन्किला ................ ब!"

-"जिन्दा बा ................द!"

भीड़ चिल्ला उठल। फूलेना बाबू का जइसे होश आइल कि भीड़ अगर बेऔकात हो जाई त अखरेरे एह हिन्दुस्तानी सिपाहिअन के जान चल जाई। एकनिओ का घरे लोग-बाग बा, बाल-बच्चा बा। एकनियनो का देह में ओही अन्न से बनल खून दउरता जवन उनका देह में, तारा का देह में भा एह इन्किलाबी जमात का एक-एक आदमी का देह में बह रहल बा। भाई का खून से हाथ रँगल ठीक नइखे। तारा के नारी मन होनहारी पढ़ लेले रहे बाकिर बीर ह्रदय सोझिया बेचारे फूलेना प्रसाद का दरोगा के बात अनुचित ना जँचल। ऊ ओटा पर चढ़ गइलें आ लोग से

कहलें-"हमनी डाकखाना चलल जाव। तले दरोगो जी तइयार हो जासु। ई अपने में झंडा फहरावे के कहतारें। इनकरो से सेवा के चानस देहल ठीक बा। दरोगा जी का अपना मन में एह बात के भरोसा राखे के चाहीं कि उनका विरोध आ गोली चलवला का बादो हमनी बिना झँडा फहरवले ना मानब। एसे हम पहिलहीं चेता दे तानी कि झुठमूठ के हमनी के बरगला के गोली चलवा देला से कवनों लाभ नइखे-सिवा एकरा कि एकाध आदमी के बलिदान हो जाई। हमनी त सिर पर कफन बन्हलहीं बानी। त अब हमनी दोसरा तरफ जा तानी आ एक घंटा का भीतरे हमनी इहवाँ वापस आ जाएब।'

"भारत माता की..."

"...जय।"

"महात्मा गाँधी की..."।

"जय!!!"

'अंग्रेजो......'

'भारत छोड़ो!!'

फूलेना प्रसाद, तारा देवी आ भीड़ मुड़ चलल। जब थाना खाली हो गइल त बेचारू दरोगा का जान में जान आइल। झपट के भीतर चलले। सिपहिअन के हथियार का सँगे तेयार हो जाए के हुकुम हो गइल।

भीड़ जब नगर में सगरे तिरंगा लहरा के आइल त थाना के रूप बदलल नजर आइल। झंडा के सम्मान खातिर त ना, बाकिर जन सेवक आ आजादी का आग में धधकत तेजस्वी फूलेना प्रसाद का छाती पर राइफल तनले मिलिटरी के जवान...। ओकनी का पाछा ठाढ़ दरोगा बेचारा। लोग के मन में इचिको भर भय ना बियापल बलु तरहत्थी, हगुआए लागल। मन कुलबुलात रहे। फूलेना परसाद पाछा घूम के छनभर अपना देवी तारा की ओर देखलें। आँख में नेह आ ओठ पर मुस्कान. ...। तहरे बात भइल। हमरो मन में इहे अनेसा रहे बाकिर सोचलीं कि काहे केहू का नियत पर शक करीं। अब समय आ गइल बा....।'

तारा देवी बगल में सट के खड़ा हो गइली। फूलेना प्रसाद के हाथ उनुका हाथ में रहे। गरम-गरम हाथ। जवानी के जोश आ शहादत के लहर। मन उफनात रहे।

फुलेना प्रसाद जोर से सुना के कहलें–"दरोगा, तोहार, देश–प्रेम का आँच के तेजी हम देख लेनीं। अब हमनी के बारी बा। का बुझतार। इ राइफल का गोली के डरे आजु हमनी का आजादी के सपना झूठा जाई...? कबों ना! झंडा फहरी–

झंडा फहरी मस्त गगन में

छहर–छहर के लगरी।

भंडा लहरी, भंडा फहरी।।

–"हम मजबूर बानी। फर्ज निभावे के परी। थाना के रछिया कइल हमार धरम बा। हम भीड़ के मना करतानी। सभी लवट जाय। जेकरा अपना जान से हाथ धोवे के होखे, जेकरा अपना देह से दुश्मनी होखे, सेही झंडा फहरावे के बात करों। जवान....सावधान!"

खट्–खट् बूट बाजल। राइफल के पट–पटाहट भइल। आ जवान लोग पोजिसन ले लेहल।

"इन्किलाब...! फूलेना परसाद का कण्ठ से निकलल।"

"जिन्दाबाद! जिन्दाबाद!!...." भीड़ के स्वर से आकाश के छाती चाक हो गइल। पास का गाछ पर बइठल चिरइन के जमात फुर्र से उड़ गइल।

"भारत माता की...." तारा देवी का मेंही नारी कंठ के आवाज जादू खानी जारू ओर छा गइल।

"जय!...." भीड़ के बेताबी अउर बढ़ गइल। लोग आगा बढ़ल। फुलेना प्रसाद का हाथ के झण्डा थाना काबर चलल।

"धाँय–धाँय!...." गोली छूटे लागल। निशाना त पहिलहीं से नेता फूलेना प्रसाद का छाती की ओर रहे। आके ओमे एगो गोली लागल। खून बहे लागल। तारा देखली कि गोली लाग गइल; त उनका मूड़ी पर शहादत के भूत चढ़ गइल।

'इन्किलाब....' एगो गोली त फूलेना प्रसाद खातिर लावा–धोली रहे। एकर उनका पर बवनों असर ना रहे। झंडा आगा गइल।

....धाँय!

....धाँय! ....धाँय!

गोली छूटत रहल। राइफल चिनगारी उगिले आ फूलेना प्रसाद के छाती ओकरा के पी जाय। अबले आठ गो गोली उनकर देह बेध देले रहे। बाकिर उनुका हिम्मत के कवनों थाह ना रहे। बिलकुल चन्द्रशेखर आजाद' के चरण-चिन्ह! कदम अबहीं आगा मुँके बढ़ते रहे।

लोग हैफ में। आठ गोली लगला के बाद भी जे ना मरल, ना गिरल ओपर देवता खुश बाड़े-''जय बजरंगबली की!....'' भीड़ अब बेकाबू हो गइल।

धाँय!....

ई नौवाँ गोली खा के फूलेना प्रसाद के देह लड़खड़ा गइल। तुरते तारा देवी बाँह में उनका के थम्हली आ ओहिजा लेके बइठ गइली। आँचर फाड़ के घाव पर बन्हली। मूड़ी हाथ में लेके कुछ कहे चहली....।

''तारा!....''

''हँ!....''

''अबहीं ले झंडा ना फहराइल। हम मरे का पहिले झंडा फहरात देखे के चाहत बानी। इहे हमार अरमान बा। तुँ एजा हमार अधूरा काम पूरा करे नू आइल बाड़ू ?''

''हँ देवता!....''

''रोअला से झंडा ना फहरी....।''

''आच्छा!'' तारा देवी उठके खड़ा भइली। फुलेना प्रसाद का हाथ से झंडा लेके आगा बढ़ली। भीड़ अपना नेता के गिरत देख के तनी थथम गइल रहे। अब छछात काली चण्डिका-भवानी के रूप में तेज से बरत तारा के आगा बढ़त देख के हिआव चौगुना हो गइल। सिपाहिअन का मुँहवई आ गइल। दरोगा लगी ले ले आ देखते-देखते झंडा फहरा गइल।

''भारत माता की....''

''जय।''

''बीर फूलेना....''

''जिन्दाबाद!''

तारा देवी का अपना पति के इयाद आइल। उनुका लगे झपट के अइली आ मूड़ी जाँघ पर भके ब[illegible] गइली। आँख में लोर नाचे लागल। गला रून्हाए लागल। फूलेना प्रसाद मेहरारू के

हाथ गाल पर धके कहे लगलें- ''काम पूरा हो गइल....। अफसोस बा कि हम साथ पूरा ना दे सकनी.... जनम-जनम ले हम तहरा प्यार आ साथ के भुखासल रहब।....'' तारा देवी झुक के उनुकर माथा चूम लेंली। ओठ पर मुसकान के किरिन गाइल, आ....!

## अभ्यास

### लघु उत्तरीय प्रश्न

1. महाराजगंज आज कवना जिला में बा ?
2. अमर शहीद फूलेना प्रसाद के इयादगारी में बनावल स्मारक कहवाँ बा?
3. स्मारक देख के लेखिका का मन काहे उदास हो गइल?
4. बयालिस के आंदोलन में अंग्रेजी सरकार सभी बड़ नेता लोग के जेल में डाल दिहलस। जनमुक्ति पर एकर असर का पड़ल रहे ?
5. तारा देवी के रहे ?
6. फूलेना प्रसाद का कै गो गोली लागल ?
7. सिपाहियन का मुँहवई काहे आ गइल ?
8. शहीद फूलेना प्रसाद अंत में अपना पत्नी से का कहले ?
9. अपना नेता के गिरत देख भीड़ थमल, त तारा देवी का कहली ?

### दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. थाना पर झंडा फहरावे का जुलूस में फूलेना प्रसाद का जवरे जाये खातिर तारा देवी का तर्क दिहली ?
2. थाना पर जुलूस का पहुँचला पर दारोगा कवन चाल चलल ? का ऊ धोखा दिहलस ?
3. फूलेना प्रसाद का सोच के दारोगा का चाल में फँस गइले ?
4. जुलूस जन आउर जो झंडा फहरा के दुसरे थाना पर लवट के आइल त ओजा के का दृश्य रहे? ओकर का असर फूलेना प्रसाद पर पड़ल?

5. थाना पर झंडा कइसे फहरावल गइल ?

6. अमर शहीद फुलेना प्रसाद का शहादत के कहानी अपना शब्दन में लिखीं।

7. तारा देवी एगो स्वतंत्रता सेनानी आ क्रान्तिकारी रहली।– एह तथ्य के उजागर करत एक अनुच्छेद लिखीं।

## परियोजना कार्य

1. रउरा गाँव-जवार में अइसन लोग होई जे आजादी का लड़ाई में हिस्सा ले ले होई। अइसन लोगन के पता करीं आ उनकर परिचय लिखीं।

2. रउरा आस पास भा गाँव-जवार में आजादी का लड़ाई में केहू शहीद भइल होखे त पता करीं। का ओह शहीद के स्मारक बनल बा ?

3. शहीदन का स्मारकन के का हाल बा ? ओकरा अइसन होखे के चाहीं ? आपन विचार लिखीं।

4. कहानी से चुन के दस गो मुहावरा के अर्थ लिखीं। (जइसे–माटी में मिलल, मुँह जाव जालग, कपार पर हाथ धइल, जोत के एगो किरिन झलकल, माथा घूमल, कंठ सन्हाइल, माई का दूध के लाज राखल, आदि)

## शब्द-संपदा

| | | | |
|---|---|---|---|
| **तिजारत** | – व्यवसाय, व्यापार | **मसहूर** | – नामी |
| **सेनूर** | – सिन्दूर | **लगहीं** | – नियरे, पास में |
| **ललसा** | – ललक, चाह | **असमारक** | – स्मारक |
| **निहारल** | – देखल | **कार** | – काम |
| **अतियाचार** | – अत्याचार | **गदगद भइल** | – खूब खुश भइल, अगरा गइल |
| **सँघाती** | – साथी | **अलोता** | – आड़ में |
| **अनेसा** | – आशंका | **खानी** | – जइसन |
| **सोझिया** | – सीधा, सादा, सरल | | |

अध्याय-8

# अनिल ओझा 'नीरद'

अनिल ओझा नीरद के जनम उत्तर प्रदेश के बलिया जनपद के सदुपुर गाँव में 2 मई सन् 1952 ई० के भइल रहे। साहित्य के क्षेत्र में गीतकार आ प्रबंधकार के रूप में इहाँ के आपन पहचान बनवले बानी। एने आके इहाँ कथाकार रूप के विकास बड़ा तेजी से हो रहल बा। एकर प्रमाण बा उहाँ के कहानी संग्रह 'गुरु दक्षिणा' इहाँ कहानियन के मूल कथा भोजपुर इलाका के लोगन के जीवन-संघर्ष, सुख-दुख आ हर्ष-विषाद बा। इहे कारण बा कि इहाँ के कहानी पाठकन के बीचे संवेदनशीलता के साथे पढ़ल जाले पाठक कहीं-ना-कहीं ओह में ओकर आपन अक्स देख लेला। नीरद जी अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन में सक्रिय बानी। इहाँ के प्रकाशित किताबन के नाँव बा-माटी के दीया, पिंजरा के मोल (दूनों कविता-संग्रह) वीर सिपाही मंगल पांडेय (प्रबंध काव्य), गुरु दक्षिणा (कहानी-संग्रह), बेचारा सम्राट (उपन्यास)

## विषय प्रवेश

'गुरु दक्षिणा' कहानी के कथावस्तु आज के समाज के यथार्थ बा। एह में गुरु के आदर्श, रूप के स्थापना करत सामाजिक समता के बड़ा सटीक उदाहरण प्रस्तुत कइले बा। ई कहानी एके साथे दलित-चेतना आ स्त्री चेतना के वकालत करत समाज के सामने एगो आदर्श स्थापित करे के कोशिश कइले बा आ रहत सामाजिक कल्याण के स्थापन के प्रयास कइले बा।

# गुरु-दक्षिणा

पं. गंगानाथ उपाध्याय के प्राइमरी स्कूल के हेडमास्टर के पद से रिटायर भइला अब करीब पाँच साल पूरा होखे वाला बा, बाकी अबहीं ले उनुकर पेंशन मिलल शुरू नइखे भइल। बेचारू जिला पेंशन आफिस के चक्कर लगा-लगा के थाकि चुकल बाड़े, बाकी सरकारी अमला का अनुका पर कौनो दया नइखे आवत। उमिर का एह पड़ाव पर जहाँ अब ऊ शान्ति से आपन बाँचल-खुचल जिनिगी काटे के सोचत रहले, उहाँ करीब पाँच साल त पेंशन आफिसर के चक्करे काटे में बीति गइल। आगे राम जानसु का होई। कहिया त सटलाटी ई झमेला आ कहिया से मिलल शुरू होई ई पेंशन? का मुअला का बाद? वाह रे सरकारी कायदा-कानून। सीधा-सीदा काम में हतना झमेला बा त अझुराह काम के हाल होत होई? कोर्ट-कचहरी के बात त सुनले रहनी हाँ कि उहाँ, दाँव-पेंच चलेला, एह से फैसला में देरी होला, बाकी पेंशन जइसन वाजिब हक मिले में देरी? बात कुछु समझ में नइखे आवत। ऊहो तब, जब हमरा ऊपर कवनो केस-मोकदिमा नइख। सर्विस में कवनो दाग-धब्बा नइखे, तब ? जब हमरा लेखा आदिमा के ई हाल बा, त एह देश के त भगवाने मालिक बाड़े!

अइसहीं बहुत कुछु सोचत-विचारत, उपधिया जी, आजुओ पेंशन आफिस आइल रहले आ दू-चारि घंटा ले, एह बाबू से ओह बाबू आ एह कलर्क से ओह कलर्क लोगन के टेबुल पर चक्कर कटले, सबकर चिरउरी-विनती कइले, बाकी उहे पुरनका जबाब कि, अभी रउआ से पहिले के फाइल के सलटावे के बाकी बाड़ी स, फेर साहेब अभी बहुत बीजी बाड़े, बातो करे के फुरसत नइखे, अभी रउआ महीना-दू महीना बाद आईं त देखल जाई, सुनिके भारी मन से मधि दुपहरिये में आजु पेंशन आफिस से बाह निकलि पड़ल रहले।

बाहर निकलले त घाम एकदम कपार पर रहे, एहसे ऊ अपना झोरा में से गमछा निकाले के विचार कइले अभी ऊ कुछु सोचत झोरा में हाथ डललहीं रहले, तले उनका सामने से दू गो मेहरारू निकलि के पेंशन आफिस के गेट का ओरि बढ़ि गइली स। पंडी जी आपन गमछा निकालि के अबहीं माथ पर धरहीं वाला रहले, तले ओह में से एगो मेहरारू लवटि के आके एकदम उनुका

समाने खड़ा हो गइलि। पंडी जी एकदम अचकचा गइले। तनी पाछा हटले आ टुक-टुक ओकरा के ताके लगले। आँखि त कुछु कमजोर होइए गइल रहे, बाकी तबो अबहीं रास्ता-पेंड़ा खातिर चश्मा के जरूरत ना पड़त रहे उनका। ऊ ओकरा के चीन्हे के कोशिश करते रहले तले ऊ बोलि पड़लि-

''माफ करबि, हम तनी रउआ के चीन्हे के कोशिश करत रहनी हां। कहीं रउआ उपधिया जी मास्टर साहेब ना नू हाई, जे कबो रूदरपुर के प्राइमरी स्कूल में पढ़ावत रहलीं?''

उपधिया जी बहुत ध्यान से ओह मेहरारू का ओरि देखत रहले, बाकी कहीं से ऊ परिचित ना बुझात रहली। उमिरि इहे करीब पैंतिस-चौंतिस के बीच के बुझात रहे। उनुका अपना गाँव के ऊ लागत ना रहली आ एह उमिर के कवनो दोसर मेहरारू से सिवा अपना बोटिन्हि के, अइसन परिचय ना रहे, जे एकदम उनुका सामने आ के खड़ा हो जाउ आ एहतरे बात करे के चेष्टा करे। बाकी तबो, ई कुल्हि सोचतो-सोचत उनका मुँह से अतना त निकलिए गइल कि- ''हँ, हम ऊहे उपधिया जी हई।''

अबहीं ऊ अउर कुछु बोलसु भा पूछसु तले ऊ मेहरारू एकदम से उनुका गोड़ पर झुकि गइलि आ गोड़ छू के गोड़ लागत कहलसि- 'पा लागीं पंडी जी।''

''लेकिन बचिया, हम त तोरा के एकदम नइखीं चीन्हत।''

''अरे रउआ कइसे चीन्हबि पंडी जी, कितना छोट पर त देखले बानी हमरा के। साइत दस-बारह बरिस के उमिर तक तीन-चारि साल त, बेसी-से-बेसी, हमरा के रउआ पढ़वलहीं बानी, तले ले त राउर ट्रान्सफर हो गइल रहे। अब एतना छोट के देखल, रउआ कइसे इयादि रही? बाकी हमरा मन के सोझा से ई सूरति थोरे उतरि जाई! हम त देखते चीन्हि लिहनी हां, तबो शंका मिटावे खातिर पूछे के पड़ल हा। केतना त हम रोअल रहनीं ओह दिन, जब रउआ ऊ स्कूल छोड़ि के जात रहीं।''

''हम अबहियो, ठीक से नइखीं इयादि क पावत बचिया, तोहरा के, तनी ठीक से इयादि परावऽ। बवनो खास बात बता के।'' उपधिया जी ओही तरी ओकरा के टुकुर-टुकुर ताकत कहले। ''तोहार नाँव का ह?''

''फुलकेसिया। कवनो फुलकेसिया इयादि बीया रउआ? अब रउआ के इयादि परावे खातिर त इहे नाँव बतावे के परी, ना त अब त हमार नाँव बा- श्रीमती फुलकेश्वरी देवी महतो। मेम्बर- जिला शिक्षा-परिषद, महिला समिति। सेक्रेटरी- आँगनबाड़ी शिक्षिका संघ। अध्यक्ष- जिला दलित

महिला संघ। आ अब त प्रांतीय महिला मानवाधिकार समिति में, दलित प्रकोष्ठ से एगो नामित सदस्यो बानी। अब एह कुल्हि विशेषण वाला नाम से त रउआ एकदम परिचित ना होखबि हम जानऽतानी, बाकी, लइकाई वाली फुलकेसिया त रउआ ना भुलाए के चाहीं, जेकरा के, कबो अपना स्कूल के पिछुवारी वाला खेतन में गोबर आ कंड़रा बीनत, बाकी स्कूल का ओरि हरदम ध्यान लगवले आ कबो-कबो, रउआ सभ के रटावल आ लइकनि के दोहरावत आवाज में आवाज मिलावत सुनि के, रउआ अचानक स्कूल के पिछुवारी चलि आइल रहनीं आ जेकर हाथ पकड़ि के एकदम से स्कूल में ले जा के खड़ा क देले रहनी। का ऊ फुलकेसिया इयादि बीया रउआ कि ओकरो के भुला गइल बानी?''

सिनेमा के रील लेखा, भा किताबि के फड़फड़ात पन्नन्हि लेखा, उपधिया जी, जाने कब आ केतना साल पीछे, ओह प्राइमरी स्कूल में, अब तक पहुँचि गइल रहलनि। ढाही के चलते रूदरपुर के प्राइमरी स्कूल के पक्का भवन, जब गंगा जी में ढहि-बहि गइल रहे, त ओकरा के उठा के एही नया बसल रूदरपुर आ पुरान बस्ती मूड़ाडीह गाँव के बीच, परबोधपुर के देवीतर बाजार में बसा दीहल गइल रहे। टेम्परोरी। ना कवनो छत, ना कवनो छान्ही। एकदम फेंड़न्हि का नीचे आ देबीतर के खुला बाजार में लागत रहे तब ई स्कूल। फेर धीरे-धीरे गाँव के लोग, अपना लइकन्हि के जाड़ा-पाला आ घाम-बरसात में बचावे के विचार से, चन्दा क के, एक आधा गो पाला-पलानी लगवा देले रहे आ अब कुछु क्लास बहरी आ कुछु क्लास भितरी लागे लागल रहले स। ठीक एही घरी उपधिया जी हरदी के प्राइमरी स्कूल से ट्रान्सफर होके एहिजा आइल रहले।''

अभी ऊ दुइए-चारि दिन अपना क्लास में पढ़वले होइहें कि एकदिन उनुका अइसन बुझााइल कि जइसे टाट के पीछे से कवनो एगो लइका के आवाज आ रहल बा, जवन क्लास में पढ़ावल जाये वाला, भा रटावल जाये वाला बातन के हू-ब-हू दोहरा रहल बा। पहिले त ऊ एकरा के अपना मन के भ्रम समझले आ आवाज के प्रतिध्वनि। फेर सोचले कि आखिर पाला-पलानी के क्लास में भला प्रतिध्वनि कहाँ से आई? एही तरी एकदिन ऊ अपना क्लास में पढ़ावत रहले आ लइकनि के गिनती रटवावत रहले- एक एकाई... दू दकाई...। त उनुका फेर अइसने आभास भइल। अब टाट के बनल देवलि में कवनो जंगला त रहे ना कि ऊ झट से बहरी झाँकि के देखि लेसु। एह पर उनुका मन में एगो विचार आइल। ऊ एगो लइका के इशारा से बोला से अपना जगह पर खड़ा कइले आ ओकरा से रटवावे वाला काम चालू राखे के कहि के, बहरी निकलले आ घूमि के पिछुवारी पहुँचि गइले।

सन्न रहि गइले उहाँ के दृश्य देखि के ऊ त। टाट से लगभग मुँह सटवले, भीतर देखे के असफल चेष्टा करत, बाकी एकदम ओनिय ध्यान लगवले, कई जगह से फाटल आ चीकट फराक पहिरले, डाँड़ा पर एगो टूटल-छितराइल खँचिया धइले, जवना में कुछु ताजा गोबर आ कुछु सूखल कंड़रा भरल रहे, एगो सात-आठ साल के लइकी, दीन-दुनिया से बेखबर घाम-बतास आ इहाँ तक कि अपना डाँड़ पर धइल ओह भारी खँचिया के बोझ तक के परवाह ना करत, एकदम ऊहे दोहरावे में मगन बीया जवन भीतर रटवावल जा रहल बा। धीरे-धीरे, एकदम कछुवा के चाल चलत, उपधिया जी आगे बढ़ले, बिना कुछफ बोलले ओकरा पीछे जा के खड़ा भइले आ टाट पर धइल ओकर हाथ पकड़ि लिहले।

एकाएक जइसे केहू ओकरा पर हमला क देले होखे, अइसे ऊ लइकी चिहुकि गइलि। ओकरा डाँड़ पर के खँचिया उलटि गइल आ ऊ उपधिया जी का ओरि देखि के, एकदम सेन्हि पर धरइला चोर लेखा, आपन हाथ छोड़ावे के चेष्टा करे लागलि आ ना छुटला पर जोर-जोर से रोवे लागलि। ओकरा रोवे के आवाज एतना जोर के रहे कि भीतर के क्लास के पढ़ाई त बन्दे हो गइल, आसोपास के क्लास में एक-आध जाना मास्टर लोग आ कुछु लइका निकलि अइले कि जाने का हो गइल।

उपधिया जी के त जइसे कठेया मारि दिहलसि। ऊ ओकर हाथ छोड़ि के ओकरा के चुप करावे लगले बाकी ऊ चुप होखे के नाँवे ना लेत रहे। ओकरा जइसे बुझात रहे कि अब ई लोग हमरा के मारी। जइसे-तइसे सब लोग मिलि के ओकरा के चुप करावल आ उपधिया जी ओकरा हाथ धइले, लेले-देले, अपना कलास में चलि अइले।' फेर जइसे ओकरा के समझावत कहले कि- ''देख बेटी, हम तोहरा के मारबि ना, ना केहू तोहरा के कुछु कही। चुप रहबू त हमनी का तोहरा के मिठाइयो खियाइब जा, बस तू आपन नाँव बतावऽ त।''

जइसे जबह होखे से पहिले कवनो बकरा कसाई के देखत होखे ओइसे चारू ओरि देखि के, बाकी शायद मिठाई के बात सुनि के, बहुत मुश्किल से ओकरा मुँह से निकलल- ''फुलकेसिया''। आवाज बाकी अबहिंयों रोंवसे रहे।

''वाह! बहुत बढ़िया नाँव बा ई त, फूल जइसन लइकी के नाम त फुलकेसिया होखहीं के चाही।'' उपधिया जी कहले, फेरू पुछले-

''आ बाबूजी के नाँव?''

''बाबू नइखन।''

''बाबू नइखन माने?''

"ऊ मू गइले।"

"अरे राम-राम। ई त बहुत बाउर भइल। एही उमिर में तोहरा मउअतियो से सामना हो गइल बा? कइसे मुअले?"

"नइखीं जानत। हम बहुत छोट रहनी।"

"आ माई?"

"माई बाड़ी।"

"त माई के नाँव बतावऽ?"

सुनि के ओकरा हँसी बरि गइल होखे जइसे, ओइसे कहलस- धत् माइयो के नाँव होला कहीं? ओकरा के त बस माई कहल जाला, अउर का।

ओकर जबाब सुनि के उपधियो जी का हँसी बरि गइल। ओहिजा खड़ा अउरियो मास्टर आ लइका लोग हँसि परल। फेर उपधिया जी पुछले कहाँ रहेलू?

"मूड़ाडीह में। मामा किहाँ।"

"मामा किहाँ काहे?"

"अरे वाह! बाबू मू गइले त अउर कहाँ रहबि? जहाँ माई रही उहँवें न।"

उपधिया जी बूझि गइले कि बाप का मुअते, एकरा मतरारी के, ओकरा ससुरारि वाला लोग, मनहूस कहि के, भा अपना बेटा के खाये-चबाये वाला कहि के, बेटी का संगे घर से निकालि देले होई आ बेचारी का अपना भाई किहाँ शरण लेबे के परल होई। ऊ अब एह लइकी से एह बारे में अउर कुछु पूछल उचित ना समझले आ सोचले कि बाद में एकरा माई से मिलि के, एकरा बारे में जानकारी लीहल जाई। ऊ आगे पुछले-स्कूल के पिछुआरी का करत रहलू हा?

"गोबर आ कंड़रा बीनत रहनी हाँ। देखलऽ हा ना खंइची में भरल रहल हा। तोहरा चलते ऊहो गिरि गइल हा। अब माई हमरा के मारी त के बँचाई?"

"हम बँचाइबि। हम तहरा संगे तहरा घरे चलबि, भा तहरा माई के एहिजे बोला लेबि। अच्छा ई बतावऽ, जब तू गोबर-कंड़रा बीने आइल रहलू हा त स्कूल के टाट से लागल का करत रहलू हा?"

"[illegible] रह[illegible]ी हाँ।"

''का?''

''उहे जवन तू लइकनि के पढ़ावत रहलऽ हा। हमरा पढ़ल बड़ा नीमन लागेला। रोज एही तरे पिछुवारी खड़ा होके पढ़ेनी।''

''अच्छा! त अभी तक का का पढ़ले बाड़ू?''

''कुल्हि चीज। गिनती, पहाड़ा, क,ख,ग,घ, जवन तहन लोग लइकनि के रटावेलऽ, हमरा कुल्हि इयादि बा।''

''अरे वाह। त तनी हमनियो के सुनाव त।''

आ ई देखि के, उपधिया जी का संगहीं कुल्हि मास्टर आ लइका लोगन का ताज्जुब भइल कि ऊ लइकी एके साँस में सइ तक गिनती, बीस तक पहाड़ा, पूरा ककहरा, सब सुना गइलि। उपधिया जी का एकदम से, एकलव्य के इयादि आ गइल, जे खाली द्रोण के मूर्ति का आगा खड़ा होके, सँउसे धनुर्विद्या के ज्ञाता हो गइल, आ आजु उनुका आगा ई अबोध लइकी खड़ा बिआ, जे स्कूल का पिछुआरी खड़ा होके आपन प्रारंभिक पढ़ाई पूरा क लेले बीया। आ संजोग अइसन कि दूनो के पीछे कारण एके लउकत बा- गरीबी, अभाव। वाह रे प्रतिभा, तू कवनो स्थिति में केहू के मुँहताज ना हऊ। तबो जाने काहे राम आ कृष्ण के अपवाद रूप में छोड़ि दीहल जाउ, त कवनो संपन्न घर में अइसन प्रतिभा दोसर उभरि के सामने ना आइल। शायद एही से एह लोगन के अवतार मानल जाला आ एकलव्य के अभागा।

खैर, उपधिया जी अपना भावुकता से बाहर निकलले आगे पुछले-

''कुछु लिखहूँ आवेला?''

''लीखे कइसे आई। हम कवनो इसकूल में पढ़ीं ले।''

''त स्कूल में पढ़े काहे ना आवऽ?''

''कइसे आई? हमरा माई के पासे कवनो पइसा बा, जे हमार नाँव इसकूल में लिखवाई। फेर कापी-किताब कहाँ से आई?''

''अच्छा, अगर हम तहार नाँव, बिना पइसे के स्कूल में लिख दीहीं, आ कापियो-किताब कीन दीहीं, त तू स्कूल में पढ़बू?''

''हं! तब काहे ना पढ़बि? हमरा पढ़े के बड़ा मन करेला। बाकी...''

"बाकी का?"

"बाकी माई से एक बेरि पूछे के परी। ऊ कही तबे नू।"

"त ठीक बा, जा अपना माई के बोला ले आवऽ। हम आजुए तोहरा नाँ स्कूल में लीखि देइबि।"

"आ हमार मिठाई? तू त हमरा के मिठाई देवे के कहले रहलऽ हा, त का बिना मिठाइए खइले जाई?"

ओकर बात सुनि के एक बेरि सभे हँसि दिहल। पहिले ओकरा भोलापन फेर ओकर मासूमियत आ अब तनी ढिठाई पर सबके मन गदगद हो गइल रहे। उपधियो जी का अपना भूल के एहसास भइल। मिठाई खिआवे के कहिए के त ऊ एकरा से अतना बात कइ पवले हा। ऊ फट दे पाकिट से पइसा निकलि के एगो लइका के मिठाई ले आबे खातिर दउरवलें।

अभी एने ई कुल्हि बातचीत होते रहे, तले एही बीचे ओह लइकी के मतारी एकदम से हाँफत-काँपत आके स्कूल के ओह कमरा के सामने खड़ा हो गइलि आ लागलि चिचिआये- "फुलकेसिया..ऽ...ऽ। फुलकेसिया...ऽ..ऽ।। का भइल रे, काहे खातिर ई लोग तोरा के धइले बा? का कइले हा? शनीचरी कहति रहलि हा कि इसकूल के मास्टर लोग तोरा के पकड़ि लेले बा।..." फेरू ऊ एक जाना मास्टर के आगा हाथ जोरि के गिड़गिड़ाय लागलि- "देखीं सभे, अगर हमरा लइकी से कवनो गलती हो गइल होखे त ओकरा के माफ क दीं सभे। हम रउआ सभ के हाथ जोरऽतानी, पाँव परऽतानी। ऊ कवनो चोर चुहारिनि ना ह। तबो अगर गलती से इसकूल के कवनो सामान उठा लेले होखी, त हम ओकरा से वापिस करवा देबि। अगर कुछु नोकसान क देले होखी त हम ओकर हरजाना भरि देबि, बाकी हमरा लइकी के पुलिस-उलिस में मति देबि सभे। हम ओकरा ओरि से रउआ सभ से माफी माँगत बानी। ऊ नादान बिया, गलती क सकेले, बाकी रउआ सभ त समझदार बानी, पढ़ल-लिखल बानीं, मास्टर बानीं, ओकरा के माफ क दीं सभे...।" आ एही तरे बोलत-बोलत, हाथ जोड़लहीं ऊ रोव लगली... आ अपने में बुदबुदाये लगली, करमजरी के जाने कहाँ से पढ़े-लिखे के सक्ख पैदा हो गइल। जब देखऽ तब इसकुलवे से सटल रहे ले, जइसे एहिजे कुल्हि गोबर-कंड़रा परल होखे। कवनो ना कवनो बहाना क के एनिए आ जाले, जइसे एही में एकर परान बसत होखे। सुतलो में जाने कादो-कादो रटत रहेले।... अब हम कहाँ पढ़ाई-लिखाई एकरा के। कवन कारू के खजाना गड़ल बा हमरा लगे। जनमते बाप के खा गइलि। एकरे चलते हम घर से

बेघर हो गइनीं आ अब ना जाने कवना घाट के लगाई? बाप-भाई ना रहिते त माथो तोपे के जगह ना मिलित।... ऊ त मू गइलें आ एकरा के छोड़ि गइले हमरा के भोगावे खातिर। एकरे चलते हम दोसिर घर बसावे के तेयार ना भइनीं कि ई टूवर हो जाई आ इहे हमार कुल्हि करम करे के तेयार रहऽतिया।... आ एही तरी अउरी जाने का का ऊ बड़बड़ात रहली।...।

अतना देर से उपधिया जी ओह औरत के ध्यान से देखत रहले। उमिरि कवनो बेसी त ना रहे। ईहे करीब पचीस-तीस के बीचे रहल होई बाकी समय के चाबुक जइसे ओकरा के पचास से ऊपर पहुँचा देले रहे। एक एक अंग से गरीबी के मार झलकत रहे। फाटल चीटल लूगा, तितर-बितर माथ के बार जवन बतावत रहे कि बरिसन से एह माथ का तेलो-तासन से भेंट ना भइल होई, बाकी तबो ओकरा के देखला से ई बुझात रहे कि लइकाई में ई खूब सुंदर रहल होइहें। उपधिया जी आगे बढ़ि के ओकरा के शांत करे के चेष्टा करे लगले।

''देखीं, रउआ गलत समझत बानीं। राउर लइकी अइसन कुछुओ नइखे कइले कि हमनी के बान्हि के रखले बानीं जा, भा पुलिस में देबे विचार करऽतानी जा। अरे राउर लइकी त हीरा के टुकड़ा बीया। एकदम कोइला के खदान से निकलल, बाकी बिना तराशल हीरा। अगर एकरा के तराशि दीहल जाउ त ई अनमोल हो सकेले। एकदम कोहिनूर। देखीं रउआ हमार बात खूब शांति से सुने आ समझे के चेष्टा करीं। राउर बेटी बहुत प्रतिभावान बिया। एकरा में पढ़े के बहुत ललक बा। एको दिन स्कूल नइखे आइलि तबो स्कूल में पढ़े वाला कवनो लइका से बहुत तेज बिया। इयादि त एकरा कुल्हि बा। बस अक्षर ज्ञान भइल जरूरी बा। आ ई त स्कूले में होई। एह से हम चाहत बानी कि अगर जो रउआ इजाजत दीहीं त एकर नाँव स्कूल में लिखि लिहल जाउ। एकरा खातिर रउआ कवनो पइसा-वइसा ना देबे के परी। किताबो-कापी के व्यवस्था स्कूले का ओरि से हो जाई, भा हम अपना ओरि से क देबि। बाकी हमार त ईहे इच्छा हो रहल बा कि अगर एकरा पढ़े के एतना सबख बा त पढ़े दीं। हई गोबर-गोंइठा में मति फंसाई। हो सकेला एकरा तकदीर में, रउआ से अलग, कुछु अउर बने के लिखल होखे। आगे राउर मरजी।''

फुलकेसिया के माई ओही तरी डबडबाइल आँखि आ भराईल आवाज में बोललि ''ई रउआ का कहत बानी पंडी जी, हमरा त कुछु समझे में नइखे आवत। अरे हम, एगो छोट जाति कहाये वाला, मुसहर के बेटी जेकरा खानदान में नइहरे ना ससुरे कवनो लइको स्कूल के मुँह ना देखल, ओकर अब बेटी पढ़ी? हम जे बिआह के दुइये बरिस बाद मुसमात हो गइनीं, आ एक साल के आल्हर बेटी गोद में लेले ई कहि के घर से निकालि दिहल गइनी कि ''भतार के त खाइये

गइले, अब का इहँवा रह के हमनी के चबइबे? फेर तें कवन हमनी के वंश चलावे वाला बिआइलि बाड़े कि तोरा के इहाँ राखि के सेंई जा? अब ओकर ऊहे अभागी बेटी स्कूल में पढ़ी। आगे बढ़ी ई कुल्हि कइसे होई पंडी जी? हम कइसे क पाइबि?''

''देखीं रउआ एह में कुछु नइखे रे के। जवन कुछु करे के होई तवन हम करबि। रउआ खाली इजाजति दीहीं। प्राइमरी तक के पढ़ाई के मुफ्त व्यवस्था हमरा ओरि से रहल। फेर अगर पढ़े में तेज भइलि त आगे सरकार से ओजिफा बगैरह मिलि सकेला। अगर नहिंयो मिली, आ आगे पढ़े के एकर इच्छा होई त हम चाहे कतहीं रहबि, एकरा खातिर व्यवस्था करबि। हमरा दू गो बेटी बाड़ी स। आजु से सोचबि जे तीनि गो हो गइली स। बाकिर हमार विनती बा कि एह हीरा के तराशे में रउआ बाधा मति बनीं। पढ़े-लिखे दीं एकरा के। हमरा बहुत संभावना लउकत बा एकरा में।''

एही बीचे ऊ लइका मिठाई लेके आ गइल रहे। सबसे पहिले त मिठाई फुलकेसिया के दिआइल। फेर ओकरा मतारियो से मुँह मीठ करे के कहल गइल, बाकी ऊ ओहिजा सबके सामने खाये के राजी ना भइली, कइसो हाथ में लेके मुट्ठी बान्हि लिहली। उपधिया जी के पारखी नजर ताड़ि गइली। फुलकेसिया के नाँव ओही दिने स्कूल में लिखा गइल। ऊ पढ़ल शुरू क दिहलसि। उपधिया जी ओकरा खातिर साँझिओ खा एक-आध घंटा बेसी समय देवे लगले। हीरा त हीरा रहे, देरिए से सही, छेनी के धार परल, तराशल जाए लागल, निखरे लागल आ पहिले साले, एके बेरि, तिसरा क्लास के इम्तहान दिहलसि, पास हो गइलि।

अइसन ना रहे कि ओकरा पढ़ाई में अउरी बवनो तरह के बाधा ना आइल। नाना-नानी त ना, बाकी मामा-मामी के बहुत बाउर लागल ई बात। ओकर मामी त, जेकर बेटा-बेटी मंगरूआ आ शनीचरी ना पढ़ल रहले स, आ जेकरा फुलकेसिया के चलते अपना घर के काम-धाम में बहुत मदति मिलत रहे, एह बात पर बहुत बवाल कइली। मतारी-बेटी के अपना घर से निकालि दिहली। बाकी बाप त बापे ह, बेटी खातिर अलगा एगो पलानी लगा दिहले आ फुलकेसिया के माई आपन अलग संसार बसा लिहली। गोबर-गोइठा पाथि के बेचल-खोंचल त ओकर पहिलहीं से चलत रहे, एकरा अलावहूं ऊ लोगन के खेतन में मजदूरी, आ एक-आध घरन में कुटिया-पिसिया के काम ध लिहलसि। यानी अब ऊ अपना बेटी के भागि सँवारे में जीवे-जाँगरे जुटि गइलि।

फुलकेसिया चउथो क्लास में पास भइलि। अपना क्लास में फस्ट आइलि। उपधिया जी के मेहनति ओकर लगन रंग ले आइल। पाँचवा क्लास यानी, प्राइमरी के फाइनल परीक्षा भइल आ

फुलकेसिया जिला में टाप कइलसि। आगे पढ़े खातिर ओकरा के सरकार से ओजिफा मिले के घोषणा भइल आ बड़ा उत्साह से उपधिया जी ओकर नाँव रूदरपुर मिडिल स्कूल में कक्षा छव में लिखवा दिहले। साँझि खा के ओकर ट्यूशन अबहिंयो जारी रखले रहले, कि तले एही बीचे, एह स्कूल से उनुका ट्रान्सफर के आर्डर आ गइल। ई बात जब फुलकेसिया के मालूम भइल त ऊ भोकरि-भोकरि के रोवलि। गोड़ पकड़ि के ऊ उपधिया जी से पूछलसि कि "पंडी जी, अब हमरा के, के पढ़ाई? रउआ चलि जाइबि त हम फेर से अनाथ हो जाइबि। अब हमार का होई?"

बड़ा मुश्किल से उपधिया जी तब ओकरा के चुप करा पवले रहले, आ कहले रहले कि देख बेटी, हमार त सरकारी नोकरी ह। सरकारी आर्डर हमरा मानहीं के परी। एकरा खिलाफ केहू ना लड़ सके। आ फेर अब त तू समझदार हो गइल बाड़ू, पढ़े में तेज बाड़ू, खूब मन लगा के पढ़िहऽ। मिडिल तक त तहरा कवनो असुविधा ना होई। मिडिल पास क के हमरा के खबर करिहऽ, हम कतहीं रहब, तोहरा आगे के पढ़ाई के व्यवस्था जरूर करबि। फिर ओकरा माई के हिदायत देत कि बेटी के पढ़ाई में तनिको कोताही मति बरतिहऽ, जहाँ तक ओकरा पढ़े के मन होई पढ़इहऽ, आदिमी बनइहऽ, हमार सहयोग तहन लोग के हमेशा मिलत रही, आपना ट्रान्सफर के कागज उठवले, आँखि पोंछत चलि दिहले।

× × ×

"पंडी जी। ...पंडी जी...!! ..." सामने खड़ा फुलकेसिया के जोर जोर से चिचियाये के आवाज कान में पड़ल, त उपधिया जी जइसे नीनि से जगले।

"...आँय... हँ...हँ...बोलऽ।"

"कहाँ हेरा गइनी?"

"कहीं ना हो। तनी पुरान बात इयादि पारे लागल रहनी हां। लइकाई के फुलकेसिया आ आजु के फुलकेश्वरी देवी। अब हम कइसे चिन्हितीं तोहरा के? तब के देखल आ अब के देखल का एके लेखा बा?"

"ई सब ज्ञान करवले रहितीं ना ई फुलकेसिया बदलित। साइत अपना माइए लेखा गोबर पाथत-पाथत मरि जाइति।"

"का तोहार माइयो?"

"हाँ, पंडी जी, माइयो एह दुनिया में ना रहलि। जवन दुनिया ओकरा के जिनिगी भरि सतवलसि ओकरा के जइसे के तइसे छोड़ि के चलि गइलि।"

"लेकिन ई कइसे हो। अतना जल्दी?"

अब पता ना एकरा के जल्दी कहीं कि देरी। बाकी रउआ गइला का बाद अपना जिनिगी के कुल्हि निराशा आ हताशा का बादो, जइसे ओकरा जिये के एगो मकसद मिलि गइल रहे। ओकरा अन्हार जिनिगी में रउआ जइसे एगो चिराग दे गइल रहनी। ऊ दिन-राति ओकरा के बरले रहे में जी जान से लागलि रहे। एगो मिशन लेखा। हमार मिडिल के रिजल्ट आइल, हम फेर टाप कइले रहनी। उत्साह बढ़ि गइल रहे हमरा दूनो मतारी बेटी के। आगे के पढ़ाई के प्लान करे खातिर हमनी का रउआ से सलाह करे रउरा गाँवे गइनीं जा, बाकी ओहिजा पता चलल कि रउआ त कवनो ट्रेनिंग खातिर लखनऊ गइल बानीं। साइत हेडमास्टर होखे वाला बानीं। अब हमनी के कूबति कहाँ रहे कि रउआ के लखनऊ खोजे जइतीं जा। मन मारि के लवटि अइनी जा। आगे पढ़े के हमार बहुत मन रहे। माइयो के इहे इच्छा रहे। रउआ चेता जे गइल रहनीं। बाकी शहर में राखि के पढ़ावे के बूता त माई में रहे ना, एह से हमार आ आपन सपना चकनाचूर होत देखि माई भीरत से टूटि गइलि। गँवे-गँवे ई घाव ओकरा के भीतरे-भीतर साले लागल आ साइत एही के चलते एक दिन ओकरा करेजा में अइसन हूक ऊठल कि ऊ दुनिया से उठि गइलि।

हम तिसरा बेरि अनाथ भइल रहनी ओह दिन। पहिले बाप के मुअला पर। नाना-नानी सहारा ना रहिते त हमहूँ बुता गइल रहितीं। मामा-मामी त पहिलहीं हमरा से जरत रहले। अब त अउरू राख हो गइल रहे लोग। खाली बापे के ना, मतारियो के खाये-चबाय वाला कहे लागल रहे लागे। हमार सूरति तक ना देखल चाहत रहे लोग अब त, बाकी गाँव-समाज के समझवला का चलते, भा दबाव में आके बस एतना एहसान कइल लोग कि हमरा ओह काँच उमिरि में, एगो दोआह लइका से बिआह क दिहल लोग।

हम नइहर से ससुरा आ गइनी। भागि से समझौता भले क लेले रहनी, बाकी पढ़ाई छुटला के टीस त लोर बनि के बेर-बागर बहिये जात रहे। तले एही बीचे हम एगो संकल्प ले लिहनी। हमरा मरद के पहिलकी मेहरारू से दू गो लइका-लइकी रहले स। हम मन में तय कइनी कि इन्हनी के पढ़ाइबि। अपने पढ़ि के ना त इन्हनी के पढ़ा के त हम अपना मन में कुलबुलात पढ़ाई के कीड़न्हि के कुछु शांत कइए सकेनी। हम उन्हनी के पढ़ावल शुरू क दिहनी। आपन कुल्हि कापी-किताब हम अपना संगही लेके गइल रहनी। ओह से हमरा थोरे बल मिलल। फेर एह दल

में हम अपना छोट ननदि आ देवरो के शामिल क दिहनी। सासु पहिले कुछु विरोध कइली बाकी ससुर के ई कहला पर कि जाये दे कवन बाउर काम करऽ तिया पढ़ल-लिखल बहुरिया बिया त कुछु नीमने नू करऽतिया, केहू के बिगारत त नइखे नूं- सासु शांत हो गइली। हमार हौसला बढ़ल। खाली समय काटे के एगो बहाना मिलि गइल रहे हमरा, काहे कि हमार मरद कवनो तहसील के अमीन के अरदली रहले। काम पर जासु त एक-एक हफ्ता भा पनरहो दिन पर लवटसु। एही बीचे हम अपना जाति के कुछु अउरी लइका-लइकिन के एह पढ़ाई-अभियान में शामिल कइनीं। केहू के बाप-मतारी एकर खुलि के विरोध ना कइल। हमार घरऊ पाठशाला चलि निकलल। मन लागे लगल। अइसन बुझाइल कि हमार पढ़ल-लिखल कुछु सुकुलान भइल। तले एही बीचे हमरा एगो अउरी बात के पता चलल। हमार मरद एक बेरि बात-बात में बतवले कि सरकार एगो स्कीम बनवले बीया कि गाँव के बेपढ़ल-लिखल मेहरारू के, जे इन्हनी के शिक्षित क सके, आँगनबाड़ी नाँव के स्कूल के लाइसेन्स दीहि, जवना खातिर कवनो स्कूल के जरूरत ना होई, बलुक ई स्कूल ओकरा आँगने में चली। एही से एकर नाँव आँगन-बाड़ी स्कूल धइल बा। हम उनुका से कहि के एकर लाइसेन्स ले लिहनी। आस-पास के कइगो गाँवन में अइसन स्कूल खुलले से अच्छा परिणाम भइल। हमार स्कूल त खूब नाँव कमइलसि। हमरा स्कूल के लइकी मेहरारू बढ़िया रिजल्ट दिहली स। हम के आमदनियो बढ़ल आ हमरा पढ़ाई-लिखाई के कुछु मोलो भइल।

एही कुल्हि सिलसिला में हमरा जिला शिक्षा बोर्ड आ शिक्षा परिषद के कई बेरि चक्करो लगावे के परल। हम कुछु विशेष चर्चा में आवे लगनी, काहे कि मीटिंग बगैरह में जमि के बोलीं आ बहस करीं। लोगन के नजर में चढ़े लगनी। गाँव के ग्राम पंचायत चुनाव में खड़ा होखे के प्रस्ताव हमरा लगे आइल काहे से कि हमरा गाँव के सीट महिला सीट घोषित हो गइल रहे, ओहू में सेड्यूल कास्ट के महिला खातिर। हमरा ना चहलो पर एकरा खातिर तेयार होखे के परल। हम चुनाव में खड़ा भइनी आ जीति गइनी। तब साइत सबसे कम उमिर के हमहीं एगो महिला ग्राम-प्रधान चुनाइल रहनीं। हमार हौसला बुलंदी पर त रहे बाकी मन में पढ़ाई के कीड़ा अबहीं शांत ना भइल रहे। हम मनेमन एगो अउर फैसला क लिहनी कि आगे हाई स्कूल के परीक्षा हम प्राइवेट परीक्षार्थी का रूप में देबि। तेयारी शुरू क दिहनी। शहर-आइल-जाइल त लागले रहे। बोर्ड से सिलेबस ले आइनी आ कुछु किताब-कॉपी जुटा के आपनो पढ़ाई शुरू क दिहनी। फार्म भरनी, परीक्षा दिहनी आ पास हो गइनी। बाकी एकरा बाद के पढ़ाई चाहिये के पूरा ना क पवनी। हमरा कमजोर कंधा पर धीरे-धीरे बहुत जिमवारी लदा गइल रहनी स। आँगनबाड़ी स्कूल समिति के हम सेक्रेटरी चुना गइल रहनी।

जिला स्तर पर हमरा काम के प्रशंसा होत गइल। एही बीचे जिला में पहिलका दलित महिला संघ बनल त ओकर कार्यकारी अध्यक्ष के भार हमरे कान्हा पर आ गइल। जब हम ओकरो के बख़ूबी अंजाम दिहनीं त सरकार के नजर में अइसन चढ़नी कि राज्य स्तर पर महिला मानवाधिकार आयोग जब गठित भइल त दलित महिला वर्ग से हमरे के ओकर एगो सदस्य मनोनीत क दिहलसि। आ अब हमार जिमवारी अतना बढ़ि गइल बा कि बस गाँव से बलिया आ बलिया से लखनऊ दउरत रहे में कुल्हि समय बीति रहल बा। हजारो तरह के समस्या बा लोगन के, आ जब केहू हमरा सामने आ जाला त हमरा से ना कइल ना बने। सरकार के प्रतिनिधि भइला का बादो कई बेरि त सरकारे के खिलाफ बोले के पड़ेला, लड़े के पड़ेला। बस अफसोस ईहे बा कि हमार आगे पढ़े के सपना अपने रहि गइल। मैट्रिक त कइसो-कइसो क लिहनीं, बाकी एकरा बाद त अतना बवाल में फँसि गइनीं कि फेर चाहियो के आगे के पढ़ाई संभव ना हो सकल। लेकिन खैर, चलीं जेतना भइल ऊहो रउए कृपा से भइल। ना त ओह फुलकेसिया के आजु फुलकेश्वरी देवी कहि के, के पुकारित।''

''आ तोहार आँगनबाड़ी स्कूल, ओकर का भइल? का ओकरा के बंद क दिहलू ?''

''अरे ना पंडी जी, ओकरा के कइसे बंद क देबि। ओकेरे चलते त हमरा अतना आत्मबल मिलल। ओकरा के आजु काल्हु हमार सासु चलावत बाड़ी। हम अपना सासुओ के अब अतना पढ़ा देले बानीं कि ऊ दोसरा के पढ़ा सकेली।''

''बहुत सुंदर! ई तू बहुत नीमन काम कइले बाड़ू। तोहार शिक्षित भइल, दरअसल अब जा के सार्थक भइल। शिक्षा के मंदिर के दिया हमेशा जरत रहे के चाहीं।''

''जरऽता पंडी जी, जरऽता। रउआ असिरबाद से खूब जोर शोर से जरऽता। लेकिन हई लीं, हम त खाली आपने गरूड़-पुराण रउआ के सुनावत रहि गइनी, रउआ बारे में त कुछु पुछबे ना कइनीं कि रउआ एहिजा का करत बानी। का रउओ अपनां पेंशन खातिर, अपना जिंदा रहला के प्रमाण पत्र, पेंशन आफिस में जमा करावे के जरूरत पड़ि गइल रहल हा ?''

''अरे बेटी; जिंदा रहे के प्रमाण पत्र त तब नूँ जमा करावे के जरूरत पड़ी, जब पेंशन मिलल शुरू होई। रिटायर भइला करीब पाँच साल पूरा होखे चलल, बाकी हमार त आजु ले पेंशने शुरू ना भइल।''

''का कहऽतानी पंडी जी? राउर अभी ले पेंशने ना शुरू भइल? लेकिन ऊ काहे, का कहता लोग?''

"अरे बचवा, कुछु कहित लोग ठीक से तब नूँ बुझाइत। ऊ लोग त बस टरकावत चलि जा रहल बा। आजु आवऽ, काल्हु आवऽ, परसों आवऽ। अभी तोहार फाइले नइखे आइल। त आजु साहेब नइखन। अबहीं पहिलहीं के फाइल नइखे सलटल। अब हमरा त ना कवनो तिकड़म आवे, ना हम कवनो छल-कपट जानींला। बस जइसे दउरावत बा लोग ओइसे दउरि रहल बानी।"

"हम समझि गइनीं पंडी जी। सोझिया के मुँह कुकुर चाटे। बाकी रउआ घबराई मति। राउर काम सब होके रही। आ भगवान चहिहें त आजुए होई। दरअसल गुरु जी, अब रउआ सभ वाला जमाना त रहि नइखे गइल। सोझिया आ सिधवा के जमाना। आजु के समाज जेतना भ्रष्ट भइल बा, सरकारियो तंत्र ओतेन भ्रष्ट भइल बा, बल्कि ओहूसे बेसी। नेता से कर्मचारी तक सब एके चट्टा-बट्टा के लोग हो गइल बा। बाकी तबो सरकार आजुकाल्ह जनता का दबावे में आके सही, एह तंत्र परे कुछु अंकुश लगावे खातिर कई गो आयोग आ समिति गठित कइले बिया, जहाँ जा के जनता आपन गोहार लगा सकेले। अब जरूरत बा लोगन के जागरूक भइला के, अपना अधिकार आ कर्तव्य के जानकारी रखला के आ ओकरा माध्यम से आपन लड़ाई लड़ला के। अब रउआ लेखा सोझिया के गुजारा भइल त सचहूँ कठिन बा। बाकी चलीं भगवान जवन करेले तवन ठीके करेले। संयोगे सहीं, बाकी तबो राउर मुलाकात आजु निमना आदिमी से हो गइल बा। हमार बहुत इच्छा रहल हा कि एक बेरि रउआ से भेंट हो जाइत, त हम अपना सफलता खातिर राउर आसिरबाद ले लिहितीं आ आजु ऊ संयोग जुटि गइल। त चलीं हमार मनसा पूरल त अब रउओ पूरी। लात के देवता बात ना बूझस। रउआ पेंशन अधिकारी मिस्टर खन्नी के त रग-रग से हम वाकिफ बानी। आजु देखीं कइसे उनुका के बात बुझवावत बानीं। आई चलीं, हमरा संगे।"

कहि के ऊ उपधिया जी के बाँहि धइली आ लेले-देले पेंशन आफिस में घुसि गइली।

पेंशन आफिस में हड़कंप मचि गइल। उपधिया जी आ फुलकेश्वरी देवी के संगे। भला इनिकर उनुका से का संबंध! जे जे बाबू आ कलर्क लोग आजु ले उपधिया जी के तंग कइले रहे सबकर नाड़ी ढील हो गइल। कुछु लोग फुलकेश्वरी देवी के देखि के, उठि के नमस्ते कइल चाहल, बाकी ऊ केहू का ओरि ध्यान ना दिहली। बस अपना हाथ के फाइल, अपना साथ वाला मेहरारू के दिहली आ कहली कि हई धरऽ, अब आजु कवनो दोसर काम ना होई। आजु बस गुरु जी के काम होई। आ ई कहत-कहत सबका संगहीं मिस्टर खन्नी के केबिन में घुसि गइली।

मिस्टर खन्नी त अवाक। बइठल-बइठल एक-आध आदिमी से गपियावत रहले, कि इनिका के देखते कुर्सी छोड़ि के हड़बड़इले हाथ जोरि के खड़ा हो गइले सामने बइठल लोगन के

बाहर जाए के इशारा कइले आ मुस्कुराए के असफल चेष्टा करत कहले- "अरे मैडम आप? नमस्ते। आई बइठीं। कहीं, अचानक कइसे आइल भइल हा?"

"'ऊ त हम बताइबे करब, बाकी बिना कवनो भूमिका के। बस सीधा-सीधा ई बताईं कि उपधिया मास्टर साहेब के पेंशन के फाइल आजु ले रउआ आफिस में काहे अँटकल बा। का पाँचो साल कम पड़ि जाता एगो फाइल आगे सरकावे में आ ओकरा पर कारवाई करे में? रउआ सभ के नीयत के पता त हमरा बड़ले बा, बाकी इहाँ के हमार गुरु हईं, प्रारंभिक गुरु। बताईं इहाँ के फाइल सलटावे खातिर रउआ सभ का कतना घूस चाहीं? ऊ हम देबि आ अबहीं देबि।"

"अरे, अरे ई का कहत बानी। के घूस माँगल हा इहाँ से। हम अबहीं पूछताछ करऽतानी। हमरा त एह बारे में कवनो जानकारिए नइखे।"

"बाकिर हमरा जानकारी बा। रउओ बारे में, आ रउआ विभागो के बारे में। ई मति भुलाईं कि रउआ खिलाफ पहिलहूँ कई गो शिकायत आ चुकल बा हमरा आयोग में, आ हमरे चलते ऊ अबहीं तक दबल बा कहीं त कुल्हि खोलवा दीं।"

"अरे, अरे अइसन मति करीं मैडम। हम बरबाद हो जाइबि। हम अबहीं इहाँ के फाइल मँगवावत बानी। एक आध दिन में कुल्हि फारमल्टी पूरा क के अगिले हफ्ते चेक इहाँ के बैंक में भेजवा देबि।"

"अगिला हफ्ता आ एक-आध दिन त बहुत होला खन्नी जी। ईहे कहि-कहि के त रउआ सभ पाँचो घंटा समय ना दिआई। ई काम आजु आ अबहीं पूरा होई। दफ्तर बंद होखे से पहिले चेक पर साइन हो जाये के चाहीं, हम देखि के तब जाइबि। चेक काल्हु बैंक में जमा होखे के चाहीं। हँ, उपधिया जी अभी जिंदा बानी, एकर प्रमाण सामने बा आ गवाह बानी हम।"

मिस्टर खन्नी फेर कुछु कहल चहले, बाकी फुलकेश्वरी जी फेर उनुका के घुड़ुकि दिहली। फाइल ओही घरी मँबावल गइल। कुल्हि संबंधित कलर्क आ बाबू लोग मशीन लेखा एक के बाद एक दउरल शुरू कइल। घंटा भरि में कुल्हि फारमल्टी पूरा हो गइल। पेमेंट के आर्डर पास हो गइल आ चरि बजे से पहिले चेक बनि के साइन करे खातिर खन्नी जी का टेबुल पर आ गइल। एने खन्नी जी चेक पर साइन कइले, ओने फुलकेश्वरी देवी मुस्कियात कुर्सी से उठि के खड़ा हो गइली।

जात-जात बाकी खन्नी जी के एक बेरि फेर हिदायत दे गइली कि खन्नी जी, अब तनी अपना के सुधारि लीं। निरीह लोगन के सतावल छोड़ि दीं। बइठि के लोगन से गपिअवला आ नोटि

तहिअवला का संगे, कुछु कामो करीं, आ कुछु परसेंट त ईमानदारी बरतीं, ना त एक दिन रउआ संगे-संगे राउर परिवारो निरीह हो जाई। हम खाली रउआ लइकनि के मुँह देखि के अभी ले छोड़ि रहल बानी, बाकी पानी अगर कपार से ऊपर हो जाई त हमहूँ कुछु ना क पाइबि, ई ध्यान राखबि। कहि के ऊ फेर उपधिया जी के बाँहि धइली आ उनुका केबिन से बाहर आ गइली।

उपधिया जी अवाक रहले, गदगद रहले, बाहर निकलले त कहले कि तनी रूकु त बचिया, एक बेरि फेर तोरा के ठीक से देखि लीं।

"का भइल गुरु जी"

"हम देखल चाहत बानी कि का हम सचहूँ कवनो अइसन बिरवा, कवनो खेत में उपारि के रोपले रहलीं, जवन आजु एतना विराट रूप ले लेले बा कि सबका के छाँह दे रहल बा।"

"बस ई कुल्हि राउर कृपा ह गुरु जी। खाली हमरा के आसिरबाद दिहीं कि हम असहीं बेबस लोगन के सहायता करत रहीं। अरे एगो अउर बात त हम भुलाइए गइनी हां, आसिरवाद त रउआ एगो अउरी आदिमी के देवे के बा। ई त हम रउआ के बतइबे ना कइनीं हां कि रउआ एह बेटी के एगो नातियो बा। जवन अब हाई स्कूल में पढ़ि रहल बा। एकदिन घरे आई त ओकरो के आसिरवाद दे जाई।"

"जरूर देबि बाकी एगो शर्त्त पर।"

"शर्त्त आ राउर?"

"हँ।"

"त कहीं।"

"त चलऽ, जइसे लइकाई में तोहार मुँह मीठ करा के तोहरा के अक्षर ज्ञान करवले रहनी, आजु फेर हमरा हाथे आपन मुँह मीठ क ल। हम दोसरा बवनो तरह से तोहार प्रतिउपकार ना क सकीं।" कहत-कहत उपधिया जी भावुक हो गइले।

"प्रति उपकार के मोका त, रउआ हमरा के आजु दिहनीं हां, साँच पूछीं त। बहुत दिन से मन में ई मलाल रहल हा कि हम रउआ से दोबारा ना मिलि पवनी, राउर कवनो तरह के सेवा ना क पवनीं। आजु ऊ मोका दे के रउआ हमरा के धन्य क दिहनीं। एकरा के हमार उपकार ना, एक तरह से गुरुदक्षिणा समझीं, जवना के आजु ले ना चुकवला के अफसोसो हमरा मन में बहुत रहल हा। रहि गइल मुँह मीठ करे के बात, त ऊ त हम करबे करबि। आखिर बेटी हई राउर। बाप के मिठाई पर त हमेशा अधिकार रही बेटी के।"

# अभ्यास

1. गुरु दक्षिणा कहानी के सारांश अपना शब्दन में लिखीं।
2. गंगानाथ उपाध्याय के चरित्रिक विशेषता बताईं।
3. फुलकेसिया के श्रीमती फुलकेश्वरी देवी महतो बनावे में उपाध्याय जी के का योगदान रहे?
4. फुलकेसिया के संघर्ष गाथा संक्षेप में लिखीं।
5. अवकाश प्राप्ति के बाद उपधिया जी के पेंशन मिले में का अड़चन रहे?
6. फुलकेसिया उपधिया जी के पेंशन कइसे दिअववलस?
7. एह कहानी के शीर्षक 'गुरु दक्षिणा' काहे राखल गइल?
8. सरकारी कार्यालय में भ्रष्टाचार के पर्दाफाश एह कहानी में कइसे कइल गइल बा?
9. फुलकेसिया अपना ननिहाल में काहे रहत रहे?
10. फूलकेसिया के माई के संघर्ष गाथा संक्षेप में लिखीं।
11. फुलकेसिया गिनती, पहाड़ा आ ककहरा कइसे इयाद क लेले रहे?
12. उपधिया जी के पूरा नाम का रहे?
13. उपधिया जी के ट्रंसफर भइला से फुलकेसिया काहे रोवे लागल रहें?
14. फुलकेसिया तीन बेरि कब-कब अनाथ भईल?

## शब्द-संपदा

| | | |
|---|---|---|
| चिरउरी | - | आग्रह |
| सलटावल | - | निपटावल, का पूरा करावल। |
| सरकारी अमला | - | सरकारी कर्मचारी |
| साइत | - | शायद |
| कंड़रा | - | गाय भईंस के सुखाइल गोबर |
| चीकट | - | गंदा भइल |
| खंचिया | - | टोकरी |
| ताज्जुब | - | आश्चर्य |
| पिहुआरी | - | मकान के पिछला भाग |
| करमजरी | - | भाग्यहीन |
| मुसमात | - | विधवा |
| कोताही | - | कंजूसी, काँट-छाँट |

अध्याय-9

# सुधा वर्मा

ख्यातिलब्ध गीतकार आ चर्चित कथाकार उमाकांत वर्मा के पुत्री रूप में 2 मार्च 1953 में जनमल सुधा वर्मा भोजपुरी कथा सहित्य के एगो प्रमुख हस्ताक्षर बानी। राजनीतिशास्त्र में स्नातकोत्तर आ बी.एड. कइला के बाद आजीविका के रूप में बैंकिंग सेवा अपनवली। बैंक के व्यस्ततम जीवन में रहला के बादो कथा लेखन में वर्मा जी के लेखनी अबाध गति से चल रहल बा। इहाँ के दर्जनो कहानी भोजपुरी के विभिन्न पत्र पत्रिकन में प्रकाशित बाड़ी सन। इहाँ के कहानी आकाशवाणी केन्द्रो से प्रसारित भइल आ काफी प्रशंसा बटोरलस।

वर्मा जी के कहानियन में निम्न मध्य वर्गीय परिवार के त्रासदी आ भारतीय परंपरा के प्रति आस्था देखाई देला। नारी मन के मनोवैज्ञानिक चित्रण इहाँ के कहानियन में स्वाभाविक यथार्थ के दर्शन करा देता। कुल मिला के सुधा वर्मा जी सामाजिक जीवन के एगो प्रमुख कथा लेखिका के रूप में प्रसिद्ध बानी।

## विषय प्रवेश

एह संग्रह में संकलित कहानी 'देवाल' आज के भौतिकवादी युग में रिश्तन के टूटन आ पारिवारिक संत्रास से भरल कहानी बा। बाप अपना दूनो लइकन के पढ़ावे खातिर पुश्तैनी जायदाद त बेचवे कइलन आपन जांगरो गला देलन। बाकि पढ़ लिख के योग्य बनल दूनो बेटा अपना बाप महतारी के मोह छोड़ के अपना हिस्सा के जमीन बेच देलन आ अपना मेहरारू संगे शहर चल गइलन। एह परिवार के नौकर बुधना मालिक के सेवा में रह गइल। मालिक बेटन के पढ़ावे के बेरी कइल उतजोग आ पढ़ला के बाद उन्हनि के करनी देख के मानसिक रूप से त्रस्त बाड़न।

# देवाल

आज बारहवाँ दिन ह, जब उ खटिया पर पड़ल बाड़न। खटिया प पड़ल, खटिया के ओरचन नीयर उनकर जाँगरो ढील हो गइल बा। खटिया के ओरचन त कसलो जा सकेला, बाकि उनकर जाँगर ? अब त उठहूँ के ताकत नइखे रह गइल। ना त ऊहे रहन जे एक दिन में 6 मील पैदल चलत रहन। हाथ में किताब के बंडल ले ले दूकाने दूकान घूमत ना थाकत रहन। तब के बाते कुछ आउर रहे। तब आम के बगइचा से आम आवत रहे आ आम दूध में घोर के खात रहन। बाकि धीरे-धीरे करके सब बिकाये लागल, छोटकु के डागडरी पढ़ावे में बगइचो बिकाये लागल तइयो अपना देह पर आसरा कइले रहन। ऊ आपन देह जोरा से बहुते काम कर लेत रहन। कहियो जब मन थाकि जाय त कहस कि उनकरा से अब काम ना होई। तब मलकिनी उनकरा के ढाढ़स बँधावस। मेहरारू के उ मलकिनियो कहत रहन। मलिकिनी कहस- "चले दीं जले चलता, अबहियें से काहे के बेटन... के मोहताज हो जाइल जाब।" आ फेर उ कइसहू काम करे लागस।

मलकिनी... मलकिनी का इयाद से उनका अँखियन से दू बूँद आँसू चू गइल। मलिकिनी उनकरा के अकेले मझधार में छोड़ि के चल गइली। अब त एकदम बे सहारा हो गइल बाड़न, एकदम बेसहारा, केहू कतो ना। बुझाइल कि गरदन में कुछ अँटकल आवता। उ पुकरलन- "बुधना, ए बुधना !"

"का ह मालिक?"

"बुधना!" उ खटिये पर से चिचियइलन। देह त भोथराइये गइल रहे, साँसो बुझाय जे ओढ़ल होखे- "बुधन," उ आपन, आँखि क धीरे-धीरे हिलावत कहलन, काहे दो मन नीमन नइखे लागत रे, ई अन्हरिया काहे के कइले बाड़े, तनी आजो त दिया जरा दे।" आ फेर तनी ठहर के कहलन- "आ सुन तनी चिलमिया भर के दे।"

बुधना पायताने बइठल उनकर झुरींदार चेहरा के देखत रहे।

''ना मालिक चीलम मत पींही, ना त खाँसी अउरू जोर पकड़ ली, आ फेर देह सम्हारे ना सम्हरी।''

उ उठ के बइठ गइलन आ कहलन, ''अरे अब देह में रहिये का गइल बा, जेकर मोह करीं। खंखरी बूट के केतनो रगड़बे त का सतुआ निकली? अरे, पीये दे बुधना, अब ईहे त सहारा बा।''

''हं मालिक !'', बुधना छोड़ते कहलस आ उ उनकरा के चिलम सुलगा के उनकरा हाथ में धरा देलस। फेर पायताने जाके बइठ गइल। उ समझ गइल कि अब मालिक के अंदर नाव चले शुरू हो गइल। इ त नाव चले का पहिले, दोसर नाववाला सब के मीठ चाल देवे के छोट-मोट हिलकोर रहे।'

उ चिलम का रोसनी में देखलस, मालिक का चेहरा पर केतना आड़ा-तिरछा रेखा पड़ गइल बा, जे केतना कहानी, केतना सवाल अपना में छिपवले बा, उ सवाल जेकर जबाब ना होखे, उ सवाल त हवा में टेंगल रहेला। उ घबड़ा के आँख मल-मल के देखे लागल। अन्हार जइसे भूत नीयर बढ़ल आवत रहे। बाहर हवा जोर-जोर से बहत रहे। उ मालिक किओर निहारे लागल। उहो ओकरे ओरि देखत रहन।

अपना ओरि देखत देखि के टोक देलन-

''का सोचतारे रे बुधन ?''

''ना कुछ मालिक।''

''ना; कुछ त सोचते बाड़े।''

''मालिक, रउआ बीमार बानी, आ कोई आपन जन पास नइखे।...''

''हं रे बुधना, बाकि आपन-आपन करम!'' उ नि:सास छोड़ते कहलन- ''ना त जब कमात रहीं त सब केहू साथहीं रहत रहे, आ जब बजार से आई त छोटकु ब केतना हुलास से पूछे 'बाबूजी, हई चीज ना ले अइनी ह' सांचो कहतानी बुधना, मन में बुझाय जे अगरबती महेकता। अरे, घर अँगना त बाले-बच्चा से नू हंसला। का से का हो गइल।''

फेर तनी ठहर के कहलन- ''तोहरा से का कहे के बा-। तू त सब जानते बाड़े।''

बुधन बोललस कुछ ना बाकि ओकरा मुँह से जनात रहे कि ओकरा ई सब बात नीक ना लागत रहे।

बुधना कुछु ना बोललस त उ हाथ में के चीलम सिरहाने ताखा प रखि के फेरू लेट गइलन। बुधना उनकरा सूतल देखि के ओसारा में आके बइठ गइल आ बाहर अन्हार रेला में कवनो चिन्हार परछाई खोजे लागल।

का दिन रहे, बुधना के दिमाग में सब बात एक-एक करके सनेमा के फोटू खानी उभरे लागल। तब मलकिनी जीयते रही। ओह घड़ी उ साते-आठ साल के रहल होई। बड़कु, ब आ छोटकु सब कोई रहत रहे। बप्पा घर के सभे काम करत रहन। उ खाली टहल-टिकोरा करे। बप्पा ओकरा हरमेसा समुझावत रहस-

''देख बुधना, हम त पाकल आम बानी, आज बानी काल टपक जाइब। बाकि तोहरा ला कहतानी। नीमक खाके नीमकहरामी मत करीहे ना ता तोहर कबहूँ निस्तार ना होई। भगवान नीमकहराम के कबहूँ माफ ना करेलन। चाहे लाखों संकट आवे, मालिक मलकिनी के साथ कबहूँ नाहीं छोड़िहे।''

बुधन इ बात के गाँठि पार लिहले रहे। बाकि मलकिनिये पहिले साथ छोड़ गइली। छोटके के अइला के थोड़हीं दिन बाद मलकिनी चल बसली आ ओकर बप्पा भी। फेर त माई से सून घर छोटकु के काटे दौड़े आ उ जोड़ तोड़ लगा के आ कुछ खेत-उत रेहन रख के विदेश चल गइलन। बाँच गइलन बड़कु आ बड़कु ब। बड़कु ब भी भागहीं के रास्ता खोजत रही। उ त मलिकिनीए से कै टक्कर लड़ चुकल रही बाकि ओह घड़ी छुट्टा सांढ़ ना भइल रही। बाकि अब त उहे सब कुछ रही। छोटकु के विदेश गइला से आउरो लहरत रहत रही। आ फेर उहे भइल जेकर बुधना के डर रहे।

उ बजार गइल रहे नीमक लावे ला। लौट के अइलस त देखलस कि बड़कु आ बड़कु ब के साज-समान रेक्सा पर चढ़त रहे।

ओकरा के आवत- देख के बड़कु ब गरजल-'हुई लीं! आइये गइलन सपूत!' आ कमर से चाभी क गुच्छा निकाल के घूमाक ओकरा ओर फेंक देली-

''हई ले। सम्हार आपन घर-दुआर, हम चलनी।''

उ बात नाहियों समझ के समझ गइल। हाथ में के नीमक जमीन प रखि के हबक के बड़कु ब के गोर पकड़ लेलस-''रउए नू एह घर के मलकिनी बानी, मत जाई मालिक के अकेले छोड़ के।''

बड़कु ब झपट के आपन गोर खींच लिहली आ तमक के कहली-''हँ-हँ ''रहे दे इ चोंचला। हम कहाँ के रानी आ कहाँ के राज-पाट। गुलछर्रा उड़ाबे ला आउर लोगि आ मरे खपे ला हम। छोटकु क डागडरी पढ़ावे ला सब जर-जमीन बगइचा बेचा-खोचा गइल। जाये लगलन विदेश त खेतबा में से आधा बेंच गइलन। हमनी ला खाली उहे खेतवा रहे। हई मकनवा बुढ़वा नइखे देत। बुढ़वा मरी त करेजा प लाद के ले जाई।''

लोगन के आस-पास भीड़ बढ़ल जात रहे। बड़कु एक नजर घर के ओरि देखलन आ फेर रेक्सा प चढ़ि के चल गइलन, त उ रेक्सा के पहिया के निसान देखत रह गइल। बुधना का अंदर जइसे आग जरत रहे। हइसन बोली ! आपन लुगाई रहित त गँड़ासा से मुड़ि काट दित बाकि दोसर के जनाना के का करो। एतना दिन ले मालिक कमइलन आ खइलन लोग आ जब सहर में नोंकरी लाग गइल त मालिक के बोझा कपाड़ प लोग कहाँले लेवे जाव, त बहाना बना-बना के घर छोड़ दिहल।''

लात से कुछु ठेकल त देखलस कि नीमकवा छितराइल पड़ल रहे। उ मुड़ी लटकवले घर में घुमल त देखलस कि मालिक अँगना में काई का पास बेहोश पड़ल रहस। आ, ना जाने तेही घड़ी से उनकरा कवन रोग पकड़लस कि उ आज ले खटिये धइले बाड़न।

हवा अपना जवानी प रहे। बुधन अपना कान प चदरि लपेट लिहलस। भीतर के उनकर आवाज रेंगत आइल, ''अरे बुधना, सुत गइले का रे ?''

उ चिहुँक के उठल, ''ना मालिक, कहीं का बात है ।'' कहीं का बात है ।'' आ उनकरा गोरथारी जाके खड़ा हो गइल ।

'अरे, बड़ी जार लागता रे, तनी कथरिया ओढ़ा दे ।'' बुधना कथरिया ओढ़ा देलस, कै जगह पेवन से सीयल ।

उ थरथरात कहलन- ''अरे, एकरा से जार नइखे जात रे, हड्डी में जार समा गइल बा।''

बुधना के आँखि तनी गील हो गइल- ''मालिक एही से नू कहत रहीं कि रउआ छोटकु के पासे चल जाईं। उ त बेचारू कै बेरा बोलवलन। उ त खरचो भेजे के कहले रहन बाकि रउए

नू बेकार के एह जर- जमीन का मोहे ना गइनीं। ना रहतीं ना जान के जँवाल होइत।''

उ गरदन के कथरी खींचत कहलन, ''अब तोहरो ला जान के जँवाले न हो गइलीं रे।''

''ना मालिक!'' उ अपना देहि प से चदर उठा के उनुकर देहि प डाल देलस, ''रउरे नू हमर बाप-महतारी बानी ?''

''हूँ...'' फेर तनी ठहर के कहलन, ''बुधना छोटकु के चिट्ठी ना आइल ह रे।''

''आइल रहे मालिक परसों।''

''तब तू हमरा से कहले ना,'' उ खुशी से काँपत स्वर में कहलन, ''का लिखले बा, आवहूँ के बारे में लिखले बा ? अब त हमार बेरा नजदीके बा, एही से लिखले रहीं कि आ जाइत त भर नजर देखियो लेतीं आ हइहे त एगो मकान बाँचल बा, बाप-दादा के निसानी, से ओकरा हवाले कर देतीं। कब ले आई ?''

''दू चार दिन में आवे के लिखले बाड़न।'' बाहर हवा राच्छस नियर कान फाड़त रहे। एके बेरा जोर से आवाज भइल, त दूनो आदमी चौंक गइल।

''बुधन, देख त देवाल गिरल का रे ?'' हुनकर चेहरा बड़ा निरीह हो गइल। ''अब त पइसो नइखे जे मरम्मत करा सकब। अभी परेसाल नू उत्तर वाला देवाल मरम्मत कइले रहीं।''

बुधना तले उठ के चल गइल रहे। उ अपने मने बड़बड़ाइत रहन, ''हे भगवान, छोटकु के का मुँह देखाइब। ईहो देवाल गिर जाई त फेंर कहाँ से बनी।''

''ओकरा ला हम कुछु ना रखनी। उ लोग त आपन हिस्सा बरोबर लेके अलगा होइये गइल।''

बुधना हाँफते आके कहलस, ''खपरवा गिर गइल।''

''अइसे मत कह बुधना, अइसे मत कह'' उ काँपत रहन कि उनकर आवाज बुधना ना समझ सकल।

फेर तनी ठहर के कहलन, ''अच्छा खाली छपरवे नू गिरल ह, देवलवा ना नू, बुधना इयाद बा नू इहें देवाल तरे छोटकु हमेशा खेलत रहे, आ फेर पढ़ाइ के दिन में ओहिजे पढ़त रहे। हमरा संतोष बा कि हम अपना करेजा के खून सूखा के भी छोटकु के एतना बड़ा डागडर बना देनी। अरे, पढ़ावे त बड़कु के भी चाहनी, उ ना पढ़लन त हम का करीं। ''बुधना'', फेर जइसे साँस लेत

कहलन छोटकु त बहुत बड़ा डागडर नू बा। सुननी हँ कि अखबारो में ओकर नाम छपेला।'

"हँ, मालिक।"

"बुधना, छोटकु एतना बड़ा आदमी हो गइल, बाकि हमरा के भुलाइल ना। हमरा के देखे आवता। अबकी आई त हम कहबि कि आदमी का अपन घर-दुआर न छोड़े के, अब एहीजा आके डागडरी करो, एहीजा लोग जान जाई कि हम केतना बड़ा बेटा के बाप हई। ओ घरी दुआर फेरू चमक जाई, ना रे।', उनकर आँखि चमकत रहे।

बुधना अंदरे-अंदर जइसे कुछ पीअत रहे। उ कतना दिन ले झूठ बोली कि छोटकु दूचार दिन में आ जइहें। साँच बात प कबले रंगीन परदा डालो। कबले छिपावे कि छोटकु लिखले बाड़न कि पासपोर्ट ना बने से अभी उ 1-2 महीना का बाद आ सकीहें। उ सोचलस कि सब बात साफ-साफ कह दे। बाकी साँचो बात बोलल भट्ठी में चढ़हीं नीयर होला।

उ मालिक के मुँह देखि के चुपा गइल। खाली धीरे से ईहे कहलस कि "मालिक, सुति जाई, कुछ सोंची मत।"

उ लड़िका अस चुपचाप कथरी ओढ़के पड़ गइलन। बुधना के अंदरो एगो नाव चलत रहे, बिना चाल के। उ बाहर दलान में खड़ा होके अंदर निहारे लागल। ओकर मन बहुत उदास रहे। बाहर घटाटोप अंहार रहे। बुधना सोचत रहे, अगर अंहार फाट जाइत त आसमान के का जाइत ?

उ घुम के देखलक, मालिक सूत गइलन, एकदम शांति रहे, बाकी इ शांति मीठ ना रहे, रहे इ कैक्टस उगावे वाला। फेर जोर से आवाज भइल। बुधना जाके देखलस, पीछे वाला देंवाल भी गिर गइल। उ एक छन देवाल के देंखत रहल आ फेर दउड़ के आके मालिक के पायताने खड़ा हो गइल। एक बार फाटल कथरी में से झाँकत उनकर पथराइल देह के देखलस आ फेर खटिया के पौउआ ध के निढाल हो गइल।

## अभ्यास

1. 'देवाल' कहानी के माध्यम से लेखिका का शिक्षा देवे के चाहत बाड़ी?
2. 'देवाल' कहानी पढ़ला के बाद बड़कु आ छोटकु के प्रति मन में कइसन भाव उमड़त बा? अपना शब्दन में लिखीं ।
3. बुधन के चरित्र से रउआ का शिक्षा मिलता? वर्णन करीं ।
4. नीचे दिहल मुहावरन के अर्थ अपना शिक्षक से पूछीं ।

   (i) जाँगर ढील भईल (ii) गुलछर्रा उड़ावल (iii) ढाढ़स बँधावल

## शब्द–संपदा

**जाँगर** – शरीर

**ओरचन** – खटिया के बुनावट के कसे वाला रस्सी

**नीयर** – जइसन

**ढाढ़स** – सांत्वना

**पायताने** – पैर के पास, गोड़थारी

**छितराइल** – छिंटाईल

**लुगाई** – पत्नी

**थरथरात** – काँपत

**जर–जमीन** – जायदाद

**निहारे लागल** – ताके लागल

**अंहार** – अंधकार

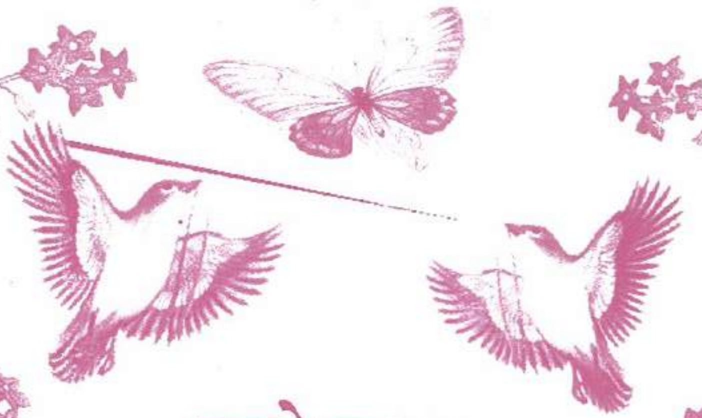

# वन्दे मातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
शस्य-श्यामलां मातरम्।
वन्दे मातरम्॥
शुभ्र-ज्योत्स्ना-पुलकित-यामिनीम्
फुल्ल-कुसुमित-द्रुमदल-शोभिनीम्
सुहासिनीं, सुमधुरभाषिणीम्
सुखदां, वरदां, मातरम्।
वन्दे मातरम्॥

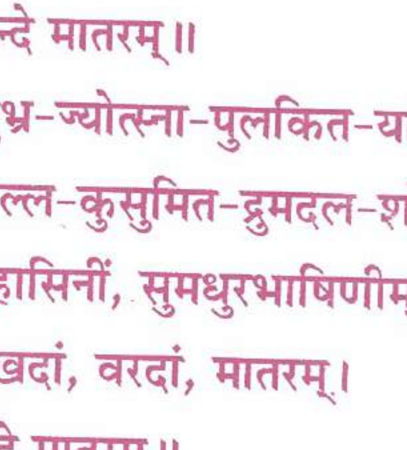

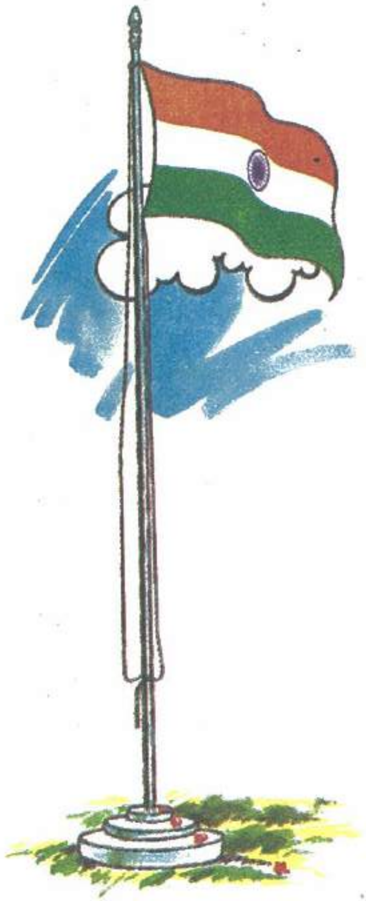

# राष्ट्र-गान

जन-गण-मन-अधिनायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा,
द्राविड़ - उत्कल - बंग,
विंध्य - हिमाचल - यमुना-गंगा,
उच्छल - जलधि - तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष मांगे
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण-मंगलदायक जय हे,
भारत - भाग्य - विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।

बिहार स्टेट टेक्स्टबुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लिमिटेड, बुद्ध मार्ग, पटना–1
BIHAR STATE TEXTBOOK PUBLISHING CORPORATION LTD., BUDH MARG, PATNA-1

आवरण मुद्रण : शिल्पा प्रिंटिंग वर्क्स, महेन्द्रू, पटना–6